भेड़िया-पुत्र
के
नाम पत्र

बहाउल्लाह

भेड़िया-पुत्र के नाम पत्र

उस एकमेव, अतुलनीय, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वप्रज्ञ परमेश्वर के नाम पर

जय हो परमेश्वर की, जो शाश्वत है, जिसका कभी नाश नहीं होता, वह अनन्त है जिसका क्षय नहीं होता, वह स्वयंभू है जो अपरिवर्तनीय है। वही है सम्प्रभुता में सर्वोच्च, जो अपने चिह्नों से व्यक्त सृष्टि जगत में ऊँचा उठा है और 'जो वह चाहता है सो करता है'। अपने प्राणियों के मार्गदर्शन हेतु उसने अपना धर्म प्रकट किया है और अपना प्रमाण, अपना साक्ष्य तथा अपने श्लोकों को इस प्रकार प्रकट किया है और मानव रूपी ग्रंथ की प्रस्तावना कुछ इस प्रकार लिखी है: ''दयामय प्रभु ने कुरान की शिक्षा दी है, मनुष्य को रचा है और उसे सुस्पष्ट बोलना सिखाया है। इस एक अद्वितीय, शक्तिमंत, सार्मथ्यशाली, उपकारी के अतिरिक्त और कोई ईश्वर नहीं है।''

अनुग्रह के स्वर्ग से विकीर्ण प्रकाश ईश्वर की इच्छा की उद्भव स्थली से झरता आशीष, नामों के साम्राज्य के स्वामी, जो 'सर्वोच्च मध्यस्थ,' 'परमोदात्त लेखनी है, जिसे ईश्वर ने अपने परमोत्कर्ष नामों का उदय स्थल और अपना परमोदात्त वृतियों का दिवास्रोत बनाया है। एकता का प्रकाश उसके द्वारा विश्व क्षितिज पर दमक उठा है और एकत्व का नियम उन राष्ट्रों के बीच प्रकट हो गया है, जो प्रदीप्त मुखमण्डलों के साथ 'सर्वोपरि क्षितिज' की ओर उन्मुख हैं और उसे स्वीकार कर लिया है, जिसे 'पावन वाणी' ने अपने ज्ञात जगत से कहा है: धरती और आकाश, महिमा तथा प्रभुत्व, ये सब उस सर्वसमर्थ, सर्वशक्तिमान, कृपालु स्वामी, परमेश्वर के हैं।

ओ प्रतिष्ठित धर्माचार्य, इस 'पीड़ित' की आवाज पर ध्यान दे। वस्तुतः वह ईश्वर के ही निमित्त तुझे सलाह देता है और उसका उद्बोधन करता है जो हर स्थिति में तुझे उसके निकट ले जायेगा। वह सचमुच सर्वसम्पन्न, उदात्त है। तू यह जान कि मानव कर्ण इस हेतु रचे गये हैं कि सभी पावन पुस्तकों, धर्मग्रन्थों एवं पातियों में उल्लिखित इस 'युग' का दिव्य स्वर सुना जा सके। पहले तू त्याग के जल से अपनी आत्मा को पवित्र कर, विश्वास के आभूषण से अपने मस्तिष्क को अलंकृत कर फिर सभी धरावासी, 'शाश्वत सम्राट' की आज्ञा से जिस स्थल की परिक्रमा करेंगे उस 'परम महान गृह' की ओर मुँह करके यह पाठ कर:

"हे मेरे ईश्वर, मेरे परमेश्वर और मेरी अभिलाषा और मेरे आराध्य और मेरे स्वामी और मेरे शरणस्थल और मेरी परम आशा और मेरी सर्वोच्च कामना! तू देख रहा है मुझे अपनी ओर उन्मुख होते हुए, तेरी कृपा की डोर को दृढ़ता से थामे हुए, तेरी उदारता के आँचल के छोर को पकड़े हुए, तेरे 'आत्म' की पवित्रता और तेरे सारतत्व की पावनता को स्वीकार करते हुए और तेरी एकता और एकमेवता को प्रमाणित करते हुए। मैं साक्षी देता हूँ कि तू एक है, एकमेव है, अतुलनीय है, शाश्वत है। अपने साम्राज्य में तूने किसी को अपना साझेदार नहीं बनाया है, और न ही इस धरती पर तूने अपने संगी के रूप में किसी का वरण किया है। सभी सृजित वस्तुओं ने उसकी साक्षी दी है जिसका प्रमाण तेरी गरिमा की वाणी उनकी सृष्टि से भी पहले दे चुकी है। वस्तुतः, तू परमेश्वर है; तेरे सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है! अनन्त काल से तू अपने सेवकों द्वारा किए गए नामोल्लेख से परे, पावन और अपने रचित जीवों द्वारा किए गए वर्णन से उदात्त रहा है। तू देखता है, हे स्वामी! अज्ञानियों को तेरे ज्ञान के महासिंधु, प्यास से व्याकुल जनों को तेरी वाणी की जीवन्त जलधार, पतितों को तेरी गरिमा के चँदोवे, दरिद्रों को तेरी सम्पन्नता की निधियों, याचकों को तेरी प्रज्ञा के उदय-स्थल, दुर्बलों को तेरी शक्ति के स्रोत, खिन्न जनों को तेरी कृपा के स्वर्ग, मूक जनों को तेरे नामोल्लेख के साम्राज्य की तलाश करते हुए।"

"मैं साक्षी देता हूँ, हे मेरे ईश्वर, मेरे राजाधिराज, कि तूने मुझे तेरे स्मरण के लिए उत्पन्न किया है, तेरे महिमा-मंडन के लिए और तेरे धर्म को सहायता पहुँचाने के लिए। फिर भी मैंने तेरे शत्रुओं की मदद की है, जिन्होंने तेरी संविदा को भंग किया है, तेरे ग्रंथ को परे हटाया है, तुझमें अविश्वास किया है और तेरे संकेतों का खंडन किया है। अफसोस, अफसोस, मेरी पथभ्रष्टता पर, मेरी निर्लज्जता, मेरी पापमयता, मेरे अनाचार पर जिनके कारण मैं तेरी एकता के महासागर की गहराइयों तक पहुँचने और तेरी करुणा के सिन्धु की थाह पाने से रोक दिया गया हूँ। अतः, अफसोस है, अफसोस है, बारंबार अफसोस है मेरी इस दुःखद स्थिति पर और मेरे गंभीर उल्लंघनों के लिए! हे मेरे ईश्वर! तूने मुझे तेरी वाणी को गौरवान्वित करने और तेरे धर्म की झलक दिखाने के लिए अस्तित्व प्रदान किया। परन्तु मेरी असावधानी ने मुझे रोक दिया है और मुझे इस तरह बाँध रखा है कि मैं तेरे संकेतों को मिटाने, और तेरे प्रियजनों तथा तेरे चिह्नों के उदय-स्थलों, और तेरे प्रकटीकरण के दिवास्रोतों और रहस्यों के कोषागारों के खून बहाने के लिए उद्यत हो उठा हूँ।"

"हे स्वामी, मेरे स्वामिन! और पुनः, हे स्वामी, मेरे स्वामिन! और फिर से, हे स्वामी, मेरे स्वामिन! मैं साक्षी देता हूँ कि मेरे अन्याय के कारण तेरे न्याय के तरुवर के फल गिरे हैं और मेरे विद्रोह की ज्वाला के माध्यम से तेरी निकटता का प्रसाद पाने वाले तेरे रचित जीवों के हृदय मुरझा गए हैं और तेरे निष्ठावान सेवकों की आत्माएँ विगलित हो उठी हैं। ओह, दयनीय, दयनीय हूँ मैं! ओह, कैसी निर्दयताएँ, कैसी घोर नृशंसताएँ ढाई हैं मैंने! तुझसे मेरी इस दूरी के कारण, और मेरी पथभ्रष्टता, मेरी अज्ञानता, मेरी अधमता और मेरे द्वारा तेरा खंडन किए जाने, और तेरा विरोध किए जाने के कारण संतप्त हूँ मैं, संतप्त हूँ मैं! न जाने ऐसे कितने दिन गुजरे जबकि तूने अपने सेवकों और प्रियजनों को मेरी रक्षा करने का आदेश दिया, जबकि मैंने उन्हें तुझे तथा उन्हें हानि पहुँचाने की आज्ञा दी जिन पर तुझे भरोसा था! और न जाने ऐसी कितनी रातें गुजरीं जिनमें तूने कृपापूर्वक मुझे याद किया और मुझे अपनी राह दिखाई, जबकि मैं तुझसे और तेरे चिह्नों से विमुख हो गया! तेरी गरिमा की सौगन्ध! हे तू जो उन जनों की आशा है जिन्होंने तेरी एकता में विश्वास किया है और उनके दिलों की अभिलाषा है जो तेरे सिवा अन्य सभी कुछ से अनासक्त हैं! तेरे सिवा और कोई सहारा मुझे नहीं दिखता, न ही तेरे अतिरिक्त कोई सम्राट, कोई शरण-स्थल, कोई स्वर्ग। अफसोस, अफसोस! तुझसे मेरी विमुखता ने मेरी अखंडता के पर्दे को भस्म कर दिया है, और तुझे अस्वीकार करने के मेरे कृत्य ने मेरे सम्मान पर छाए आवरण को तार-तार करके रख दिया है। काश कि मैं इस धरती के गहन रसातल में होता, ताकि मेरे दुष्टतापूर्ण कारनामे तेरे सेवकों की नजरों से ओझल रहते! हे प्रभो! तू देख रहा है इस पापी को जो तेरी क्षमाशीलता और तेरी उदारता के उदय-स्थल की ओर अभिमुख हुआ है और अन्याय के उस पहाड़ को जिसने तेरी करुणा और क्षमा की याचना की है। अफसोस, अफसोस! मेरे घोर पापों ने मुझे तेरी कृपा के दरबार तक आने से रोक दिया है और मेरे जघन्य कृत्यों ने मुझे तेरी उपस्थिति के अभयारण्य से भटका दिया है। वस्तुतः, मैं वह हूँ जो तेरे प्रति अपने कर्त्तव्य से चूक गया है और जिसने तेरी संविदा और तेरे प्रमाण का खंडन किया है और वह पाप किया है जिसके कारण तेरे न्याय के नगरों के निवासी और तेरे साम्राज्यों में तेरी कृपा के उदय-स्थलों को विलाप करने पर बाध्य होना पड़ा है। मैं प्रमाणित करता हूँ, हे मेरे ईश्वर! कि मैंने तेरी आज्ञाओं को दरकिनार कर दिया है और अपनी लालसाओं का दामन थाम लिया है, और तेरे ग्रंथ के विधानों को परे रख दिया है और अपनी ही इच्छाओं की पुस्तक थाम रखी है। दुःखद, अत्यंत दुःखद! जब मेरे अत्याचार घोर से घोर होते चले गए तब मेरे प्रति तेरी सहिष्णुता बढ़ती गई, और जब मेरे विद्रोह की ज्वाला और अधिक उग्रता से धधक उठी तो उतनी ही अधिक तुम्हारी क्षमा और करुणा उसकी लपटों को बुझाने में जुट गई। तेरी सामर्थ्य की सौगन्ध! हे तू जो है विश्व की अभिलाषा और सभी राष्ट्रों का परम प्रियतम! तेरी लम्बी यातना ने मुझे और

अधिक गुमान से भर दिया और तेरे धैर्य ने मुझे धृष्ट बना दिया। तू देखता है, हे मेरे परमात्मा! उन आँसुओं को जो मेरी ग्लानि के कारण बह निकले हैं और उन आहों को जो मेरी असावधानियों के कारण निकल पड़ी हैं। मैं तेरी महिमा की महानता के नाम पर सौगन्ध खाता हूँ! तेरी कृपालुता के दरबार की छत्रछाया के सिवा मैं कहीं भी अपना ठिकाना नहीं पा सकता, न ही तेरी दया के मंडप के अतिरिक्त अन्यत्र कहीं कोई शरण ही पा सकता हूँ। तेरे द्वारा अपनी वाणी "हताश न हो" सुनने योग्य बनाए जाने के बाद तू देखता है मुझे हताशा और निराशा के सागर में निमग्न। तेरी सामर्थ्य की सौगन्ध! मेरे घोर अत्याचार ने मेरी आशा की डोर काट डाली है और मेरे विद्रोह ने तेरे न्याय के सिंहासन के समक्ष मेरे चेहरे को अंधकारमय कर दिया है। तू निहार रहा है, हे मेरे परमेश्वर! उसे जो तेरी कृपा के द्वार पर मृतप्राय होकर पड़ा है, जो तेरी स्नेहिल दया के हाथों से तेरी क्षमा के जीवन्त जल की याचना करने में ग्लानि से भरा है। तूने मुझे जिह्वा दी है कि जिससे मैं तेरी प्रशंसा और तेरा गुणगान करूँ परन्तु यह उसका उच्चारण करने में निरत है जिससे तेरी निकटता को प्राप्त तेरे प्रियजनों की आत्माएँ विगलित हो उठी हैं और पावनता की निवास-स्थली में रहने वाले निष्ठावान जनों के हृदय उद्विग्न हो उठे हैं। तूने मुझे आँखें दी हैं तेरे संकेतों की साक्षी देने के लिए और तेरे श्लोकों को निरखने के लिए और तेरे हस्तशिल्प के प्रकटीकरणों के बारे में विचार करने के लिए, परन्तु मैंने तेरी इच्छा को मानने से इन्कार कर दिया है और कुछ ऐसा कृत्य किया है जिससे तेरे रचित जीवों के बीच आस्थावान और अनासक्त जन कराह उठे हैं। तूने मुझे कान दिए हैं कि मैं उन्हें तेरी स्तुति और तेरा समारोह मनाने की ओर केन्द्रित करूँ और उस ओर जिसे तूने अपनी कृपा के स्वर्ग और अपनी इच्छा के गगन से भेजा है। परन्तु फिर भी, अफसोस, अफसोस, कि मैंने तेरे धर्म को त्याग दिया है और तेरे सेवकों को तेरे विश्वस्त और प्रियजनों के खिलाफ धर्मनिंदा करने की आज्ञा दी है और तेरे न्याय के सिंहासन के समक्ष इस तरह आचरण किया है कि जिन्होंने तेरी एकता को पहचान लिया है और जो तेरे साम्राज्य के निवासियों के बीच पूर्णतः समर्पित जनों में से हैं, वे घोर क्रन्दन से चीत्कार उठे हैं। हे मेरे ईश्वर! मुझे नहीं पता कि तेरी कृपा के उच्छल महासिंधु के सम्मुख मैं अपनी किन दुष्टताओं की चर्चा करूँ, न ही यह कि तेरे शुभ उपहारों और कृपाओं के सूर्यों की आभाओं के आमने-सामने होने पर मैं अपने किन अतिक्रमणों की घोषणा करूँ।"

"तेरे ग्रंथ के रहस्यों और तेरे ज्ञान में निगूढ़ वस्तुओं, तथा तेरी करुणा के महासागर की सीपियों में छिपे मोतियों की सौगन्ध! मैं इस क्षण तेरी याचना करता हूँ कि मेरी गणना तू उन लोगों में से कर जिनका उल्लेख तूने अपनी पुस्तक में और जिनका वर्णन तूने अपनी पातियों में किया है। हे मेरे ईश्वर! क्या तूने मेरे लिए इस यातना के बाद कोई उल्लास, या इस पीड़ा के बाद कोई सांत्वना, या इस संकट के बाद कोई चैन निर्धारित किया है?

अफसोस, अफसोस, तूने यह निर्धारित किया है कि हर उपदेश-मंच तेरे उल्लेख के लिए छोड़ दिया जाए और तेरी वाणी के महिमा-मंडन के लिए और तेरे धर्म के प्रकटीकरण के लिए, परन्तु मैंने इस मंच पर चढ़कर तेरी संविदा के उल्लंघन की घोषणा की है और तेरे सेवकों से ऐसे शब्द कहे हैं जिनसे तेरी महिमा के मंडप के तले बसेरा करने वाले और तेरी प्रज्ञा के नगरों के निवासी विलाप कर उठे हैं। न जाने कितनी बार तूने अपनी कृपा के स्वर्ग से अपनी वाणी का आहार भेजा है और मैं उससे विमुख हो गया हूँ और न जाने ऐसे कितने अवसर आए जब तूने मुझे अपनी करुणा की मृदुवाही जलधारा तक बुलाया है और अपनी ही इच्छा और कामना का अनुसरण करने के कारण मैंने उससे बच भागना चाहा है! तेरी महिमा की सौगन्ध! मुझे नहीं पता कि किस पाप के लिए मैं तुझसे क्षमा-याचना करूँ और तुझसे माफ़ी माँगूँ और न ही यह कि अपने किस अत्याचार के लिए मैं तेरी दयालुता के दरबार और तेरी कृपा के अभयारण्य की ओर उन्मुख होऊँ। मेरे पाप और अतिक्रमण ऐसे हैं कि कोई भी मनुष्य उनकी गिनती नहीं कर सकता, न ही लेखनी उनका वर्णन कर सकती है। हे तू जो अंधकार को प्रकाश में बदल देता है, और अपने प्रकटीकरण के सिनाई पर्वत पर अपने रहस्यों को प्रकट करता है! मैं तुझसे याचना करता हूँ कि सदा-सर्वदा मेरी सहायता कर कि मैं तुझमें अपना विश्वास रखूँ और अपने सारे कार्यकलाप मैं तेरी सार-सँभाल में रखता हूँ। अतः, हे मेरे ईश्वर! तू मुझे उसी से संतुष्ट रहने दे जिसे तेरे आदेश की अंगुली ने अंकित किया है और जिसे तेरे विधान की लेखनी ने लिखा है। जो भी तेरी इच्छा है उसे करने में तू समर्थ है और तेरी मुट्ठी में है उन सबकी बागडोर जो स्वर्ग में और धरती पर हैं। तेरे सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है, तू ही है सर्वज्ञ, सर्वप्रज्ञ।''

ओ शेख! तू यह जान ले कि मानव द्वारा की गई निन्दाएँ, उनके प्रतिवाद और छिद्रान्वेषण उस व्यक्ति का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते, जिसने प्रभु की दया का आँचल थाम लिया है और उसकी कृपा-डोर से लिपटा है। परमेश्वर की सौगंध! परमेश्वर ने ईश्वरीय प्रताप (बहा) का शब्द महज अन्तःप्रेरणा से नहीं बोला है। जिसने उसे वाणी दी है उसने सबको आवाज दी है ताकि वे उसकी स्तुति कर उसे महिमामण्डित कर सकें। उस एक, अतुलनीय शक्तिशाली प्रभु के सिवा कोई ईश्वर नहीं हैं!

जिनकी दृष्टि प्रखर है, जिनके कानों में सुनने की क्षमता है, जिनके हृदय प्रबुद्ध हैं और जिनके वक्ष विशाल हैं वे सत्य-असत्य को पहचान कर एक को दूसरे से अलग करते हैं। तू इस 'पीड़ित' की वाणी से प्रवाहित इस प्रार्थना का गायन कर और पूर्णतया अलिप्त हृदय से उस पर मनन कर और शुद्ध और निर्मल कानों से उसके आशय पर ध्यान दे ताकि सौभाग्य से तुझे निरासक्ति की सांस मिल जाए और तुझे अपने ऊपर और दूसरों पर तरस आ जाए:

"मेरे ईश्वर, मेरी आराधना के केन्द्रबिन्दु, मेरी आकांक्षा के लक्ष्य, सर्वकृपालु, सर्वदयालु! जीवन की हर सांस तुझमें है और सभी शक्तियाँ तुझ सर्वशक्तिमंत की मुट्ठी में हैं। तू जिसे भी चाहे देवदूतों से भी उच्च स्थान प्रदान कर देता है, क्योंकि 'सत्य ही हम उसे उच्च स्थान देते हैं' को तू साकार करता है और जिस किसी को भी तू दीन-हीन बनाना चाहता है वह धूलकण से भी अधम हो जाता है, कहो, शून्य से भी कम हो जाता है। ओ दिव्य भाग्यविधाता! हम भ्रष्ट, पापों से भरे हुए और उग्र हैं, फिर भी 'सत्य के आसन' तक पहुँचना चाहते हैं और सर्वसमर्थ सम्राट के मुखारविन्द के दर्शन की आकांक्षा रखते हैं। तू आज्ञा देने वाला है और सम्पूर्ण प्रभुसत्ता तुम्हारी है और शक्ति का संसार तुम्हारे समक्ष नत है। तू जो कुछ भी करता है वह विशुद्ध न्याय है, बल्कि तुम्हारी दया का सार ही होता है। तुझ सर्वदयालु के नाम की महिमा की एक झलक दुनिया के पापों को धो डालने के लिए पर्याप्त है और तुम्हारे प्रकटीकरण के युग की बयार का एक झोंका पूरे मानव-जगत को रूपायित करने में समर्थ है। हे सर्वशक्तिशाली प्रभु! अपने दुर्बल प्राणियों को अपनी शक्ति प्रदान कर और जो मृतप्राय हैं उन्हें नवजीवन दे, ताकि वे तुझे जान सकें और तेरे मार्गदर्शन के महासागर की राह पकड़ सकें और तेरे धर्म के प्रति अडिग रह सकें। संसार की विविध बोलियों में, चाहे वह पूरब में हो या फिर पश्चिम में, तुम्हारी महिमा के गुणगान की सुरभि फैलाई जाये तो वह प्रशंसनीय और सम्मान से भरा होगा। अगर वह संदेश इस सुरभि से वंचित होगा तो किसी काम का नहीं होगा। हे भाग्यविधाता, हम तुमसे याचना करते हैं कि सभी मनुष्यों को अपनी राह दिखा और सही राह पर उन्हें ले चल। तू सत्य ही सर्वशक्तिशाली, सर्वसम्पन्न, सर्वज्ञ और सर्वद्रष्टा है।"

हम ईश्वर से विनती करते हैं कि वह न्यायप्रिय और निष्पक्ष होने तथा उनका परिचय पाने में तेरी सहायता करे जो मानव नेत्रों से छिपी थी। वह वस्तुतः सामर्थ्यशाली, अबाधित है। हम तुम्हें उस पर मनन करने की सलाह देते हैं जो प्रकट किया गया है और अपनी वार्ता में निष्पक्ष तथा न्यायप्रिय होने को कहते हैं ताकि तू सत्यपरायणता और निष्कपटता के दिवानक्षत्र की कांति से चमक उठे, तुझे अज्ञान के अंधकार से मुक्त कर दे और संसार को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर दे। यह 'पीड़ित' किसी विद्यालय में नहीं गया है और न वह विद्वत्मण्डली की ज्ञान चर्चाओं में सम्मिलित हुआ है। मेरे जीवन की सौगन्ध! अपने निज के संकल्प से मैंने अपने आपको प्रकट नहीं किया है, बल्कि ईश्वर ने अपनी ओर से चुन कर मेरा आविर्भाव किया है। महामहिम शाह को सम्बोधित पाती में, ईश्वर, मंगलमय तथा महिमामंडित हो वह, उसकी सहायता करे, इस 'पीड़ित' की वाणी से यह शब्द प्रवाहित हुए है:

"हे राजन! दूसरों की तरह मैं भी मात्र मनुष्य था, अपनी शय्या पर निद्रालीन और तभी देखो, सर्वमहिमा की बयारें मेरे ऊपर बहीं और समस्त भूत का ज्ञान मुझे मिल गया। यह सन्देश मेरा नहीं, बल्कि उसका है जो सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ है और उसी ने मुझे अवनी और अम्बर के बीच अपनी आवाज उठाने की आज्ञा दी है। इसके लिए मुझ पर जो कुछ आन पड़ा है उसने प्रत्येक बोधसम्पन्न व्यक्ति के आँसुओं को बहने के लिए विवश किया है। मनुष्यों में प्रचलित विद्या का मैंने अध्ययन नहीं किया, उनके विद्यालयों में मेरा प्रवेश नहीं हुआ। जहाँ मेरा निवास था उस नगर से पूछ कर देखो, ताकि तुझे भलीभाँति यह विश्वास हो जाये कि मैं उनमें नहीं हूँ जो मिथ्याभाषण करते हैं। यह तो मात्र एक पत्ता है जिसे सर्वशक्तिमान, सर्वस्तुत्य तेरे प्रभु के वचनों ने हिलोर दिया है। जब प्रचण्ड हवाएँ चल रही हैं तब क्या वह निश्चेष्ट रह सकता है? नहीं, नहीं। उसकी सौगन्ध जो सम्पूर्ण नामों एवं गुणो का प्रभु है! जो चिरस्थायी है उसके सामने क्षणभंगुर का अस्तित्व ही नहीं है। उसके सर्वबाध्यकारी आह्वान मुझे मिले हैं और उनके कारण मैं सभी के बीच उसका गुणगान करने को विवश हूँ। जिस समय उसकी आज्ञा उच्चरित हुई, मैं वस्तुतः मृतक जैसा था। करूणामय, दयामय तेरे प्रभु की इच्छा के हस्त ने मेरा कायाकल्प कर दिया है।"

अब वह समय आ गया है जब तू सर्वोच्च लेखनी से प्रवाहित जल से स्वयं को स्वच्छ करे और सर्वज्ञ ईश्वर के निमित्त उनका मनन करे जो बारम्बार अवतरित या अभिव्यक्त हुई हैं और अपनी वाणी तथा विवेकशक्ति से संसार में जनसमुदायों के हृदयों में सुलग रही बैर एवं द्वैष की अग्नि को बुझाने का यथाशक्ति प्रयास करे। ईश्वरीय ज्ञान के उन्नयन और मनुष्यों के बीच एकता एवं साहचर्य के संवर्धन का उद्देश्य लेकर दिव्यसंदेशवाहक अवर्तीण हुए हैं और उनकी पुस्तक प्रकट हुई हैं। लेकिन इस समय देखो, ईश्वरीय विधान को किस प्रकार हठधर्मिता और नफरत का एक कारण बना दिया गया है। कितना दयनीय, कितना शोचनीय है यह कि अधिकांश व्यक्ति उन्हीं वस्तुओं से चिपके हैं जो उनके पास है और जो चीजें ईश्वर के पास हैं उनसे अनभिज्ञ और इस प्रकार दूर हैं जैसे उनकी आँखों पर परदा पड़ा हो।

"कहो, हे परमेश्वर ! मेरे परमेश्वर ! मेरे मस्तक को न्याय के मुकुट से और मेरे ललाट को समता के आभूषण से विभूषित कर दे। तू सत्य ही, वरदानों और अक्षय सम्पदाओं का अधीश्वर है।"

"न्याय एवं निष्पक्षता ये दो संरक्षक मनुष्यों की देखरेख करते हैं। उनसे ऐसे कल्याणकारी तथा प्रांजल शब्द प्रकट होते हैं जो जगत के मंगल तथा राष्ट्रों की सुरक्षा का हेतु बनते हैं।"

ये शब्द इस 'पीड़ित' की एक पाती में उसकी लेखनी से निकले हैं: ''उस एकसत्य परमेश्वर का यशोवर्धन हो उसका, प्रयोजन उस मानव रूपी खान से गूढ़ रत्नों को बाहर निकालना रहा है, जो उसके महान उद्देश्य के उदयस्थल और उसकी ज्ञान-मुक्ताओं के भण्डार हैं, क्योंकि महिमामंडित ईश्वर अदृश्य और मानव-नेत्रों से ओझल एवं गुप्त है। कुरान में उस दयामय ने जो प्रकट किया है उस पर विचार करो: ''कोई झांकी उसमें नहीं समाई है, लेकिन वह हर झांकी में समाया है और वह सूक्ष्म, सर्वज्ञाता है।''

इस युग में ईश्वरीय धर्म का सार यह है कि धरती के विभिन्न धर्मसमाजों और धार्मिक आस्था की अनेकानेक प्रणालियों को मनुष्य के बीच बैरभावना का पोषण कदापि न करने दिया जाये। ये सिद्धान्त और नियम, ये सुस्थापित एवं समर्थ प्रणालियाँ एक स्रोत से उत्पन्न हैं और एक ही प्रकाश की किरणें हैं। वे अगर एक-दूसरे से भिन्न हैं तो इसके लिए उनके प्रकटीकरण-काल की विभिन्न अपेक्षाओं को उत्तरदायी माना जाना चाहिये।

अपने प्रयासों की कमर कस लो ओ बहाजनो, ताकि भाग्यवश धार्मिक फूट और संघर्ष का यह उपद्रव शान्त हो जाए जो धरती के जन समुदायों को उद्वेलित करता है और उसका नामोनिशान पूरी तरह मिट जाए। ईश्वर और उसके सेवकों के प्रति प्रेम के कारण इस उदात्त धर्मप्रकटीकरण को सहायता देने के लिए उठो। धार्मिक उन्माद एवं घृणा विश्वभक्षणकारी अग्नि है, जिसकी प्रचण्डता कोई नहीं बुझा सकता। मात्र दैवीशक्ति का हस्त इस विनाशकारी विपदा से मानवजाति को निदान दे सकता है। उस युद्ध का विचार करो जिसमें दोनों राष्ट्र रत हुए हैं, किस प्रकार दोनों पक्षों की अपने जान-माल की क्षति हुई है, कितने सारे गाँव पूरी तरह उजड़ गये हैं।

''ईश्वरीय वचन दीपक होता है, जिसका प्रकाश ये शब्द हैं: ''तुम सब एक वृक्ष के फल और एक ही शाख की पत्तियाँ हो। परस्पर प्रेम एवं समरसता का, मैत्री एवं सहचारिता का बर्ताव करो। यह साक्षी वह देता है जो सत्य का दिवानक्षत्र है। एकता का प्रकाश इतना शक्तिशाली है कि यह सम्पूर्ण धरा को ज्योतिर्मय कर सकता है। वह एकमेव सत्य परमेश्वर जो सब कुछ जानता है स्वयं इन शब्दों की सत्यता प्रमाणित करता है।''

अपने आप को प्रयासरत करो, ताकि तुम सब यह उत्कृष्ट तथा परमोदात्त पद प्राप्त कर सको। यह स्थान मानवमात्र की सुरक्षा सुनिश्चित कर सकता है। यह लक्ष्य सभी दूसरे लक्ष्यों से श्रेष्ठ और यह आकांक्षा सारी आकांक्षाओं की साम्राज्ञी है। किन्तु न्याय के दिवानक्षत्र को धुंधलाने वाले दमन के घने बादल जब तक विलीन नहीं होंगे, तब तक इस स्थान की भव्यता का मानव नेत्रों के समक्ष प्रकट होना कठिन होगा। ये घने बादल निकम्मे मनोरथों तथा व्यर्थ कल्पनाओ के प्रतिनिधि हैं, जो कोई और नहीं बल्कि फारस के

धर्माधिकारी ही हैं। एक बार हम विधिप्रदाता की भाषा में बोले, दूसरी बार सत्यान्वेषी तथा रहस्यवादी की भाषा में, फिर भी हमारा सर्वोपरि उद्देश्य और हमारी सर्वोच्च कामना सदैव इसी स्थान की भव्यता एवं उदात्तता अनावृत करना रहा है। ईश्वर वस्तुतः इसका पर्याप्त साक्षी है।

"हे बहा के लोगों! सभी मनुष्यों के साथ मेल-जोल रखो और उनके साथ मित्रता तथा भाईचारे की भावना के साथ रहो। यदि तुम किसी सत्य को जानते हो, यदि तुम कोई रत्न धारण करते हो जो औरों के पास नहीं है तो तुम इसे दूसरों के साथ मृदुल और विनम्र भाषा में बांटो। यदि उनके द्वारा यह स्वीकार कर लिया जाता है, यदि यह अपना उद्देश्य पूरा कर लेता है तो समझो, तुम्हारे उद्देश्य की पूर्ति हो गई। यदि कोई इसे नकारता है तो उसे उसी के हाल पर छोड़ दो और ईश्वर से प्रार्थना करो कि उसे मार्गनिर्देश दें। सावधान, कहीं तुम उसके साथ अभद्रता का व्यवहार न कर बैठो। विनम्रवाणी मानवहृदय का लौहमणि है। यह आत्मा का भोजन, शब्दों का अर्थरूपी वस्त्र तथा ज्ञान एवं बुद्धि के प्रकाश का उद्गम स्थल है।"

ऊपर उद्धृत परिच्छेद में 'धर्माधिकारी का अर्थ है वे पुरूष जो ऊपर से तो ज्ञान के परिधान से सज्जित होते हैं किन्तु अन्दर से उससे वंचित होते हैं। इस सम्बन्ध में हम शाह को सम्बोधित पाती "निगूढ़ वचन" से कुछ अंश उद्धृत करते हैं, जो फातिमा की पुस्तक, शीर्षक से आभा-लेखनी द्वारा प्रकट किये गये थे:

"हे विद्वान कहलाने वाले मूर्खों! तुम गड़ेरियों का वेष क्यों धारण किये हुए हो जबकि भीतर ही भीतर तुम लोलुप भेड़िये बन चुके हो और मेरे अनुयायियों पर घात लगाये बैठे हो? तुम उस तारे की तरह हो जो प्रभात के पूर्व प्रकट होता है और यद्यपि वह चमकता और जगमगाता हुआ प्रतीत होता है, किन्तु वह मेरे नगर की ओर बढ़ते हुए पथिकों को भ्रम की राहों पर भटका देता है।

और इसी प्रकार वह कहता है "ओ निर्मल प्रतीत होते हुए भी अन्दर से मलिन! तुम उस स्वच्छ किन्तु कड़वे जल के समान हो जो बाहर से स्फटिक-सा शुद्ध प्रतीत होता है किन्तु दिव्य पारखी द्वारा परखे जाने पर उसकी एक बूंद भी स्वीकार्य नहीं होती है। हाँ, सूर्य-रश्मियाँ धूल और दर्पण पर समान रूप से पड़ती हैं किन्तु प्रतिबिम्बन में उनके बीच इतना अन्तर है जैसे धरती से वह सितारा। बल्कि कहना चाहिए कि अपरिमेय है यह अन्तर।"

और यह भी वह कहता है, "हे लालसा के सार ! अनेक सुप्रभात बेला में स्थानरहित देश से मैं तेरे कक्ष तक आया और तुझे अपनी शय्या पर निश्चिन्ततापूर्वक मेरे अतिरिक्त किसी अन्य के साथ लिप्त अवस्था में पाया। तत्काल ही, चेतना की झलक के समान, मैं स्वर्गिक महिमा के लोक में लौट आया और अपनी शस्य शरणस्थली में पावनता के सहचरों के समक्ष इसकी चर्चा भी नहीं की।"

और वह पुनः कहता है, "हे संसार के बंधुआ दासों ! अनेक प्रभातों में मेरी प्रेमपूर्ण कृपालुता की बयार तेरे ऊपर से होकर बही है और तुझे लापरवाही की शय्या पर प्रगाढ़ निद्रा में निमग्न पाया है। तेरे हाल पर विलाप करती हुई वह वहीं लौट आई है जहाँ से उसका आगमन हुआ था।"

किन्तु वे धर्माचार्य जो ज्ञान और सच्चरित्रता के आभूषण से सचमुच अलंकृत हैं वास्तव में विश्व रूपी काया के मस्तिष्क और विभिन्न राष्ट्रों के नेत्रों के समान हैं। मनुष्यों का मार्गदर्शन सर्वदा ऐसी ही आत्माओं पर निर्भर रहा है और आज भी है। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह उनको अपनी इच्छा पूरी करने हेतु कृपापूर्वक सहायता दे। वह सचमुच मानवमात्र का प्रभु, इहलोक एवं परलोक का स्वामी है।

ओ शेख! हमें ज्ञात हुआ है कि तू इतना अधिक हमारे विरूद्ध हो गया है और हमारा प्रतिवाद करने लगा है कि तूने लोगों से मुझे धिक्कारने के लिए कहा है और निर्णय किया है कि ईश्वर के सेवकों का खून बहाया जाये। ईश्वर पुरस्कृत करे उसे जिसने यह कहा: खुशी-खुशी मैं उस न्यायाधीश की आज्ञा मानूंगा जिसने बड़ा ही विचित्र आदेश दिया है कि मेरा लहू पहाड़ी पर बिखेर दिया जाये। मैं सत्य कहता हूँ: परमेश्वर की राह में जो कुछ आ पड़े वह आत्मा को परमप्रिय तथा हृदय को अभीष्ट होता है। घातक विष भी उसके पथ पर विशुद्ध मधु है और हर आपदा स्वच्छ जल का एक घूंट। महामहिम शाह को प्रेषित पाती में यह अंकित है। जो सत्य है उसकी सौगन्ध! उसकी राह पर किसी उत्पीड़न से और उसके प्रति अपने प्रेमवश किसी दुःख से नहीं डरता मैं। ईश्वर ने विपत्ति को वस्तुतः अपने हरे-भरे चारागाह पर प्रातःकालीन ओस के समान बनाया है वह उस दीपक की बाती के समान है जो धरती और आकाश को आलोकित करती है।

अपना ध्यान तू उसकी ओर लगा जो ईश्वर का काबा है, संकट में सहायक, स्वयंभू है और इतने प्रबल विश्वास के साथ तू अपने हाथ ऊपर उठा कि सम्पूर्ण सृजित वस्तुओं के हाथ सभी लोकों के प्रभु ईश्वर की कृपा के स्वर्ग की ओर उठ जायें; तत्पश्चात् उसकी ओर तू इस तरह से अभिमुख हो कि सभी प्राणियों के मुख उसके जगमगाते क्षितिज की दिशा में मुड़ जायें और कह: "ओ प्रभु, तू मुझे अपने सिवा सब से विमुख, तेरे कृपासिन्धु और तेरे अनुग्रह-स्वर्ग की ओर अभिमुख हुए देख रहा है सिनाई पर प्रकटीकरण के सूर्य की चमक और तुम सदा क्षमाशील से मैं याचना करता हूँ कि मुझे क्षमा प्रदान कर और मुझ पर दया

कर। फिर अपनी महिमामय लेखनी से मेरे लिए वह लिख दे जो सृष्टि जगत में तेरे नाम के जरिए मुझे ऊँचा उठाये। अपनी ओर उन्मुख होने और अपने उन प्रियजनों की आवाज सुन पाने के लिए तू मेरी सहायता कर, जिनको धरती की ताकतें निर्बल नहीं कर पायीं है और कौमों के प्रभुत्व जिनको तुझसे रोक रखने में असमर्थ रहे हैं और जिन्होंने तेरी ओर आगे बढ़ते हुए कहा है: 'ईश्वर हमारा प्रभु है, उन सभी का प्रभु जो अंतरिक्ष में हैं और जो धरती पर हैं।

ओ शेख सत्य ही कहता हूँ मैं कि 'मनभावन मदिरा' की मुहर उसके नाम पर जो स्वयंभू है तोड़ दी गई है, तू अपने आपको उससे मत रोक। यह 'पीड़ित' पूर्णतः ईश्वर के निमित्त बोलता है। इसी प्रकार तुझे भी चाहिए कि उन वस्तुओं का चिन्तन करे जिनको उतारा और प्रत्यक्ष किया गया है, ताकि भाग्यवश इस मंगल दिवस में तू उसके उदार उद्गारों का अंश पा जाये जो सचमुच सर्वानुग्रहपूर्ण है और उससे वंचित न रह पाए। परमेश्वर के लिए वस्तुतः यह कठिन नहीं है; धूलजनित आदम ईश-शब्द के प्रभाव से उठकर अलौकिक सिंहासन तक पहुँचा था और महज एक मछुआरा दिव्य प्रज्ञा की निधि बना था और वह चरवाहा अबू-दहर राष्ट्रों की शान बन गया।

ओ शेख, यह युग कभी वह युग नहीं रहा और न है जिसमें मानवकृत कलाओं एवं विज्ञानों को मनुष्यों के लिए सच्चा मानदण्ड माना जा सके, क्योंकि यह देखा गया है कि जो उनमें से एक में भी निपुण नहीं था उसने विशुद्ध स्वर्ण-सिंहासन पर आरोहण कर ज्ञान परिषद में सम्मान का आसन प्राप्त किया है, जब कि इन कलाओं तथा विज्ञानों का आगार और माना हुआ प्रतिनिधि नितान्त वंचित रह गया। कलाओं एवं विज्ञानों से तात्पर्य उन चीजों से है जो शब्दों से आरम्भ होकर शब्दों पर ही समाप्त हो जाती है। तथापि इस प्रकार की कलाएँ और विज्ञान, जो उत्तम परिणामों के जनक हैं और जिनसे सुफल उत्पन्न होते हैं तथा जो मनुष्यों के कल्याण एवं प्रशान्ति के संवाहक रहे हैं और रहेंगे, ईश्वर के समक्ष स्वीकार्य हैं। अगर तू मेरी आवाज पर कान लगाये, तो तू अपनी सारी सम्पत्तियाँ त्याग देगा और अपना मुख उस 'स्थल' की ओर लगा देगा जहाँ से विवेक और वाणी के महासिन्धु उमड़े हैं और करूणामय तेरे प्रभु के प्रेमल सौजन्य की मधुमय सुवासें बही हैं।

इस सम्बन्ध में हम यह उपयुक्त मानते हैं कि संक्षेप में कुछ विगत घटनाओं का विवरण दिया जाए ताकि सम्भवतः वे निष्पक्षता और न्याय के उद्देश्य को उचित प्रमाणित करने का साधन हो सकें। जिस समय महामहिम शाह, इस्फहान यात्रा की योजना बना रहे थे, इस 'पीड़ित' ने उनकी अनुमति लेकर इमामों की पावन, कांतिमय, विश्रामस्थलियों के दर्शन किये, ईश्वर के आशीष हों उन इमामों पर। वापसी के समय, राजधानी में अत्यधिक

गरमी के कारण हम लावासान चले गए। हमारे प्रस्थान के बाद महामहिम पर प्राण लेवा हमला हुआ। दुःखदायी थे वे दिन। नफरत की ऊँची-ऊँची लपटें जल रही थीं। बहुत से लोग कैद किए गए और उनके बीच यह 'पीड़ित' भी था। ईश्वर की साधुता की सौगन्ध! किसी भी तरह हम उस दुष्कर्म से जुड़े नहीं थे और न्यायाधिकरणों ने निर्विवाद रूप से हमारी निर्दोषिता भी सिद्ध की, तथापि हमें गिरफ्तार किया गया और नियावरान से, जो तब महामहिम का आवास था, हमें जंजीरों में जकड़कर, नंगे सिर और पैर पैदल, तेहरान की कालकोठरी में लाया गया। हमारे साथ घोड़े पर चल रहे एक क्रूर व्यक्ति ने उस समय हमारा टोप छीन लिया जब जल्लादों तथा अधिकारियों की एक टुकड़ी हमें शीघ्रता से लिए जा रही थी। चार महीनों तक हमें इतने गंदे स्थान में बंद रखा गया जिसकी कोई तुलना नहीं। जिस कालकोठरी में इस 'पीड़ित' और इसी प्रकार के दूसरे लोगों को बन्दी बनाकर रखा गया उसे एक अंधेरा और संकरा गड्ढ़ा कहना अधिक उपयुक्त होगा। हमारे आने पर पहले हमें एक अंधेरे गलियारे से ले जाया गया और वहाँ से हम तीन ढलावदार जीने उतर कर अपने लिए निर्धारित बन्दी स्थान पर आए। कालकोठरी घोर अंधकार में लिपटी थी और हमारे सहबन्दियों में लगभग एक सौ पचास लोग थे जो चोर, हत्यारे तथा लुटेरे थे। उस कालकोठरी में प्रवेश मार्ग के अतिरिक्त बाहर जाने का कोई मार्ग न था। कोई लेखनी उस स्थान का चित्रण नहीं कर सकती और न कोई जिह्वा उसकी दुर्गन्ध का ही वर्णन कर सकती है। इन व्यक्तियों में अधिकांश के पास पहनने तथा बिछाने को कपड़े नहीं थे। परमात्मा ही जानता है कि उस घोर दुर्गन्धयुक्त तथा अंधेरे स्थान में हम पर क्या गुजरी।

उस कालकोठरी में बन्दी रहते हुए हमने दिन-रात बाबियों के कार्यों, उनकी दशा तथा आचरण पर चिन्तन किया। हमें अचरज हो रहा था कि इतने उच्चमना, इतने श्रेष्ठ और इतने बुद्धिमत्तापूर्ण जनसमुदाय को किस चीज ने महामहिम के विरूद्ध इस प्रकार का दुस्साहसपूर्ण और अमर्यादित आचरण करने के लिए प्रेरित किया। इस पर 'पीड़ित' ने कारागार से मुक्त होने के बाद इन लोगों को नवजीवन प्रदान करने का कार्य परम पराक्रम के साथ करने का निश्चय किया।

एक रात एक स्वप्न में ये उदात्त शब्द चहुँओर सुनाई दिये:

"सत्यतः हम तुझे तेरे ही द्वारा और तेरी लेखनी के माध्यम से विजयी बनाएंगे। तुझ पर जो कुछ आ बीता है उसका तू संताप न कर और न तू भयभीत ही हो, क्योंकि तू निरापद है। शीघ्र ही परमेश्वर धरती के खजाने अर्थात उन मनुष्यों को खड़ा करेगा, जो तेरे स्वयं और तेरे नाम के जरिए, जिनसे ईश्वर ने उसे पहचानने वालों के हृदय पुनर्जीवित किए हैं, तेरी सहायता करेंगे।"

और जब यह पीड़ित अपने कारागार से बाहर आया तो हमने महामहिम शाह के आदेशानुसार फारस और रूस की सम्मानित सरकारों की सेवा में रत अधिकारियों के संरक्षण में इराक की यात्रा की। इराक आने के बाद हमने ईश्वर की सहायता और उसकी कृपा से वर्षा की भाँति अपने छन्द प्रकट किए और उन्हें संसार के विभिन्न भागों में भेजा। अपनी बुद्धिमत्तापूर्ण सम्मतियों और प्रेमपूर्ण चेतावनियों से हमने समस्त जनों और विशेष रूप से इस जनसमुदाय को सदुपदेश दिए और विद्रोह, झगड़ों, विवादों तथा संघर्ष में पड़ने से उनको मना किया। इसके फलस्वरूप और प्रभुकृपा से हठधर्मिता धर्मनिष्ठा और समझदारी में बदली।

जिन दिनों मैं तेहरान के कारागार में था, जंजीरों के दुस्सह भार और बदबूदार हवा के कारण नींद तो नाममात्र को ही आती थी, तो भी निद्रा के उन विरल क्षणों में मुझे अनुभव हुआ कि कोई वस्तु मानों ऐसी प्रचण्ड वेगवती धारा के समान मेरे सिर के ऊपर से वक्ष तक उतरी जो किसी उत्तुंग पर्वत शिखर से धरती पर हरहरा कर आती है। परिणामस्वरूप मेरे शरीर के प्रत्येक अंग में आग-सी लग गई उन क्षणों में मेरी जिह्वा से निकले शब्द को सुनना किसी मनुष्य के वश की बात नहीं थी।

मैं विशेषरूप से इस समुदाय के लिए प्रकट की गई पातियों के कुछ परिच्छेद यहाँ उद्धृत करूंगा जिससे प्रत्येक व्यक्ति सुनिश्चित रूप से यह जान ले कि इस 'पीड़ित' ने इस प्रकार का आचरण किया है जो अन्तर्दृष्टिसम्पन्न मनुष्यों और न्यायपरायण तथा निष्पक्षजनों के लिये सुखकर रहा है।

"ओ ईश-नगरों के निवासी ईश्वर के मित्रों और उसके भूभागों में स्थित उसके प्रियजनों! यह 'पीड़ित' ईमानदारी और धर्मपरायणता का नियम तुम पर लागू करता है। धन्य है वह नगर जो इनके प्रकाश से चमकता है। इनसे मनुष्य उन्नत होता है, और सुरक्षा का द्वार सकल सृष्टि से नेत्रों के समक्ष खुल जाता है। बढ़भागी है वह मनुष्य जो दृढ़ता के साथ उनसे चिपटा रहता है और उनकी खूबी पहचानता है और जो उनके महत्व को नकारता है वह विपदाग्रस्त होता है।"

और एक-दूसरे सन्दर्भ में ये शब्द प्रकट हुए: "हम ईश्वर के सेवकों तथा सेविकाओं को पवित्र बनने और परमेश्वर से डरने का आदेश देते हैं, ताकि वे अपनी कामनाओं की नींद छोड़कर आसमानों के निर्माता ईश्वर की ओर उन्मुख हों। ईरान के क्षितिज से जब विश्व का दिवानक्षत्र चमका तो निष्ठावानों को हमने यही आज्ञा दी। मेरे कारावास अथवा मेरे दमनकारियों द्वारा मुझ पर ढायी गई विपदाओं से मुझे कोई हानि नहीं होती, जिस चीज से मुझे चोट लगती है वह उन लोगों का आचरण है जो मेरा नाम धारण करते हुए भी ऐसे काम करते हैं जिनसे मेरा हृदय और मेरी लेखनी हाहाकार कर उठती है। जो देश में

अव्यवस्था फैलाते हैं, दूसरों की सम्पत्ति पर हाथ डालते हैं और गृहस्वामी की अनुमति के बिना उसके घर में प्रवेश करते हैं, वे जब तक पश्चाताप नहीं करते और सर्वदा क्षमाशील, परम दयामय ईश्वर की ओर नहीं लौटते हैं, तब तक वस्तुतः हम उनसे मुक्त हैं।''

और एक अन्य सिलसिले में: ''ओ धरती के जनसमुदायों! तुम वह करने की शीघ्रता करो जो ईश्वर की इच्छा है। तुम पराक्रम के साथ युद्ध करो, क्योंकि उसके प्रतिरोधरहित, अटल धर्म के उद्घोष के निमित्त तुम्हें युद्ध करना योग्य है। हमने आदेश दिया है कि वाणी एवं विवेक की, सच्चरित्रता एवं प्रंशसनीय कर्मों की सेनाएँ लेकर परमेश्वर की राह में युद्ध किया जाए। यह निश्चय उसके द्वारा किया गया है, जो सर्वसमर्थ, सर्वशक्तिमान है। धरती को उत्तम बनाया गया है। उसके बाद धरती पर जो अव्यवस्था उत्पन्न करता है तो उसके लिए यह कोई गौरव की बात नहीं है। ईश्वर से डरो, ऐ लोगों, और उन जैसे मत बनो जो अन्यायपूर्वक आचरण करते हैं।''

और पुनः एक अन्य सम्बन्ध में: ''तुम एक दूसरे को अपशब्द मत कहो। हम सत्य ही समस्त धरावासियों को परस्पर मिलाने और जोड़ने के लिए आये हैं। मेरी वाणी के महासागर ने मनुष्यों के बीच जो कुछ व्यक्त किया है वह इसकी साक्षी देता है, फिर भी अधिकांश व्यक्ति भटक गये हैं। अगर तुम्हें कोई दुर्वचन कहे या तुम्हें पीड़ा पहुँचाए और यह ईश्वर की राह में हो तो धीरज रखो और उस पर भरोसा रखो जो सब सुन रहा है, सब देख रहा है वह जैसा चाहता है वैसा करता है। वस्तुतः वह शक्ति एवं सामर्थ्य का स्वामी है। उस महान सामर्थ्यशाली ईश्वर की पुस्तक में तुमको कलह करने और लड़ाई करने से रोका गया है। जो तुम्हारे लिए लाभदायक हो उसे मजबूती से पकड़ो। शाश्वत साम्राज्य का अधिपति जो अपने परम महान नाम में व्यक्त है तुम्हें यही आदेश देता है। वह वस्तुतः नियामक, सर्वप्रज्ञ है।''

और फिर एक सन्दर्भ में: ''सावधान कहीं तुमसे किसी व्यक्ति का रक्त न बहे। वाणी की म्यान से अपने शब्दों की तलवार निकालो, क्योंकि उससे तुम मानव-हृदय के दुर्ग पर विजय पा सकते हो। एक-दूसरे के विरूद्ध धर्मयुद्ध छेड़ने का नियम हमने समाप्त कर दिया है। ईश्वर की दया ने वस्तुतः सम्पूर्ण सृजित वस्तुओं को घेर लिया है, अगर तुम इसे समझ भर लो।''

और इसके बाद एक अन्य सिलसिले में: ''ऐ लोगों! देश-प्रदेश में अव्यवस्था न फैलाओ और किसी व्यक्ति का खून मत बहाओ। न अन्याय से दूसरों की सम्पत्ति हड़पो और न किसी अनर्गल प्रलापी का अनुसरण ही करो।''

और इसके बाद एक अन्य प्रसंग में: ''दिव्यवाणी का सूर्य कभी अस्त नहीं हो सकता, उसकी ज्योति कभी बुझाई नहीं जा सकती। ये उदात्त शब्द उस पद्म वृक्ष से सुने गए हैं जिसके परे कोई मार्ग नहीं है: मैं उसका हूँ जो मुझे प्रेम करता है, जो मेरी आज्ञाएँ दृढ़ता से मानता है और मेरी 'पुस्तक' में अपने लिए निषिद्ध की गई वस्तुओं का परित्याग कर देता है।''

और भी एक अन्य सन्दर्भ में: ''यह युग है ईश्वर का उल्लेख करने का, उसकी स्तुति के आयोजन का और उसकी सेवा करने का। अपने आप को इससे वंचित मत रखो। तुम शब्दों के वर्ण और 'पुस्तक' के शब्द हो, तुम वे नवांकुर हो जिन्हें स्नेहिल सौजन्य के हस्त से दयालुता की माटी में रोपा और अनुकम्पा की बौछारों ने फलता-फूलता बनाया गया है। भ्रान्त धारणा और अधार्मिकता के प्रचण्ड झकोरों से उसने तुम्हारी रक्षा की है और अपने प्रेमपूर्ण विधान के हाथों से तुमको पाला-पोसा है। यह समय है कि तुम अपनी पत्तियाँ विकसित करो और अपने फल उपजाओ। सद्कर्म और प्रशंसनीय चरित्र ही मानववृक्ष के फल हैं और सदैव रहे हैं। असावधान जनों से इन फलों को रोको मत। यदि वे स्वीकार्य हों, तो तुम्हारे उद्देश्य और जीवन का प्रयोजन उपलब्ध हो जाता है: अगर नहीं, तो उनको व्यर्थ विवादों में मग्न रहने दो। महत् प्रयास करो, ओ ईश्वर के जनो, ताकि भाग्यवश धरती के विविध बान्धवों के हृदय तुम्हारी सहिष्णुता तथा प्रेमल सौजन्यता के जलों से, बैरभावना और घृणा से मुक्त होकर स्वच्छ हो जायें और सत्य के सूर्य की भव्यताओं के सुयोग्य पात्र बन जाएं।''

इशराक्रात (''भव्यता'') के चौथे इशराक़ में हमने उल्लेख किया है: ''प्रत्येक उद्देश्य के लिए एक सहायक की आवश्यकता होती है। इस धर्मप्रवर्तन में वे सैन्यदल जो इसे विजयी बना सकते हैं, जो स्तुत्य कर्मों तथा खरे चरित्र के सैन्य दल हैं उन सैन्यदलों का नेता एवं सेनापति सदैव ईश्वर के भय से भरा रहा है, यह भय सभी वस्तुओं को आच्छादित करता है और सभी वस्तुओं पर शासन करता है।

तजल्लियात (दीप्तियाँ) की पुस्तक की तीसरी तजल्ली (दीप्ति) में हमने यह उल्लेख किया है: ''कलाएँ, शिल्प एवं विज्ञान अस्तित्व जगत को प्रोन्नत करते हैं और उसके उत्कर्ष का मार्ग प्रशस्त करते हैं। मानव जीवन के लिए ज्ञान पंखों जैसा और मनुष्य के उत्थान का मार्गदर्शक है। उसकी प्राप्ति प्रत्येक के लिए अनिवार्य है। किन्तु उन्हीं विज्ञानों का ज्ञानार्जन

किया जाना चाहिए जो धरती के जनसमुदायों के लिए लाभकारी हो सकते हैं और उनका नहीं जो शब्दों से आरम्भ होकर शब्दों पर ही समाप्त होते हैं। वैज्ञानिक एवं शिल्पकारों का विश्वजनों पर वस्तुतः बड़ा अधिकार है।

ज्ञान यथार्थतः मनुष्य का सच्चा खजाना और उसके अनुग्रह उल्लास, उत्थान, आमोद और प्रसन्नता का स्रोत है। सौभाग्यशाली है वह जो उसमें अनुरक्त होता है और धिक्कार है उनको जो लापरवाह हैं।

तेरे लिए अनिवार्य है कि सभी दिशाओं से तू लोगों का उसके लिए आह्वान कर जो उनको आध्यात्मिक लक्षणों एवं सद्कर्मो का दिग्दर्शन करा दे, जिससे सभी को मानव के उत्थान के उद्देश्य का ज्ञानार्जन हो जाए और वे परम अध्यवसाय के साथ परम उदात्त स्थान और भव्यता के शिखर की ओर बढ़े। ईश्वर का भय उसके प्राणियों की शिक्षा का सदैव आधारभूत कारक रहा है। वह जिनको प्राप्त है उनका कल्याण होगा।

आभा लेखनी से प्रकट हुआ और बैकुण्ठ के प्रथम पत्र पर उत्कीर्ण प्रथम शब्द यह है: "मैं सत्य ही कहता हूँ, संसार के समस्त जनसमुदायों के लिए ईश-भय सुनिश्चित सुरक्षा एवं सुरक्षित गढ़ रहा है। मानवमात्र की रक्षा का यह प्रमुख हेतु और उसके संरक्षण का सर्वोपरि साधन है। वस्तुतः मनुष्य में एक अन्तःशक्ति होती है जो उसको उस ओर जाने से रोक सकती है तथा सतर्क करती है जो अयोग्य तथा अशोभनीय है और इसे उसका लज्जाभाव कहा जाता है, किन्तु यह इने-गिने व्यक्तियों तक ही सीमित होता है। सभी के पास वह नहीं होता और न सभी ने उसे पाया है। अतः धर्म पर मजबूत पकड़ बनाये रखना विश्व के आध्यात्मिक नेताओं तथा नरेशों के लिए अनिवार्य है, क्योंकि उसी के माध्यम से ईश-भय सभी में समावेश होता है। इसके अतिरिक्त अन्य में नहीं।"

बैकुण्ठ के द्वितीय पत्रक पर अंकित किया गया दूसरा शब्द यह है: "दिव्य प्रतिपादक की लेखनी इस पल सत्ता के प्रकट स्वरूपों तथा शक्ति के स्रोतो, अर्थात धरती के नरेशों एवं शासकों को (ईश्वर उनकी सहायता करे) - सदुपदेश देती है और उनको धर्म रूपी उद्देश्य को समझने तथा उसमें लगने का आदेश देती है। यथार्थतः धर्म विश्व में व्यवस्था और विश्व के लोगों के बीच शान्ति की स्थापना का मुख्य साधन है। धर्म-स्तम्भों के कमजोर पड़ जाने से मूर्खों को बल मिला है, वे दुस्साहसी और ज्यादा अहंकारी हुए हैं। मैं सत्य ही कहता हूँ धर्म का जितना अधिक पतन होगा, अधर्मियों को उतनी ही दुःखद हठधर्मिता और अन्त में तो यह मात्र विप्लव एवं भ्रान्ति की ओर ले जाता है। मेरी बात सुनो, ओ अन्तर्दृष्टिसम्पन्न मनुष्यों और सचेत हो जायें वे जो विवेकरहित हैं।"

हमारी आशा है कि तेरे प्रति हमने जिन बातों का उल्लेख किया है, तू उनको ध्यान देकर सुनेगा, ताकि संयोग से तू मनुष्यों को उन चीजों से जो उनके पास हैं उन वस्तुओं की ओर मोड़े जो ईश्वर की हैं। हम परमात्मा से विनय करते हैं कि वह तुझे हठधर्मिता के बादलों की घनी पर्तों में से निष्पक्षता का प्रकाश और न्याय का सूर्य प्रदान करे और उनके जन-जन पर चमकाए। विश्व में व्यवस्था की स्थापना और राष्ट्रों की सुस्थिरता इसी पर निर्भर है।

'उद्गार' की पुस्तक, में ये उदात्त शब्द लिपिबद्ध एवं अभिलेखबद्ध हैं: "मैं कहता हूँ, ओ मित्रो! श्रम करो ताकि भाग्यवश ईश्वर की राह में इस 'पीड़ित' द्वारा और तुम्हारे द्वारा सही गई विपत्तियाँ निष्फल सिद्ध न होने पाएँ। सदाचार का आँचल थामो और विश्वासपात्रता तथा धर्मनिष्ठा की डोर कसकर पकड़ लो। अपनी भ्रष्ट एवं स्वार्थपूर्ण कामनाओं से नहीं, बल्कि उन चीजों से अपना नाता जोड़ो जो मानवमात्र को लाभ पहुँचाती हैं। ओ इस 'पीड़ित' के अनुयायीजनों! तुम मानवजाति के गड़ेरिये हो, अपने झुंडों को कामनाओं के भेड़ियों से मुक्त करो और उनको ईश-भय के आभूषण से सज्जित करो। यही वह अटल आदेश है जो इस समय उसकी लेखनी से प्रसारित हुआ है, जो युगों का चिरन्तन सत्य है। परमेश्वर की साधुता की सौगन्ध, सदाचारमय चरित्र तथा ईमानदार आचरण की तलवार इस्पात की धारों से अधिक पैनी होती है। इस घड़ी धर्म की आवाज उच्च स्वर से पुकारती और कहती है, ऐ लोगों! सचमुच वह युग आ गया है और मेरे प्रभु ने मुझे ऐसे प्रकाश से उद्भाषित किया है जिसकी प्रभा ने वाणी के सूर्य निगल लिये हैं। उस दयामय से डरो और उन सरीखे मत बनों जो भटक गये हैं।"

बैकुण्ठ के तीसरे पत्रक पर जिसे हमने दर्ज किया है वह तीसरा शब्द है: "ओ मानव पुत्र, तेरे नेत्र यदि करूणा की ओर उन्मुख हो तो तू उन वस्तुओं को त्याग दे जो तुझे लाभ पहुँचाती हैं और मानवमात्र जिससे लाभान्वित हो उसमें लग जा। और यदि तेरे नेत्र न्यायोन्मुख हों तो अपने पड़ोसी के लिए तू वही पसन्द कर जिसे तू अपने लिए पसंद करता है। नम्रता मनुष्य को गरिमा तथा शक्ति के गगन की बुलन्दी पर ले जाती है जबकि गर्व उसे अवनति तथा अधमता की गर्तों में गिराता है। महान है यह युग और प्रभावशाली है यह पुकार! अपनी एक पाती में हमने ये उदात्त शब्द व्यक्त किये हैं: "चेतना जगत अगर पूरी तरह श्रवणेन्द्रियों में बदल जाए, तो वह सर्वोपरि क्षितिज, से पुकारती आवाज को सुन पाने योग्य होने का दावा कर सकती है, क्योंकि इससे भिन्न तो झूठी कथाओं से मलिन हुए ये कान उसे सुनने के उपयुक्त न कभी हुए हैं, और न आज हैं। जो सुनते हैं उनका मंगल ही है और धिक्कार है हठधर्मी को।"

हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं और यह आशा संजोते हैं कि धनाढ्यता तथा शक्ति के साक्षात स्वरूपों और प्रभुत्व एवं गरिमा के दिवास्रोतो पृथ्वी के नरेशों की ईश्वर अपनी बलप्रदायनी कृपा से मदद करें - लघु शान्ति स्थापना हेतु कृपापूर्वक सहायता दे। राष्ट्रों की सुस्थिरता सुनिश्चित करने का यह वस्तुतः सबसे बड़ा साधन है। इस शान्ति को, जो सारी मानवजाति की सुरक्षा का प्रमुख साधन है, संयुक्त होकर मजबूती से थामना विश्व के अधिपतियों के लिए अनिवार्य है। हमारी आशा है कि जो कुछ मानव कल्याण का संवाहक होगा उसे उपलब्ध करने के लिए वे उठेंगे। उनका कर्त्तव्य है कि वे सबको सम्मिलित करते हुए एक सम्मेलन का आयोजन करें जिसमें वे स्वयं या उनके मंत्रीगण उपस्थित हों और उन उपायों को लागू करे जो मनुष्यों के बीच एकता एवं मैत्री की स्थापना हेतु अपेक्षित हैं। युद्धास्त्रों को दूर रख कर वे अवश्य ही विश्व पुनःनिर्माण के संसाधनों की ओर मुड़ें। एक शासक अगर दूसरे के विरूद्ध उठ खड़ा हो तो अन्य सभी शासक उसका निवारण करने के लिए एक हो जायें। फिर जो कुछ उनके अपने-अपने देशों की आन्तरिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है उससे परे शस्त्रास्त्रों तथा युद्ध सामग्रियों की कोई आवश्यकता नहीं रह जाएगी। अगर वे इस सर्वोपरि अभिमंत्रण को प्राप्त हों, तो सभी राष्ट्रवासी शान्ति एवं संतोष के साथ अपने-अपने व्यवसायों का चिंतन करेंगे और अधिकांश जनों के आर्तनाद बन्द हो जायेंगे। ईश्वर से हम विनती करते हैं कि वह उनको उसे करने में सहायता दे जो उसकी इच्छा एवं खुशी है। वह यथार्थतः उच्चस्थ सिंहासन और निम्नस्थ धरा का स्वामी तथा इहलोक एवं परलोक का प्रभु है। अधिक उपयुक्त तथा आवश्यक यह होगा कि उच्च सम्मानित शासक इस प्रकार की सभा में स्वयं उपस्थित हों और अपनी राजाज्ञाओं का उद्घोष करें। कोई शासक जो इस कार्य को सम्पन्न करेगा वह वस्तुतः ईश्वर की दृष्टि में अन्य शासकों का ध्रुवतारा बन जाएगा। धन्यभागी है वह और महत् है उसका अहोभाग्य।

इस देश में हरबार सेना के लिए अनिवार्य भरती की जाती है। उस समय लोग घोर आतंक से ग्रस्त हो उठते हैं, प्रत्येक राष्ट्र अपने सैन्य बलों की हर साल वृद्धि कर रहा है, क्योंकि उनके युद्ध मंत्रियों की अपनी वाहिनियों में नए रंगरूट शामिल करने की कामना कभी तृप्त नहीं होती हैं। हमें ज्ञात हुआ है कि इसी प्रकार फारस की सरकार ने भी अपनी सेना को सम्बलित करने का निश्चय किया है। इस 'पीड़ित' के मतानुसार एक लाख सुसज्जित और अनुशासित जवानों का सैन्यबल पर्याप्त होगा। हम आशा करते हैं कि तू न्याय के प्रकाश को अधिक कांतिमयता के साथ चमकाएगा। ईश्वर की साधुता की सौगन्ध! न्याय सबल है। सबसे बढ़कर तो वह हृदय-दुर्गो और मानवात्माओं का विजेता और अस्तित्व-जगत के रहस्यों का प्रकाशक तथा प्रेम एवं उदारता का ध्वजवाहक है।

ईश्वरीय ज्ञान के कोषों में एक ऐसा ज्ञान छिपा है जिसे यदि व्यवहार में लाया जाए तो वह पूर्णरूपेण तो नहीं, किन्तु बहुलांश में का नाश कर देगा। लेकिन इस ज्ञान की शिक्षा बचपन से दी जानी चाहिए क्योंकि इससे उसके भय के उन्मूलन में बहुत सहायता

मिलेगी। जो भय को कम करता है वह साहस को बढ़ाता है। ईश्वरेच्छा हमारी मदद करे तो, जिसका उल्लेख किया गया है उसका विस्तृत विवरण परमोच्च की लेखनी से निस्सृत होगा और कलाओं तथा विज्ञानों के क्षेत्र में ऐसी वस्तु प्रकट होगी जो विश्व तथा राष्ट्रों को नया स्वरूप प्रदान करेंगी। इसी तरह परमोच्च की लेखनी से ''रक्ताभ पुस्तक'' में एक शब्द लिपिबद्ध हुआ है जो मनुष्यों में छिपे बल को पूर्णतया प्रकट कर देने में, बल्कि उस बल की क्षमता को द्विगुणित करने में समर्थ है। हम परमात्मा से विनती करते हैं कि वह अपने सेवकों की वह करने में कृपालुतापूर्वक सहायता करे जो उसे प्रीतिकर एवं स्वीकार्य हो।

इन दिनों शत्रुओं ने हमें चारों ओर से घेर लिया है और विद्वेष की अग्नि सुलग रही है। ओ धरती के जनसमुदायों! मेरे जीवन की और तुम्हारे जीवन की सौगन्ध! इस 'पीड़ित' को कभी नेतृत्व की कोई कामना नहीं रही और न आज है। पृथ्वी के जनसमुदायों के बीच जो कुछ कलह का और राष्ट्रों के बीच अलगाव का कारण है उसका निग्रह करना सदैव मेरा लक्ष्य रहा है और अब भी है ताकि मनुष्य को प्रत्येक लौकिक अनुरक्ति से मुक्ति और अपने ही हितों में रत रहने से आजादी मिल जाए। अपने प्रियजनों से हम विनती करते हैं कि वे असत्य की धूल से हमारे परिधान का आंचल मैला न करें और हमारे स्थान तथा पद को हमारे नाम की पवित्रता और निर्मलता नष्ट करने के लिए उन प्रसंगों को प्रोत्साहित न करें जिनको उन्होंने कौतुक या चमत्कार माना है।

कृपालु प्रभु! यह वह दिन है जिसमें विवेकवानों को इस 'पीड़ित' का परामर्श मांगना और उससे जो स्वयं सत्य ही है, उन चीजों की जानकारी लेनी चाहिये जो मानवजाति के गौरव एवं सुस्थिरता की संवाही हैं। फिर भी बड़े लगाव से सभी इस भव्य, प्रदीप्त प्रकाश को बुझाने की चेष्टा कर रहे हैं और या तो हमारा अपराध सिद्ध करने या हमारे विरूद्ध अपना विरोध मुखर करने का सश्रम प्रयास कर रहे हैं। वस्तुस्थिति यहाँ तक आ पहुँची है कि इस 'पीड़ित' के आचरण को हर प्रकार से और इस ढंग से मिथ्यानिरूपित किया गया है कि उसकी चर्चा करना अशोभनीय होगा। हमारे एक मित्र ने सूचना दी है कि महान नगर, कॉन्सटैन्टिनोपल के निवासियों के बीच किसी के मुँह से उसने बड़े ही दुःख के साथ यह सुना था कि उसके देश से प्रति वर्ष पचास हजार तूमान की धनराशि अक्का भेजी जा रही है। किन्तु यह स्पष्ट नहीं किया गया कि इस राशि का भुगतान किसने किया है और किसके हाथों उसे पहुँचाया गया है।

संक्षेप में यह 'पीड़ित', उनके हाथो जो कुछ उस पर बीता है और जो कुछ उसके बारे में कहा गया है उस सबके बावजूद धैर्यपूर्वक टिका रहा है और अपनी शान्ति बनाए रखी है, क्योंकि, ईश्वर की महिमा बढ़े, प्रेमपूर्ण विधान और उसकी अद्वितीय दयालुता के द्वारा धरतीतल से युद्ध, रक्तपात एवं सारे विवादों को अपने वाणीबल से मिटा डालना हमारा

प्रयोजन है। जो कुछ कहा गया है उसके बावजूद हमने हर दशा में उचित धैर्य रखते हुए उसे सह लिया है और उनको परमेश्वर पर छोड़ दिया है। तथापि इस लांछन विशेष का प्रतिकार करते हुए हमने उत्तर दिया है कि वह दृढ़ता के साथ जो कह रहा है वह यदि सत्य हो तो, फारस में एक ऐसे व्यक्ति को खड़ा कर देने के लिए उसे उसका जो प्राणिमात्र का प्रभु है, इस गोचर का अधीश्वर है आभारी होना आवश्यक हो, जिसने कैदी तथा असहाय होते हुए भी इस देश पर अपना प्रभुत्व कायम करने और वहाँ से एक वार्षिक राजस्व प्राप्त करने में सफलता पाई है। यदि वह व्यक्ति उनमें है जो निष्पक्ष निर्णय करते हैं तो इस प्रकार की उपलब्धि निन्दित होने के स्थान पर स्तुत्य होनी चाहिए थी। अगर कोई इस पीड़ित की दशा से परिचित होना चाहे तो उसको बतलाया जाये कि ये कैदी, जिनको संसार ने प्रताड़ित और जिनके साथ राष्ट्रों ने अन्याय किया है, कई-कई दिन और रात जीवन निर्वाह के क्षुद्रतम साधनों से भी पूर्णतया वंचित रहा है। इस बातों की चर्चा करने कि हमारी इच्छा नहीं है और न अपने आरोपी की शिकायत करने की हमारी कोई इच्छा पहले थी, न आज ही है। इस कारागार की दीवारों के अन्दर एक अत्यन्त सम्मानित पुरूष जीवकोपार्जन हेतु उस समय तक पत्थर तोड़ने के लिए बाध्य हुआ जबकि दूसरों को समय असमय उस दिव्य आधार से पुष्टि प्राप्त हुई जिसे सुधा कहते हैं। हम ईश्वर से विनय करते हैं कि सभी को न्यायपरायण तथा निष्पक्ष बनने में मदद दे और पश्चाताप करने तथा अपनी ओर लौटने में कृपापूर्वक उनकी सहायता करे। सचमुच ही वह सुन रहा है और जवाब देने को तैयार बैठा है।

महिमामंडित है तू, ओ प्रभु मेरे परमेश्वर। जो लोग मुझसे सम्बन्धित नहीं हुए और जो मुझे इस प्रकार क्षति पहुँचाने तथा नीचा दिखाने को उठ खड़े हुए हैं जिसका कोई लेखनी वर्णन नहीं कर सकती, कोई जिह्वा विवरण नहीं दे सकती और न कोई पाती जिसका भार वहन कर सकती है, उनके हाथों इस पीड़ित पर जो कुछ गुजरा है उसे तू देख रहा है। तू मेरे हृदय की चीत्कार और मेरे अन्तरतम प्राणों की कराह और उन चीजों को सुन रहा है जो तेरे नगरों में तेरे विश्वस्त जनों और तेरे देश में तेरे प्रिय जनों पर उनके हाथों हुई हैं जिन्होंने तेरी संविदा और तेरी वसीयत तोड़ी है। विश्व भर के तेरे प्रेमी जनों की आहों के जरिये मैं तुझसे विनती करता हूँ ओ मेरे प्रभु कि जो तेरे नाम के रहस्यों से अनभिज्ञ रह गये हैं उनकी नृशंसता से तू अपने प्रिय जनों की रक्षा कर। ओ मेरे प्रभु, सभी वस्तुओं में व्याप्त अपनी शक्ति से उनकी सहायता कर और धीर-गम्भीर तथा चिर सहिष्णु होने का उनको सम्बल प्रदान कर तू सर्वशक्तिमान, सर्वसमर्थ, सर्वानुग्रहमय है। तुझ उदार विपुल कृपामय के अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं हैं।

इन दिनों कुछ व्यक्ति हैं जिन्होंने न्याय एवं निष्पक्षता से मुँह मोड़कर बैर की बरछी और द्वेष की तलवार से मुझ पर आक्रमण किया है। वे भूल गये हैं कि प्रत्येक न्यायपरायण व्यक्ति के लिए विपत्ति में उसकी सहायता करना ही उचित है जिसे संसार ने दूर फैंक

दिया और राष्ट्रों ने त्याग दिया है। वे भूल गये हैं कि सदाचार तथा धर्मनिष्ठा का अवलम्बन ही उनके लिए उपयुक्त है। अभी तक अधिकांश व्यक्ति इस 'पीड़ित' का उद्देश्य नहीं जान पाये हैं और न वे वह कारण ही समझ सके हैं जिसके लिए वह अगणित विपत्तियाँ सहने का आकांक्षी रहा है। मेरे हृदय से इस बीच यह शब्द-स्वर फूटा है कि "काश, मेरे जन जान पाते!" सभी वस्तुओं से अलिप्त यह 'पीड़ित' ये उदात्त शब्द उच्चारता है "संकट में सहायक, स्वयं ईश्वर की नौका को लहरों ने घेर लिया है। तूफानी झंझावातों से भय मत कर, ओ नाविक वह जो प्रभात को उत्पन्न करता है वस्तुतः इस अंधकार में तेरे साथ है जिससे उनको छोड़ कर सभी मानव-हृदय आतंकित हैं जिनको सर्वशक्तिमान, अप्रतिहत ईश्वर ने बचाने की इच्छा की है।"

ओ शेख! मैं उस सत्य-सूर्य की शपथ खाकर कहता हूँ जो इस कारागार के क्षितिज पर उदित होकर चमका है। विश्व का सुधार इस पीड़ित का समग्र लक्ष्य रहा है। प्रत्येक निर्णयसम्पन्न, विवेकशील, अन्तर्दृष्टियुक्त और समझदार व्यक्ति इसका साक्षी है। आपदाओं से आक्रांत होकर उसने मजबूती से धैर्य एवं सहिष्णुता की डोर थाम ली, और अपने शत्रुओं के हाथों हुए अपकारों से सन्तुष्ट रहा। और तब चीख-चीख कर वह कह रहा था: "तेरी कामना हेतु मैंने अपनी कामना त्याग दी है, ओ मेरे प्रभु और तेरी इच्छा की अभिव्यक्ति के लिए मैंने अपनी इच्छा का परित्याग कर दिया है। तेरी भव्यता की सौगंध! तेरे धर्म की सेवा के प्रयोजन के अतिरिक्त मुझे अपनी या अपने जीवन की चाह नहीं है, सिवाय इसके कि मैं तेरे पथ पर उत्सर्ग हो जाऊँ, मुझे अपने प्राणों का मोह नहीं है। तू देख रहा है और जानता है, ओ मेरे प्रभु, कि जिनसे हमने निष्पक्ष तथा न्यायपरायण होने के लिए कहा, वे ही अन्यायपूर्वक हमारे विरूद्ध उठ खड़े हुए हैं। खुलेतौर पर वे मेरे साथ रहे, परन्तु गुप्त रूप से उन्होंने मेरे शत्रुओं की मदद की जो मेरा निरादर करने के लिए कटिबद्ध हुए हैं। ओ प्रभु, मेरे परमेश्वर! मैं प्रमाणित करता हूँ कि अपने सेवकों को तूने अपने धर्म की सहायता करने और अपने शब्द को उन्नत करने के लिए रचा है, फिर भी उन्होंने तेरे शत्रुओं का साथ दिया है। अस्तित्व जगत को अपनी परिधि में लिए तेरे 'महोद्देश्य' और गोचर तथा अगोचर को घेरे तेरे नाम के जरिये मैं तुझसे विनती करता हूँ कि धरावासियों को तू अपने न्याय के प्रकाश से सुशोभित कर और उनके हृदयों को अपने ज्ञानलोक से ज्योतिर्मय कर दे। हे मेरे प्रभु, मैं तेरा सेवक और तेरे सेवक का वंशज हूँ। मैं तेरी एकता की, तेरी एकमेवता की और तेरे स्वत्व की पुनीतता, तेरे सारस्वरूप की पावनता की साक्षी देता हूँ। ओ मेरे प्रभु, अपने विश्वस्तजनों को तू अपने प्राणियों में विश्वासघातियों और अपनी प्रजा में मिथ्यावादियों की दया पर निर्भर देख रहा है। उनके हाथों, जिनको

तू हमसे ज्यादा जानता है, हम पर जो कुछ गुजरा है वह तुझे ज्ञात है। उन्होंने जो किया है उसने तेरे समीपस्थों पर से परदा हटा डाला है। मैं विनय करता हूँ कि, 'तेरी प्रेरणा के दिवास्रोत' और 'तेरे धर्म के उदयस्थल' के दिनों में उनसे जो कुछ छूट गया है उसे प्राप्त करने में उनकी सहायता कर। तू उसे करने में समर्थ है जिसमें तेरी खुशी है और आकाश में तथा धरती पर जो कुछ है सबकी लगाम तेरी मुट्ठी में है।'' सच्ची 'आस्था' का स्वर और विलापगीत गूंज उठा है। वह उच्च स्वर से पुकारता कह रहा है: ''ऐ लोगों! ईश्वरीय साधुता की सौगन्ध! मुझे उसकी उपलब्धि हुई है जिसने मुझे अवतरित किया है। यह वह 'युग' है जब सिनाई ने उससे वार्तालाप किया था और कार्मल अपने प्रकटकर्ता पर मुस्कुराया है जिसने उसे शिक्षा दी है। तुम सब परमात्मा से डरो और उन जैसे मत बनो जिन्होंने उसे नकार दिया हैं, उसकी दया से जो कुछ प्रकट हुआ है उससे अपने आपको दूर मत रखो। सभी नामों के स्वामी अपने प्रभु के नाम पर अमरता के सप्राण जल से अविलम्ब लाभ उठाओ और उसकी याद में उसका गान करो जो सामर्थ्यशाली है।''

हमने सभी परिस्थितियों में मनुष्यों को जो उचित है उसका आदेश दिया है और जो अनुचित है उसका निषेध किया है। वह जो प्राणीमात्र का प्रभु है, साक्षी है, कि इस 'पीड़ित' ने परमेश्वर से उसके प्राणिजनों के निमित्त अनुनयपूर्वक वहीं मांगा है जो एकता एवं समरसता का, साहचर्य एवं समन्वय का संवाहक है। प्रभु की साधुता की सौगन्ध यह 'पीड़ित', कपटाचार में समर्थ नहीं है। उसने वस्तुतः वही व्यक्त किया है जो ईश्वर चाहता था। सचमुच वह शक्ति का स्वामी, निर्बाध है।

हम महामहिम शाह की पाती में व्यक्त कुछ उदात्त शब्दों का एक बार फिर उल्लेख करते हैं ताकि तू सुनिश्चित रूप से जान ले कि जो कुछ उल्लेख किया गया है वह ईश्वर से आया है: ''हे राजन! दूसरो की भाँति मैं भी मात्र मनुष्य था, अपने पलंग पर निद्रालीन था और तभी देखो सर्वमहिम की बयार मेरे ऊपर बही और समस्त भूतकाल का ज्ञान मुझे दिया। यह संदेश मेरा नहीं, बल्कि उसका है जो सर्वशक्तिमान एवं सर्वज्ञ है और उसी ने मुझे अवनि और अम्बर के बीच अपनी आवाज उठाने की आज्ञा दी है। और इसके लिए मुझ पर जो कुछ आन पड़ा है उसने प्रत्येक बोधसम्पन्न व्यक्ति के आँसुओं को बहने के लिए विवश किया है। मनुष्यों में प्रचलित विद्या का मैंने अध्ययन नहीं किया, उनके विद्यालयों में मेरा प्रवेश नहीं हुआ। जहाँ मेरा निवास था उस नगर से पूछ कर देखो, ताकि तुझे भलीभाँति यह विश्वास हो जाये कि मैं उनमें से नहीं हूँ जो मिथ्याभाषण करते हैं। यह तो एक पत्ता मात्र है जिसे सर्वशक्तिमान, सर्वस्तुत्य तेरे प्रभु के पवन ने हिलोर दिया है। जब प्रचण्ड हवाएँ चल रही हों तब क्या वह निश्चेष्ट रह सकता है? नहीं-नहीं उसकी सौगंध

जो सम्पूर्ण नामों एवं गुणों का स्वामी है। जो 'चिरस्थायी' है उसके आगे क्षणभंगुर का अस्तित्व ही नहीं है। उसके सर्वबाध्यकारी आह्वान मुझे मिले हैं और उनके कारण मैं सभी के बीच उसका गुणगांन करने को विवश हूँ। जिस समय उसकी आज्ञा उच्चरित हुई, मैं वस्तुतः मृतक जैसा था। करूणामय, दयामय तेरे प्रभु की इच्छा के हस्त ने मेरा कायाकल्प कर दिया। कोई व्यक्ति क्या अपनी मरजी से वह बात बोल सकता है जिसके लिए सभी मनुष्य उसका प्रतिकार करें? नहीं इस 'लेखनी' को जिसने शाश्वत रहस्यों की सीख दी है उसकी सौगन्ध, सर्वशक्तिमान, सर्वक्षम की कृपा ने जिसे समर्थ बनाया है उसके सिवा कोई नहीं बोल सकता।

"इस 'पीड़ित' पर, हे राजन्, न्याय की दृष्टि डालो और फिर उस पर जो गुजरा है उसका ईमानदारी से विचार करो। यथार्थतः ईश्वर ने तुझे मनुष्यों के बीच अपना प्रतिबिम्ब और धरावासियों के लिए अपनी शक्ति का प्रतीक बनाया है। तू हमारे और उनके बीच निर्णय कर जिन्होंने प्रमाण और पथदर्शक 'पुस्तक' के बिना ही हमारे साथ दुर्व्यवहार किया है। तुझको घेरे हुए जन तुझे अपने ही स्वार्थ के कारण प्रेम करते हैं जबकि यह 'युवक' तुझे तेरे ही कारण स्नेह करता है और तुझे प्रभु के आसन के निकट लाने और न्याय की ओर मोड़ने के अतिरिक्त उसकी कोई कामना नहीं है। मैं जो कह रहा हूँ, तेरा प्रभु उसका साक्षी है।

"हे राजन्! तू यदि अपने कान 'महिमामय लेखनी' और 'शाश्वतत्व के कपोत' के कल-कुंजन की ओर लगाता, जो इस पद्म-वृक्ष की डालों पर, जिसके आगे कोई राह नहीं है, सभी नामों के निर्माता और धरती तथा आकाश के रचयिता परमेश्वर की स्तुतियाँ उच्चार रहा है, तो तू वह स्थान प्राप्त कर लेता, जहाँ से तुझे उस आराध्य की प्रभा के अतिरिक्त अस्तित्व जगत में किसी के दर्शन नहीं होते और अपने प्रभुत्व को तू अपनी सम्पत्तियों में सर्वाधिक तिरस्करणीय मानता। तब उसे छोड़ कर तू अपनी दृष्टि 'उसके' मुखमण्डल के प्रकाश से आलोकित क्षितिज पर टिका देता फिर उस उदात्त, सर्वोच्च अपने प्रभु की सहायता के प्रयोजन के सिवा सत्ता का भार वहन करने की कभी तेरी इच्छा भी नहीं होती और तब देवमण्डली तुझे धन्य मानती। अहा कितना उत्कृष्ट है यह परमोदात्त स्थान! काश तू उस प्रेमत्व की शक्ति से वहाँ आरोहण कर पाता जिसे ईश्वर के नाम से उत्पन्न माना जाता है!"

तूने ही या किसी अन्य ने कहा है कि "तौहीद की सूरा को भाषान्तरित किया जाये, ताकि सभी जान सकें और पूरी तरह मान लें कि एकमेव सत्य परमेश्वर न तो जनित है और न जनक। इसके अतिरिक्त बाबी उसके (बहाउल्लाह) ईश्वरत्व में विश्वास करते हैं।"

ओ शेख! यह पद वह स्थान है जहाँ कोई स्वयं में मरकर ईश्वर में जीता है। जब मैं दिव्यता का उल्लेख करता हूँ तो वह अपने पूर्ण अस्तित्व को भुला देने की ओर संकेतित करता है। यह वह स्थान है जहाँ मेरे अपने सुख-दुःख या मेरे जीवन अथवा पुनरूत्थान पर मेरा नियन्त्रण नहीं है।

हे शेख! इस काल के धर्मगुरू उस प्रदीप्त भव्यता की चर्चा कैसे करते हैं जिसे दिव्य ज्ञान के सिनाई पर 'वाणी के सदुरह' ने इमरान के पुत्र (मूसा) पर बिखेरा था? 'प्रज्वलित झाड़ी' द्वारा उच्चरित शब्द को उन्होंने सुना और स्वीकार किया, फिर भी अधिकांश व्यक्ति इसको समझने की क्षमता से विहीन है, क्योंकि वे अपनी ही चिन्ताओं में व्यस्त रहे हैं और ईश्वरीय चीजों से अनभिज्ञ हैं। इसके संदर्भ में फिन्दिरिस्क के सैयद ने उचित ही कहा है: ''कोई लौकिक मन-मस्तिष्क इस विषय की थाह नहीं पा सकता।'' ईशदूतों की मुहर (मुहम्मद) ने जो कहा है उसके सम्बन्ध में वे कौन-सा स्पष्टीकरण दे सकते हैं? – ''तुम वस्तुतः अपने प्रभु के दर्शन ऐसे ही करोगे जैसे तुम चौदहवीं की रात का पूर्ण चन्द्र देखते हो।'' इसके अतिरिक्त 'वफादार के सेनाधिपति' (इमाम अली) कहते हैं : ''तुम उसके प्रकटीकरण की प्रत्याशा करो जिसने सिनाई पर प्रज्वलित झाड़ी में से मूसा से वार्तालाप किया था।'' इसी प्रकार अली के पुत्र हुसैन ने कहा है: ''तेरे अतिरिक्त किसी को एक ऐसा धर्मप्रकाशन कृपापूर्वक प्रदत्त किया जायेगा जिसे स्वयं तुझे प्रदान करने की कृपा नहीं की गई - इस धर्मप्रकाशन का प्रकाशक वह होगा जिसने 'तुझे' प्रकट किया है। अंधी हो जाये वह आँख जो तुझे नहीं देखती।''

इसी आशय के इमामों के अभिलेखबद्ध तथा व्यापक रूप से अभिज्ञात, कथन विश्वास योग्य पुस्तकों में संग्रहित हैं। धन्य है वह जो शुद्ध सत्य को बोधगम्य करता और बोलता है। कल्याण होगा उसका जिसने उसकी, जो सभी मनुष्यों का इष्ट है, वाणी के सप्राण जलों का सम्बल पाकर अपने निरर्थक मनोरथ तथा व्यर्थ कल्पनाओं से अपने आपको निर्मल कर लिया है और सर्वाधिपति, सर्वोच्च के नाम पर संशय के परदे छिन्न-भिन्न कर डाले हैं और संसार तथा उसके सर्वस्व का परित्याग कर दिया है और परम महान कारागार की ओर प्रवृत्त हो गया है।

ओ शेख! कोई बयार दिव्य धर्मप्रवर्तन के समीरों की बराबरी नहीं कर सकती जबकि ईश्वर द्वारा उच्चरित शब्द मानव पुस्तकों के बीच सूर्य की भाँति उदीप्त होकर दमकता है। सौभाग्यशाली है वह नर जिसने उसे खोज लिया है और पहचान लिया है, और कहा है: ''जय हो तेरी, जो जगत का इष्ट है और तुझे धन्यवाद, ओ परम प्रेमास्पद उन हृदयों को समर्पित है।''

ईश्वरत्व के सम्बन्ध में किये गये हमारे उल्लेख का हमारा अभिप्राय समझने में मनुष्य विफल रहे हैं। वे यदि उसे जान लें तो अपने स्थानों से उठ कर वे चीख पड़ेंगे: ''हम यथार्थतः ईश्वर से क्षमा मांगते हैं!'' 'ईशदूतों की मुहर' कहते हैं: ''ईश्वर के साथ हमारे नाते अनेक हैं। एक समय हम वह स्वयं होते हैं और वह स्वयं हम होता है। दूसरे समय वह होता है जो वह है और हम होते हैं जो हम हैं।''

इसके अतिरिक्त, ऐसा क्यों है कि तूने उन अन्य स्थानों की चर्चा नहीं की जिनका आभा लेखनी ने रहस्योद्घाटन किया है? इस 'पीड़ित' की जिह्वा से अनेक रातों में यह उदात्त शब्द मुखर हुए हैः ''हे प्रभु, मेरे परमेश्वर! मैं तेरी एकता और तेरी एकमेवता की साक्षी देता हूँ कि तू ईश्वर है और तेरे अतिरिक्त दूसरा कोई ईश्वर नहीं है। अनन्तकाल से तू अपने सिवा किसी के भी वर्णन से और अपने अतिरिक्त सभी स्तुति से परे रहा है और अनन्तकाल तक तू वैसा ही रहेगा जैसा तू आदि से था और सदैव रहा है। ओ शाश्वतत्व के अधिपति! तेरे परम महान नाम के द्वारा और वाणी के सिनाई पर तेरे धर्मप्रकाशन के दिवानक्षत्र के उद्गारों के जरिये और सभी सृजित वस्तुओं के बीच तेरे ज्ञान के सागर की तरंगों के माध्यम से, मैं तुझसे विनती करता हूँ कि तू इस प्रकार मेरी सहायता कर कि मैं तेरे निकट आ सकूँ और तेरे अतिरिक्त सभी से निर्लिप्त हो सकूँ। मेरी भव्यता की सौगन्ध! ओ समस्त प्राणियों के स्वामिन् और सकल सृष्टि के इष्ट! तेरी धरती के चप्पे-चप्पे पर मैं अपना मस्तक रखना चाहूँगा, ताकि संयोगवश तेरे प्रियजनों के चरणचिह्नों से धन्य हुए स्थलों को स्पर्श करने का सम्मान मिल जाये।

परमेश्वर की साधुता की सौगंध! निरर्थक मनोरथों ने मनुष्यों को 'निश्चय का क्षितिज' प्राप्त करने से रोक दिया है और व्यर्थ कल्पनाओं ने उनको 'मनभावन सीलबन्द मदिरा' से दूर रोक रखा है। यथार्थतः मैं कहता हूँ और ईश्वर के वास्ते यह घोषणा करता हूँ: ''यह सेवक, यह 'पीड़ित' कैसे अस्तित्वभाव का अपने लिये दावा करके लज्जित होता है, चाहे सत्ता के वे कितने ही अधिक ऊँचे सोपान पर हों। वस्तुतः धरती पर चलता-फिरता प्रत्येक विवेकशील व्यक्ति वह शर्मिन्दगी अनुभव करता है, क्योंकि वह पूर्णतया जानता है कि जो वस्तु उसकी सम्पन्नता, उसके वैभव, उसकी सामर्थ्य, उसकी उन्नत्ति, उसकी प्रगति तथा शक्ति का आधार है वह वही माटी है जो सभी के पैरों तले रोंदी जाती है। इसमें कोई संशय नहीं हो सकता कि, जिसे इस सत्य का ज्ञान है वह सारे अहंकार, दर्प और मिथ्याभिमान से स्वच्छ होकर निर्मल हो जाता है। जो कुछ कहा गया है वह ईश्वरागत हैं इसकी उसने वस्तुतः पहले भी साक्षी दी है और आज भी देता है, और वह सचमुच सर्वज्ञ, सर्वज्ञाता है।

मनुष्यों को सुनने योग्य कान और पैनी दृष्टि, विस्तीर्ण वक्ष तथा ग्रहणशील हृदय प्रदान करने की ईश्वर से विनती करो ताकि भाग्यवश उसके सेवक अपने हृदयों का इष्ट प्राप्त कर लें। अपने 'महाउद्देश्य' का उद्घोष करने में वह किसी भी तरह हिचका नहीं है। स्वयं धरती के नरेशों एवं शासकों को लिख भेजते हुए उसने उनको वह प्रदान किया जो विश्व के कल्याण, एकता, समरसता और पुनःर्निर्माण तथा राष्ट्रों की प्रशान्ति का हेतु है। इनमें नेपोलियन तृतीय था जिसने, बताया जाता है कि, एक खास बात कही थी, जिसके फलस्वरूप हमने उसे अपनी पाती भेजी जब हम एड्रियानोपल में थे। परन्तु उसने इसका उत्तर नहीं दिया। परम महान कारागार में हमारे आने के बाद उसके मंत्री का एक पत्र हमें मिला, जिसका प्रथम अंश फारसी में और दूसरा उसके ही हस्तलेख में था। इसमें उसने सहृदयतापूर्वक लिखा था: आपके अनुरोध के अनुसार मैंने आपका पत्र पहुँचा दिया है, किन्तु अभी तक कोई उत्तर नहीं मिला है। तथापि हमने कॉन्स्टैन्टीनोपल स्थित अपने मंत्री और उन क्षेत्रों में अपने वाणिज्यदूतों को आवश्यक अनुशंसाएँ जारी कर दी हैं। अगर आप कोई काम करवाना चाहें तो हमें सूचित करें, और हम उसे सम्पन्न करेंगे।

उसके शब्दों से यह जाहिर हुआ कि इस सेवक का प्रयोजन उसने वस्तुगत इमदाद का अनुरोध समझा। अतः उसके (नेपोलियन तृतीय के) नाम पर हमने सूरातुल हैकल के पद प्रकट किए, जिनमें से कुछ हम यहाँ उद्धृत करते हैं, जिससे तू यह जान सके कि इस 'पीड़ित' का धर्म ईश्वर के निमित्त प्रकट हुआ है और उसी से आया है:

"ओ पेरिस के सम्राट! धर्मयाजक से कह दो कि वह अब घंटियाँ न बजायें। इस सच्चे, परमेश्वर की सौगंध! परम सामर्थ्यशाली घंट का उसके स्वरूप में आविर्भाव हो गया है जो परम महान नाम और परमोदात्त परमोच्च तेरे प्रभु की इच्छा की अंगुलिकायें हैं। उसके सर्वमहिम नाम पर अमरत्व के गगनांगन में उसी का निनाद करा। इसलिये प्रभु का सामर्थ्यशाली काव्य पुनः तेरे लिए उतारा गया है ताकि तू अवनि और अम्बर के रचयिता परमेश्वर का इन दिनों स्मरण करने के लिए उठ सके, जब धरातल पर सारी जनजातियाँ विषादमग्न हैं, नगरों की नीवें हिल गई हैं और जिनको सर्वज्ञ, सर्वप्रज्ञ ईश्वर ने बचा लेना चाहा है उनको छोड़कर सभी मनुष्यों पर अधर्म की गर्द आ लिपटी है। सुनो: वह जो असीम है प्रकाश के मेघों में आ गया है ताकि वह अपने नाम परम दयानिधान के समीरों से सभी सृजित वस्तुओं को अनुप्राणित, संसार को एकीकृत और सभी मानवों को इस पाती के चतुर्दिक एकत्र करे जिसे नभमण्डल से भेजा गया है। सावधान, ईश्वरीय कृपा को तुम्हारे लिए उतारे जाने के बाद तुम उसे नकार मत देना। यह तुम्हारे लिए उससे उत्तम है जो तुम्हारे पास है, क्योंकि जो तुम्हारा है वह नष्ट हो जायेगा जबकि वह जो ईश्वर के पास है सदा रहेगा। उसकी जैसी मरजी होती है, सचमुच वह वहीं निर्दिष्ट करता

है। तुम्हारे प्रभु, दयामय परमेश्वर की ओर से वस्तुतः क्षमाशीलता की बयारें बहीं है और जो उनकी ओर उन्मुख होगा उसे उसके पापों तथा सारी वेदना और रूग्णता से मुक्त किया जायेगा। अहोभाग्य है उसका जो उनकी ओर मुड़ गया है और धिक्कार है उसको जिसने उनसे मुँह फेर लिया है।

"तू यदि अपना अन्तःकरण सभी सृजित वस्तुओं की ओर प्रवृत करे तो तुझे सुनाई देगा 'दिवसों का चिरन्तन' अपनी महती भव्यता में आ गया है। प्रत्येक वस्तु अपने प्रभु की स्तुति का समारोह मना रही है। कुछ ने ईश्वर को जान लिया है और उसको स्मरण कर रहे हैं। दूसरे उसे स्मरण कर रहे हैं किन्तु उसे जानते नहीं हैं।" एक सुस्पष्ट पाती में हमने इसी प्रकार अपनी आज्ञा दी है।

"उस आवाज पर अपना कान लगा, ओ राजन्, जो इस सदाबहार वृक्ष में प्रज्वलित अग्नि' से इस सिनाई पर पुकार रही है, जिसे "शाश्वत नगर" से परे पावन एवं हिमधवल स्थल पर खड़ा किया है। वस्तुतः सर्वदा क्षमाशील, परम दयामय मेरे अतिरिक्त दूसरा कोई ईश्वर नहीं है। यथार्थतः हमने ही उसे भेजा है जिसे हमने "पावन चेतना" से युक्त किया (ईसा मसीह) ताकि तुम्हारे लिए वह इस प्रकाश की घोषणा कर सके, जो परमोदात्त सर्वमहिम तुम्हारे प्रभु की इच्छा के क्षितिज से चमका है और जिसके चिह्न पश्चिम में व्यक्त हुए हैं। इस "दिवस" में जिसे ईश्वर ने अन्य सभी दिवसों से उदात्त बनाया है और जिसमें सर्वदयामय ने अपनी देदीप्यमान भव्यता की छटा उन सभी पर बिखेरी है जो धरती पर तथा आकाश में हैं, तू अपने मुख उसकी (बहाउल्लाह) ओर कर। तू ईश्वर की सेवा तथा उसके धर्म की सहायता करने के लिए उठ। वह वस्तुतः दृश्य-अदृश्य के सैन्य दलों से तेरी सहायता करेगा और तुझे उस सबका सम्राट ठहरा देगा जिस पर सूर्य उदित होता है। सत्य ही तेरा प्रभु सर्वसमर्थ, सर्वशक्तिमान है।"

"परम दयामय के समीर रचित वस्तुओं पर से बहे हैं। सौभाग्यशाली हैं वह नर जिसने उनका मूल खोज लिया है और पक्के हृदय से उनकी ओर टिक गया है।" अपनी काया को मेरे नाम के अलंकरण से और अपनी जिह्वा को मेरे सुमिरन से और अपने हृदय को मुझ सर्वशक्तिमान, सर्वोच्च के प्रेम से संवार। तेरे पास जो कुछ है उससे और पृथ्वी की सम्पूर्ण निधियों से भी जो तेरे लिए अधिक उत्तम है उसके अतिरिक्त मैंने तेरे लिए कोई इच्छा नहीं की है। तेरा प्रभु वस्तुतः सुविज्ञ, सर्वज्ञाता है। मेरे सेवकों के बीच मेरे नाम पर उठो और कहो: "ओ धरती के जनसमुदायों! उसकी ओर उन्मुख हो जो तुम्हारी ओर उन्मुख हुआ है। वह, यथार्थतः तुम्हारे बीच ईश्वर का मुखड़ा और तुम्हारे लिए उसका प्रमाण तथा पथदर्शक है। जिन्हें कोई उत्पन्न नहीं कर सका ऐसे चिह्नों के साथ वह तुम्हारे पास

आया है।'' प्रज्वलित झाड़ी का स्वर विश्व के अन्तस्थल में गूंज उठा है और पावन चेतना राष्ट्रों के बीच पुकार रही है: ''देखो वह 'इष्ट' प्रत्यक्ष प्रभुत्व के साथ आ गया है।''

''ओ राजन! ज्ञान-गगन के वे नक्षत्र टूट कर नीचे आ गिरे हैं जो मेरे धर्म का सत्य स्थापित करना चाहते हैं और मेरे नाम पर ईश्वर का उल्लेख करते हैं और इस पर भी जब मैं अपनी महिमा से मण्डित उनके निकट आया तो उन्होंने मुंह फेर लिया। वे वस्तुतः पतितो में ही हैं। यह वास्तव में वही तथ्य है जिसकी 'ईश्वर की चेतना' (ईसा मसीह) ने घोषणा की हैं। जब वह सत्य लेकर तुम्हारे पास आये, वह जिनके साथ यहूदी पण्डितों ने विवाद किया और अन्त में वह किया जिसने 'पवित्र चेतना' को रूलाया है और उनको अश्रुपात करने के लिए विवश किया है जो ईश्वर के अत्यधिक सन्निकट हैं।''

''सुनो: ओ मठवासी समुदाय! अपने गिरजाघरों और मठों में एकान्तवास मत करो। तुम मेरी आज्ञा से उनसे बाहर आओ और उसमें लगो जिससे तुमको और दूसरों को लाभ हो। यह आदेश तुम्हें वह देता है जो 'गणना दिवस' का प्रभु है। अपना एकान्तवास मेरे प्रेम के दुर्ग में बनाओ। यह वास्तव में वह एकान्त है जो तुम्हारे लिए उपयुक्त है, काश तुम यह जान पाते। वह तो वस्तुतः मृतक के समान है जो अपने घर में अपने आपको बन्द कर लेता है। यह मनुष्य के लिए उचित है कि वह उसको दर्शाए जिससे मानवजाति लाभान्वित हो। जो कोई फल न उपजाये, वह आग में जलाने के काबिल होता है। अतः तुम्हारा प्रभु तुमको चेतावनी देता है, वह वस्तुतः सामर्थ्यशाली, उदार है। तुम वैवाहिक बन्धन में आबद्ध हो, जिससे तुम्हारे पश्चात! एक अन्य तुम्हारे स्थान पर खड़ा हो। हमने तुम्हारे लिए व्याभिचार का वस्तुतः निषेध किया है, किन्तु उसका नहीं जो कर्त्तव्यपरायणता का संवाहक है। क्या तुम अपनी नैसर्गिक कामनाओं से लिपटे हो और ईश्वरीय अधिनियमों को पीठ पीछे फेंक दिया है? ईश्वर से डरो और मूर्खों जैसा आचरण मत करो। मनुष्य न होता तो मेरी धरती पर कौन मेरा स्मरण करता और मेरी प्रवृत्तियाँ, मेरे नाम कैसे व्यक्त हुए होते? विचार करो और उन जैसे मत बनो जो एक आवरण के द्वारा 'उससे' दूर हो गए हैं और जो गहरी नींद में सोये हैं। जिसने विवाह नहीं किया उसे (ईसा मसीह) कोई स्थान नहीं मिला जहाँ वह रह लेता, कोई जगह नहीं मिली जहाँ अपना सिर छिपाता। उनकी पावनता उन चीजों में नहीं थी जिनका तुमने विश्वास तथा कल्पना की है, बल्कि उनमें है जिनका हमसे सम्बन्ध है। याचना करो कि तुमको उस स्थान से अवगत कराया जाये जो सभी लौकिक जनों की व्यर्थ कल्पनाओं से ऊपर उदात्त है। धन्य हैं वे जो जानते हैं।''

"हे राजन! रूस के जार को तूने युद्ध (क्रीमिया युद्ध) के सम्बन्ध में लिए गए निर्णय के बारे में उत्तर देते हुए जिन शब्दों का उच्चार किया वे हमने सुने, तेरा प्रभु सचमुच जानता है और उसे सब कुछ ज्ञात है।" तूने कहा था "मैं अपने पलंग पर सोया पड़ा था कि तभी उन उत्पीड़ितों की चीख-पुकार ने मुझे जगा दिया जो काला सागर में डुबोये गये थे।" यह हमने तुझे कहते सुना और तेरा प्रभु वस्तुतः उसका साक्षी है जिसे मैं कह रहा हूँ। हम प्रमाणित करते है कि जिसने तुझे जगाया वह उनका हाहाकार नहीं, बल्कि तेरे अपने मनोविकारों के आवेग थे, क्योंकि हमने तुझे जाँचा और तुझे अभावग्रस्त पाया। मेरे शब्दों का अर्थ समझ और विवेकशील बन। इस नश्वर जीवन में हमने तुझे जो गरिमा प्रदान की है उसके प्रति सम्मान का भाव तोड़कर तुझे निन्दा के शब्द कहने की हमारी कोई इच्छा नहीं है। हमने वस्तुतः सौजन्य का ही वरण किया है और उसे उनका सच्चा लक्षण बनाया है जो 'उसके' निकट हैं। शील सचमुच वह परिधान है जो अबाल-वृद्ध सभी के अनुकूल है। इससे जो अपनी ललाट का श्रृंगार करता है उसका मंगल होगा और जो इस महती अनुकम्पा से वंचित है उसे धिक्कार है। तू यदि अपने शब्दों का धनी होता, तो तूने ईश्वरीय पुस्तक को तब अपने पीछे नहीं फेंका होता, जब उसे तेरे पास उसके द्वारा भेजा गया था जो सर्वशक्तिमान, सर्वप्रज्ञ है। उसी के द्वारा हमने तुझे परखा है और तूने जैसा ज्ञापित किया उससे तुझे भिन्न पाया। उठ और जो तुझसे छूट गया है उसके लिए सुधार कर। शीघ्र ही संसार और जिस पर तेरा अधिकार है, सब नष्ट हो जायेगा और साम्राज्य तेरे प्रभु के पास रह जायेगा। तुझे उचित है कि अपने काम-काज अपनी मनोकामनाओं के आवेगों के अनुसार मत कर। इस पीड़ित की आहों से डर और अन्यायकर्मियों की बरछियों से उसकी रक्षा कर।"

"तूने जो कुछ किया है उसके कारण तेरी बादशाहत उलझन में पड़ जायेगी और तूने जो अनर्थ किया है उसके दण्डस्वरूप तेरा साम्राज्य तेरे हाथों से निकल जायेगा। तब तू जानेगा कि तूने कैसी भूल की है। तू जब तक इस प्रभुधर्म की मदद के लिए आगे आकर उसका अनुसरण नहीं करता, तो जो इस ऋजु मार्ग में "ईश्वर की चेतना" (ईसा मसीह) हैं, उस देश की सारी प्रजा को व्यग्रता जकड़े रहेंगी। क्या तेरी तड़क-भड़क ने तुझे घमण्डी नहीं बना दिया है? मेरे जीवन की सौगन्ध! यह शान टिकी नहीं रहेगी, बल्कि तूने यदि इस मजबूत डोर को कस कर न पकड़ा तो यह जल्दी ही चली जायेगी। हम देख रहे हैं कि अधोगति तेरे पीछे दौड़ती आ रही है, जबकि तू प्रमाद में डूबा है। तेरे लिए उचित यही है कि जब तू महिमामण्डित आसन से पुकारती उसकी आवाज सुने तो वह सब जो तेरे पास है दूर फेंक कर यह बोल, "समर्पित खड़ा हूँ मैं, हे आसमान और धरती के सम्राट!"

"ओ राजन विदा की घड़ी जब आई तब हम इराक में थे। इस्लाम के सम्राट; "टर्की के सुल्तान" की आज्ञा पर हमने उसकी दिशा में अपने कदम बढ़ाए। वहाँ पहुँच कर हठधर्मियों के हाथों हम पर जो कुछ गुजरा उसका उपयुक्त वर्णन विश्व ग्रंथ में नहीं कर सकते। इस पर बैकुण्ठ के निवासियों तथा पावनता के साधनालयों में निवास करने वालों ने करूण रूदन किया और फिर भी लोग हैं कि मोटे परदे में लिपटे हैं।"

और आगे हमने कहा है: "हमारी दशा दिन-पर-दिन, बल्कि घड़ी-घड़ी अधिक दुःखद होती गई। अंततः हमें उन्होंने कारागार से निकाला और परम महान कारागार में डाल दिया" और अगर कोई पूछता: किस अपराध के लिए इन्हें कारावास दिया गया? तो उत्तर में वे कहते: "इन्होंने वस्तुतः: प्रचलित धर्म' के स्थान पर एक नया धर्म देने कोशिश की।" जो प्राचीन है वह यदि वही है जिसे तुम वरीयता देते हो तो फिर तोराहा और इवांजिल में जो कुछ लिखा है उसे तुमने किसलिए ठुकरा दिया है? इसे स्पष्ट करो, ऐ लोगों! मेरे जीवन की सौगंध! तुम्हारे भागने के लिए आज के दिन, कोई जगह नहीं है। अगर यही मेरा अपराध है तो ईश्वर के प्रेरित मुहम्मद ने मुझसे पहले इसे किया है और उनसे पहले उसने जो 'ईश्वर की चेतना' (ईसा मसीह) था और उनसे भी पहले उसने जिसने ईश्वर से वार्तालाप किया था (मूसा)। और अगर मेरा पाप यह है कि मैंने ईश-शब्द को उन्नत कर उसका धर्म उजागर किया है तो सचमुच मैं सबसे बड़ा पापी हूँ। धरती और स्वर्ग के राज्यों के लिए भी मैं ऐसे पाप का सौदा नहीं करूँगा।"

और आगे हमने कहा है: "जितनी मेरी प्रताड़नायें बढ़ीं उतना ही ईश्वर और उसके धर्म के प्रति मेरा प्रेम बढ़ा और वह भी इस प्रकार की हठधर्मियों के हाथों जो कुछ हम पर गुजरा वह सब मेरे उद्देश्य से मुझे विचलित करने में असमर्थ रहा। यदि वे मुझे धरती की परतों के नीचे दबा दें, तो भी वे मुझे शक्ति और सामर्थ्य के प्रभु परमेश्वर से गुहार करते ऊँचे बादलों पर सवार पायेंगे। अपने आप को मैंने ईश्वर की राह में अर्पित कर दिया है और उसके प्रति अपने प्रेमवश तथा उसकी सद्कृपा के निमित्त, मैं विपत्तियों की ही लालसा करता हूँ। इसके साक्षी हैं वे दुःख जिनसे मैं पीड़ित हूँ और मेरे जैसे दुःख किसी दूसरे व्यक्ति ने नहीं झेले हैं। मेरे सिर का एक-एक बाल वही उच्चार रहा है जिसे सिनाई पर 'प्रज्वलित झाड़ी' ने उचारा था और मेरे शरीर की एक-एक नस ईश्वर का आह्वान कर कहती है: काश! मेरे मार्ग में मुझे खींच लिया जाता, ताकि विश्व अनुप्राणित हो पाता और उसके सभी जनसमुदाय एक हो जाते! यह निर्णय उसके द्वारा दिया गया है जो सर्वज्ञ, सर्वविज्ञ है।

"एक सत्य जान लो कि तुम्हारी प्रजा तुम्हारे बीच ईश्वर की अमानत है। अतः, उसकी देख-रेख उसी प्रकार करो जैसे तुम अपनी देखरेख करते हो। सतर्क रहो कि तुम भेड़ियों को भेड़ों का पालक न बना दो, या अंहकार और दम्भ तुम्हें निर्धन तथा अर्किंचनों की ओर मुड़ने से रोक न लें। तू मेरे नाम पर आत्मत्याग के क्षितिज पर उठो और फिर शक्ति तथा सामर्थ्य के स्वामी अपने प्रभु की आज्ञा से अपना मुख दिव्य साम्राज्य की ओर स्थिर कर दो।"

इसके बाद हमने कहा है: "अपने राज्य रूपी शरीर को मेरे नाम के परिधान से सजाओ और फिर मेरे धर्म के शिक्षण के लिए उठ खड़े हो। तेरे पास जो कुछ है उससे यह तेरे लिए अधिक उत्तम है। इसके द्वारा ईश्वर सभी शासकों के बीच तेरा नाम उज्ज्वल करेगा। वह सभी कुछ करने में समर्थ है। ईश्वर के नाम पर उसकी सामर्थ्य-शक्ति से तू मानवों के बीच विचरण कर, ताकि धरावासियों के बीच तू उसे उसका चिह्न दिखला सके।"

और इसके आगे हमने कहा है: "क्या यह उचित है कि जो करूणामय परमेश्वर है उससे तुम अपने नाते जोड़ो और फिर ऐसे काम करो जिन्हें शैतान ने किया है? नहीं, उसके सौन्दर्य की सौगन्ध! जो सर्वमहिमामण्डित है! काश तुम लोग यह जान पाते। अपने हृदयों को लौकिक प्रेम से, अपनी जिह्वाओं को निन्दा से और अपने अंगों को उससे बचाओ जो तुम्हें उस सामर्थ्यशाली, सर्वस्तुत्य परमेश्वर के निकट जाने से रोक सकता है। सुनो: संसार से तात्पर्य है वह जो तुम्हें उससे अलग करता है, जो धर्म प्रकटीकरण का उदयस्थल है और तुम्हें उस ओर प्रवृत्त करता है जो तुम्हारे लिये अलाभकर है। आज के दिन वस्तुतः जो वस्तु ईश्वर से तुमको दूर रख रही है वह सार रूप में दुनियादारी ही है। इसका निवारण करो और परम उदात्त अलौकिक झाँकी, 'इस द्युतिमान एवं देदीप्यमान आसन के निकट आओ। किसी का खून मत बहाओ, ऐ लोगों और अन्यायपूर्वक किसी की परख मत करो। यह आदेश तुम लोगों को उसके द्वारा दिया गया है जो जानता है, जिसको सब ज्ञात है। इस भूमि पर सुव्यवस्था होने के बाद जो लोग अव्यवस्थाएँ उत्पन्न कर रहे हैं, उन्होंने वस्तुतः 'पुस्तक' में निधार्रित की गई सीमाओं का उल्लंघन किया है। हतभागी होगा सीमोल्लंघनकारियों का आवास।

और इसके आगे हमने कहा है: "अपने पड़ोसी की सम्पत्ति के साथ धोखाधड़ी मत करो। तुम विश्वासपात्र बनो और ईश्वर की कृपा से प्राप्त वस्तुओं को निर्धनों को देने से इन्कार मत करो। जितना तुम्हारे पास है उसका दो गुना वह तुम्हें प्रदान कर देगा। वह यथार्थतः सर्वानुग्रही, परम उदार है। ओ बहा के लोगों! मानव हृदयों के दुर्ग, वाणी तथा विवेक की तलवारों से अपने अधीन करो। अपनी कामनाओं से उकसाये जाकर जो विवाद करते हैं

वे वस्तुतः परदे में लिपटे हैं। सुनो: विवेक की तलवार ग्रीष्मकालीन ताप से अधिक तप्त और इस्पात की धारों से ज्यादा तेज होती है, अगर तुम इसे समझ सको तो समझो। मेरी सामर्थ्यशक्ति से और मेरे नाम पर उसे बाहर खींच लो और फिर जो अपनी विकृत कामनाओं के गढ़ में अलग-अलग पड़े हैं उनके हृदय-नगरों पर विजय प्राप्त करो। हठधर्मियों की तलवारों के नीचे आसीन सर्वमहिम की लेखनी तुमको यही आज्ञा देती है। तुम्हें यदि किसी के पाप की जानकारी हो जाये तो उसे छिपाओं ताकि ईश्वर तुम्हारे पाप छिपाये। वह वस्तुतः गोपनकर्ता, असीम कृपा का स्वामी है। ओ धरती के धनिकों! तुम्हारा सामना अगर ऐसे व्यक्ति से हो जो गरीब है तो उसका तिरस्कार मत करो। जरा उस पर विचार करो जिससे तुम्हारी रचना हुई है। तुममें से प्रत्येक एक निकृष्ट कीट से बना है।''

और आगे हमने कहा है: ''विश्व को तुम एक मानव शरीर जैसा मानों, जो विभिन्न व्याधियों से पीड़ित है और जिसका आरोग्य उसके सभी घटक तत्वों के समन्वय पर निर्भर है। उसके चतुर्दिक एकत्र हो जाओ जिसका निदान हमने तुम्हे दिया है और जो फूट उत्पन्न करते है उनके मार्गों पर मत चलो। जगत और उसके जनसाधारण की दशा का चिन्तन करो। जिसके निमित्त इहलोक को अस्तित्व दिया गया, उसे नगरों में सर्वाधिक निरानन्द नगर (अक्का) में बन्दी बना कर रखा गया है, जो हठधर्मियों के हाथों घटित हुआ है अपने कारानगर के क्षितिज से वह उस उदात्त, महान परमेश्वर का आह्वान कर रहा है। अपने खजानों पर तुम फूले नहीं समा रहे हो, यह जानते हुए भी कि वे नष्ट हो जायेंगे। धरती के एक भाग पर ही शासन करके तू आनन्दमग्न हो रहा है, जबकि बहाजनों की दृष्टि में सारा संसार एक निष्प्राण चींटी की आँख की पुतली के समान है। इसे ऐसों के लिए छोड़ दे जिनका उस पर अनुराग हो और तू उसकी ओर मुड़ जो विश्व का इष्ट है। कहाँ चले गये वे गर्वीले और उनके महल-दुमहले? उनकी कब्रों में झाँक कर देख ताकि इस मिसाल से शायद तेरा हित हो जाये, क्योकि इसे हमने हर नेत्रधारी के लिए एक सीख बनाई है। धर्म प्रकटीकरण के समीर अगर तुझे बाँध पाते, तो तू संसार से भाग खड़ा होता और दिव्य साम्राज्य की ओर उन्मुख हो जाता और अपना सर्वस्व लुटा देता, जिससे तू इस लोकोत्तर 'झाँकी' के निकट पहुँच सके।''

एक ईसाई से हमने इस पाती को भेजने के लिए कहा और उसने सूचना दी है कि उसने मूल पाती और उसका अनुवाद दोनों प्रेषित किये। सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ ईश्वर को सभी चीजों का ज्ञान है।

सूरातुल-ए-हैकल का एक अनुभाग महामहिम रूस के जार को सम्बोधित पाती इस प्रकार है - ईश्वर उदात्त और महिमामण्डित हो वह उनकी सहायता करे:

"ओ रूस के जार! अपना कान तू राजाधिराज, पावन ईश्वर की आवाज पर लगा और बैकुण्ठ अर्थात उस स्थल की ओर उन्मुख हो जिसमें उसका निवास है, जो ऊर्ध्वस्थ देवमण्डली के बीच परमोत्कृष्ट उपाधियाँ धारण करता है और सृष्टि जगत में जिसे दैदीप्यमान, सर्वमहिम ईश्वर के नाम से पुकारा जाता है। सतर्क रह कि उस करूणामय, परम दयालु अपने प्रभु की ओर अभिमुख होने से कुछ भी तुझे रोक न लें। हमने यथार्थतः वह बात सुनी है जिसके लिए तूने अपने प्रभु से उसके साथ एकान्त में सम्भाषण करते समय अनुनय-विनय की थी। इसलिए मेरे प्रेमल सौजन्य का समीर बह चला और मेरी दया का सागर उमड़ पड़ा और सत्यतः हमने तुझे उत्तर दिया। तेरा प्रभु वस्तुतः सर्वज्ञ, सर्वप्रज्ञ है। जब मैं जंजीरों और बेड़ियों में आबद्ध तेहरान के कारागार में पड़ा था, तेरे एक मंत्री ने मुझे अपनी सहायता प्रदान की। इसके कारण ईश्वर ने उसके लिए एक स्थान निर्धारित किया है जो उसके ज्ञान के अतिरिक्त किसी के ज्ञान में नहीं आ सकता। सावधान, ऐसा न हो कि तू इस लोकोत्तर स्थान का विनिमय कर उसे खो दे।"

और इसके आगे हमने कहा है: "वह जो पिता है, आ गया है और पुत्र (ईसामसीह) पवित्र घाटी में यह शब्द गुंजा रहा है: 'यहाँ हूँ मैं, यहाँ हूँ मैं, ओ प्रभु, मेरे परमेश्वर!' जबकि सिनाई 'गृह' की परिक्रमा कर रहा है और 'प्रज्वलित झाड़ी' महारव से पुकार रही है: 'सर्वानुग्रही बादलों' पर आरूढ़ होकर आ गया है, धन्य है वह जो उसके निकट आता है और धिक्कार है उनको जो दूर-दूर हैं।"

"मनुष्यों के बीच तू इस सर्वबाध्यकारी धर्म के नाम पर उठ और फिर सामर्थ्यशाली, महान परमेश्वर के प्रति राष्ट्रों का आह्वान कर। उसके जैसा तू मत बन जिन्होंने ईश्वर का उसके एक ही नाम से आह्वान किया है, बल्कि जिन्होंने - जब वह सामने आया तो जो सभी नामों का लक्ष्य है - उसको ठुकरा दिया और उससे मुँह फेर लिया और अन्त में प्रत्यक्षतः अन्याय करते हुए उसके लिए दण्ड की घोषणा की। उन दिनों का तू स्मरण तथा विचार कर, जब 'ईश्वर की चेतना' (ईसा मसीह) प्रकट हुए और हेरोद ने उनके विरूद्ध निर्णय दिया। तथापि अदृश्य के सैन्यदलों के ईश्वर ने उनको मदद दी, उनकी रक्षा की और अपने वचनानुसार उनको दूर भूखण्ड पर भेज दिया। वह यथार्थतः वही निर्दिष्ट करता है जो उसकी इच्छा होती है। तेरा प्रभु सचमुच जिसे चाहता है उसे निर्भय कर देता है, फिर चाहे वह समुद्रों के बीच में हो या सांप के जबड़े में, या आततायी की तलवार के नीचे।"

और इसके आगे हमने कहा है: ''पुनः मैं कहता हूँ: मेरे कारागार से पुकारती मेरी आवाज पर ध्यान दे ताकि तुझे उन चीजों की जानकारी हो सके जिनसे उनके ही हाथों मेरे सौन्दर्य पर वज्रपात हुआ है जो मेरी भव्यता के प्रकट स्वरूप हैं और तू यह देख सके कि मेरी सामर्थ्य के बावजूद कितना विशाल रहा है मेरा धैर्य और मेरी शक्ति के बावजूद कितनी प्रभावी रही है मेरी सहिष्णुता। मेरे जीवन की सौगन्ध! तू अगर मेरी लेखनी द्वारा उतारी गई चीजों को जान ले और मेरे धर्म की निधियों तथा मेरे रहस्यों के मुक्ताकण ढूंढ़ ले जो मेरे नामों के सागरो में और मेरे शब्दों के मदिरापात्रों में छिपे पड़े हैं, तो तू उसके भव्य तथा उदात्त साम्राज्य के लिए लालायित होकर ईश्वर की राह में अपना जीवन अर्पित कर देगा। तू जान ले कि मेरा शरीर भले ही मेरे बैरियों की तलवारों के तले हो और मेरे अंग अकल्पनीय वेदनाओं से घिरे हों, किन्तु मेरी चेतना ऐसे आह्लाद से आप्लावित है जिसकी तुलना में धरती की सारी खुशियाँ कदापि नहीं ठहर सकतीं।''

इसी प्रकार अब हम महामहिम राजमहिषी (महारानी विक्टोरिया) की पाती के कुछ छन्दों का उल्लेख करते हैं - ईश्वर, उदात्त एवं महिमामण्डित हो वह, उसकी सहायता करें। हमारा उद्देश्य यह है कि भाग्यवश धर्मप्रवर्तन के समीर तुझे परिवेष्टित कर लें और पूर्णतया ईश्वर के निमित्त तुझे उठा दे तथा उसके धर्म हेतु सेवारत कर दें और सम्राटों की पातियों में कोई यदि अवतरित पड़ी हो तो उसे तू संप्रेषित कर सके। यह ध्येय महान ध्येय है और यह सेवा महान सेवा हैं। उन क्षेत्रों में बहुतेरे विशिष्ट धर्माचार्य हैं, जिनके बीच वे सैयद हैं जो अपनी श्रेष्ठता तथा वैशिष्ट्य के लिए प्रख्यात हैं। ''प्रभामण्डल'' की लेखनी से जो प्रवाहित हुआ है उसे उनको प्रदान करो और उनको दिखलाओ ताकि भाग्यवश उनको कृपापूर्वक सहायता मिल जाये और वे जगत की दशा सुधार सकें, विभिन्न राष्ट्रवासियों का चरित्र उन्नत कर सकें और ईश्वरीय सद्परामर्शों की सप्राण जलधाराओं से मानव हृदयों में चुपचाप सुलग रहे द्वेष तथा वैर का शमन कर सकें। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि इस कार्य में तेरी सहायता की जाये और यह वस्तुतः उसके लिए मुश्किल नहीं होगा।

''ओ लंदन स्थित साम्राज्ञी! समस्त मानवजाति के स्वामी, अपने प्रभु की आवाज की ओर अपने कान लगाओ: मुझ सर्वशक्तिमान, सर्वप्रज्ञ के अतिरिक्त वस्तुतः कोई ईश्वर नहीं है। पृथ्वी पर जो कुछ है सबका परित्याग कर अपनी बादशाहत का मस्तक अपने प्रभु के स्मरण रूपी मुकुट से सुसज्जित कर। वह यथार्थतः अपनी परम महती भव्यता से मण्डित जगत में आया है और गॉस्पल में जिसका उल्लेख है वह सब पूर्ण हो गया है सीरिया की धरती प्रभु के पदचिह्नों से सम्मानित हुई है और उत्तर तथा दक्षिण दोनों उसकी विद्यमानता की मदिरा से उन्मत्त है। धन्य है वह नर जो इस देदीप्यमान 'प्रभात बेला' में उसके सौन्दर्य के उदय स्थल की ओर उन्मुख हुआ है। अक्सा मस्जिद अपने प्रभु के समीरों

से पुलकित है, जब कि बाथा (मक्का) उदात्त, परमोच्च प्रभु के भय से सिहर रहा है। उनका एक-एक पत्थर इस महान नाम के जरिये प्रभु की स्तुति मना रहा है।''

और आगे हमने कहा ''ईश्वर के निमित्त हम तेरा उल्लेख करते हैं और चाहते हैं कि धरा एवं गगन के रचयिता परमेश्वर के तेरे स्मरण के जरिये तेरा नाम ऊँचा हो। मैं जो कह रहा हूँ उसका वह वस्तुतः साक्षी है। हमें बताया गया है कि तूने स्त्री और पुरूष दासों का व्यापार निषिद्ध कर दिया है। इस अद्‌भुत धर्मप्रर्वतन में ईश्वर ने वस्तुतः इसी की आज्ञा दी है इसके फलस्वरूप ईश्वर ने तेरे लिए सचमुच एक पुरस्कार नियत किया है। तू यदि उसका अनुशीलन करे जो उसके द्वारा जो सर्वज्ञ, सर्वज्ञाता है तेरे पास भेजा गया है, तो वह वस्तुतः प्रत्येक सदकर्मी को, वह स्त्री हो या पुरूष, उसका उचित प्रतिफल प्रदान करेगा और जो मुँह फेर लेगा और गर्व से फूलेगा जबकि उसके पास चिह्नों के प्रकाशक से सुस्पष्ट प्रतीक आ चुके हैं। यथार्थतः सभी वस्तुओं पर उसका वर्चस्व है। अवतार की पहचान के बाद ही मानवकृत कार्य स्वीकार्य होते हैं। उस एक सच्चाई से विमुख हुआ व्यक्ति वास्तव में उसके प्राणियों में सर्वाधिक अवगुंठित है। यह निर्णय उसने दिया है जो सर्वशक्तिमान सर्वसमर्थ है।''

''हमने यह भी सुना है कि तूने जन प्रतिनिधियों के हाथों में मंत्रणा की बागडोर सौंप दी है। तूने वस्तुतः बहुत अच्छा किया है, क्योंकि इस प्रकार तेरे क्रियाकलापों के भवन की बुनियादें सबल होंगी और तेरे साये तले उच्च या निम्न सभी जनों के हृदयों को शान्ति मिलेगी। किन्तु उनके लिए यह उपयुक्त है कि वे 'उसके' सेवकों के बीच विश्वासपात्र बनें और स्वयं को सभी धरावासियों का प्रतिनिधि मानें।'' इस पाती में यही परामर्श उनको वह देता है जो शासक, सर्वप्रज्ञ है और अगर उनमें कोई 'सभा' की ओर कदम बढ़ाये, तो वह अपने नेत्र 'सर्वोपरि क्षितिज' की ओर फेर कर कहे, ''हे मेरे परमेश्वर! तेरे परम महिमामय नाम के अनुसार मैं तुझसे याचना करता हूँ कि जिससे तेरे सेवकों के क्रियाकलाप फूलें-फलें और तेरे नगर लहलहाएँ, ऐसी सहायता मुझे दे। सभी चीजों पर वस्तुतः तेरी सत्ता है।'' धन्य है वह जो ''सभा में ईश्वर के निमित्त प्रविष्ट होता है और विशुद्ध न्याय के साथ जन-जन के बीच निर्णय देता है। वस्तुतः वह धन्यभागी जनों में है।''

''ओ उस देश तथा अन्य देशों की सभाओं के सदस्यों! तुम सब मिलकर परामर्श करो और तुम्हारी प्रतिबद्धता मात्र उसके लिये हो जिससे मानवमात्र का कल्याण और उनकी दशा में सुधार हो, अगर तुम उनमें हो जो बारीकी से अवलोकन करते हैं। जगत को मानव शरीर की भाँति मानो। इसकी रचना यद्यपि समग्र एवं परिपूर्ण है, किन्तु विभिन्न कारणों

से वह गम्भीर अवस्थाओं तथा व्याधियों से पीड़ित हो चुका है। एक दिन के लिए भी उसे चैन की सांस नहीं मिली है, बल्कि अज्ञानी हकीमों के उपचार में पड़ कर उसकी रूग्ण दशा और अधिक कठिन हो गई है। उन्होंने अपनी वैयक्तिक अभिलाषाओं की लगाम पूरी तरह ढीली छोड़कर बड़ी घोर भूल की है। और अगर कभी किसी योग्य चिकित्सक की देख रेख से उस शरीर का एक अंग स्वस्थ भी हुआ तो शेष पूर्ववत व्याधिग्रस्त ही रहे। यह तुमको सर्वज्ञ, सर्वप्रज्ञ बता रहा है। आज हम उसे उन गर्वोन्मत्त शासकों की दया पर निर्भर देख रहे हैं जो साफ-साफ अपना ही सर्वोत्तम लाभ नहीं दे सकते, तो इस जैसे विस्मयकारी तथा चुनौती भरे धर्मप्रवर्तन को तो वे पहचानेंगे ही क्या!''

और इसके बाद हमने कहा है: ''वह एकमात्र उपचार और सबलतम साधन जिसे जगत की आरोग्यता के लिए परमेश्वर ने निर्दिष्ट किया है एक सार्वभौम, सर्वसामान्य धर्म में उसके सभी जनसमुदायों की संमबद्धता है। एक निपुण, एक सर्वसमर्थ एक प्रेरणासम्पन्न 'रोगहर्ता' की शक्ति के माध्यम के सिवाय और किसी तरह से इसे उपलब्ध नहीं किया जा सकता। मेरे जीवन की सौगंध। यही सत्य है और शेष सब भ्रम के सिवा कुछ नहीं है। वह 'परम समर्थ उपकरण' हर बार आया है और 'प्राचीन दिवास्रोत' से 'प्रकाश' चमका है। अनभिज्ञ हकीमों ने उसे अवरूद्ध कर दिया जो बादलों के समान उसके तथा जगत के बीच में आए। इसलिए वह रोग निवारण में विफल रहा और रूग्णता आज तक अपनी जगह पर अड़ी है। वे उसकी रक्षा कर पाने या कारगर इलाज दे पाने में असमर्थ रहे और उसको जो मनुष्यों के बीच साक्षात महाशक्ति था अनभिज्ञ हकीमों की करतूतों के कारण अपने प्रयोजन की उपलब्धि से बाधित कर दिया गया।''

''इन दिनों का विचार करो जिनमें वह जो 'पुरातन सौन्दर्य' है 'परम महान नाम' में आया है, ताकि वह जगत को अनुप्राणित तथा उसके जनसमूहों को एकीकृत करे। किन्तु धारदार तलवारें लेकर वे उसके विरोध में खड़े हो गए और वह कर डाला जिसके कारण 'निष्ठावान चेतना' ने विलाप किया। यहाँ तक कि अन्त में उन्होंने सबसे ज्यादा सुनसान नगर में उसको बन्दी बना दिया और उसके वस्त्र का छोर थामें निष्ठावानों की पकड़ ही छुड़ा दी। अगर कोई उनको बताये कि 'विश्व सुधारक आ गया है' तो वे जवाब देंगे और कहेंगे दरअसल यह साबित हो गया है कि वह विद्रोह है। तथ्य के बावजूद कहते हैं, कि वे कभी उसके सम्पर्क में नहीं रहे है और यह देखा ही नहीं है कि अपनी रक्षा के लिए उसने एक पल की चेष्टा नहीं की है। सारे समय वह अनीति के ही कर्ताधर्ताओं की दया पर रहा। एक बार उन्होंने उसे कारागार में डाला, दूसरी बार देशनिकाला दिया और फिर बारम्बार

एक से दूसरे स्थान पर भेजा। हमारे विरूद्ध उन्होंने इस प्रकार के निर्णय दिये हैं और मैं जो कह रहा हूँ ईश्वर सचमुच उसे मानता है।''

विद्रोह भड़काने का यह आरोप वैसा ही है जैसे मिस्र के फेरो ने उस पर मढ़ा था जिसने ईश्वर से वार्तालाप किया था (मूसा)। सर्वदयामय ने कुरान में जो व्यक्त किया है तुम उसे पढ़ो। वह कहता है: ''इसके अतिरिक्त विगत में हमने मूसा को अपने चिह्नों के साथ भेजा था। और उनके विरोधियों ने कहा: जादूगर धोखेबाज!'' और जब वह सत्य को लेकर उनके पास गया, तो उन्होंने कहा कि उसकी जैसी जिनकी आस्था है उनके बेटों को कत्ल कर दो और उनकी स्त्रियों को जीवित छोड़ दो, लेकिन उन अनास्थावालों के दाव-पेचों का परिणाम केवल असफलता रहा। और फेरो ने कहा: ''मुझे बस इसमें बाधा मत दो कि मैं मूसा को मार डालूँ। उसको अपने प्रभु को पुकारने में हस्तक्षेप करो, क्योंकि मुझे डर है कि वह कहीं तुम्हारा धर्म न बदल दे और देश में अव्यवस्था न उत्पन्न कर दे।'' और मूसा ने कहा: ''हर दम्भी से छिटक कर मैं अपने प्रभु और तुम्हारे प्रभु की शरण लेता हूँ।''

प्रत्येक 'विश्व सुधारक' को मानव ने सर्वदा फूट भड़काने वाला माना है और उसके लिए जिस शब्दावली का प्रयोग किया है उससे सभी परिचित हैं। दैवी धर्मप्रवर्तन के 'दिवाकर' ने जब-जब ईश्वरेच्छा के क्षितिज से अपनी दीप्ति बिखेरी, तो बहुतेरों ने उसे ठुकरा दिया, दूसरों ने 'उस' से मुँह फेर लिया और कुछ औरों ने उसकी निन्दा की और इस प्रकार ईश-सेवकों को उसके प्रेम भरे विधान की सरिता से दूर रखा है जो सृष्टि का सम्राट है। इसी भाँति आज के दिन जो इस पीड़ित से न मिले हैं, न उससे जुड़े हैं, उन्होंने वे बातें कही हैं और आज भी कह रहे हैं जिनको तूने सुना है और सुन ही रहा है सुनो ''ऐ लोगों! आज के दिन वाणी का सूर्य अनुग्रह के क्षितिज पर दमक रहा है और जो सिनाई पर बोला था उसके धर्मप्रवर्तन की कांति सभी धर्मों के सम्मुख विद्युतगति से झिलझिला रही है। सर्वदयामय की वाणी की चेतन जलधाराओं से अपने हृदय, अपने कान और अपने नेत्र साफ कर, निर्मल कर डालो और तब अपने मुख उसकी ओर घुमा दो। परमेश्वर की साधुता की सौगन्ध! सभी वस्तुओं से तुम यही उद्घोष होता सुनोगे: यथार्थ ही वह 'सत्य' आ गया है। धन्य हैं वे जो निष्पक्षतापूर्वक निर्णय करते हैं और धन्य हैं वे जो उसकी ओर उन्मुख होते हैं।''

दिव्य पद्म वृक्ष (मूसा) पर जो बातें थोपी गई हैं वे ऐसे आरोप हैं जिनकी असत्यता प्रत्येक विवेकशील ज्ञानसम्पन्न और बोधसम्पन्न हृदय समझ लेगा। उसके सम्बन्ध में जिसने ईश्वर से वार्तालाप किया, अवतरित किए गए पवित्र छन्दों का निस्संदेह तूने पाठ और विचार

किया होगा। वह - मंगलमय और महिमामंड़ित हो वह - कहता है: ''उसने कहा, क्या हमने अपने बीच तेरा लालन-पालन नहीं किया जब तू बच्चा था? और तूने हमारे बीच अपने-अपने जीवन के दिन नहीं बिताए हैं? और इस पर भी यह कैसा कृत्य तूने किया है। तू कृतध्नों में एक है।'' उसने कहा: ''मैंने यह वास्तव में किया और मैं गलती करने वालों में एक था। और मैं तुमसे दूर भाग गया क्योंकि मैं तुमसे डरता था। लेकिन मेरे प्रभु ने मुझे विवेक दिया है और मुझे अपना 'प्रेरित' बना लिया है।'' और अन्यत्र वह कहता है: ''और उसने एक नगर में उस समय प्रवेश किया जब उसके निवासियों ने उसे देख नहीं लिया और उसने दो आदमियों को लड़ते देखा, जिनमें एक उसके अपने समुदाय का था और दूसरा शत्रु समुदाय का। जो उसकी जाति का था उसने उसके विरूद्ध जो शत्रु पक्ष का था उसकी सहायता मांगी और मूसा ने घूंसो से उस पर प्रहार किया और उसका वध कर दिया।'' कहा उसने: ''यह काम शैतान का है। क्योंकि वह एक शत्रु, साक्षात पथ-भ्रष्टकारी है।'' उसने कहा: ''हे मेरे प्रभु! मैंने पाप किया है और अपने को ही आहत किया है, मुझे क्षमा कर।'' अतः ईश्वर ने उसे क्षमा कर दिया, क्योंकि वह क्षमाशील, करूणामय है। उसने कहा: ''प्रभु! तूने यह कृपा मुझ पर की है, अतः मैं फिर कभी दुष्ट जनों की सहायता नहीं करूंगा'' और उस नगर में दोपहरी में वह भय से भरा, नज़रे छिपाकर ताक रहा था और देखो कि, गत दिवस उसने जिस आदमी की मदद की थी, वही फिर उससे सहायता के लिए चिल्लाया। मूसा ने उससे कहा: ''तुम साफ़तौर पर बहुत बिगड़े हुए व्यक्ति हो।'' और जब मूसा उस पर जो उन दोनों का सामान्य शत्रु था बलप्रयोग करते कि उसने उनसे कहा: ''ओ मूसा! क्या तुम मुझे कत्ल करना चाहते हो, क्योंकि कल तुमने एक आदमी को कत्ल किया? इस जमीन पर तुम बस एक उत्पीड़क बनना चाहते हो और शान्ति निर्माता नहीं बनना चाहते?'' यह बहुत आवश्यक है कि तू अपने कान और अपने नेत्र अब निर्मल कर ले, ताकि तू निष्पक्षता और न्याय के साथ निर्णय कर सके। स्वयं मूसा ने भी अपनी हठधर्मिता और अन्याय स्वीकार किया और प्रमाणित किया कि उनको भय ने जकड़ लिया था और उन्होंने सीमोल्लंघन किया था और पलायन किया। उन्होंने परमात्मा से क्षमायाचना की और उनको क्षमादान मिला।

ओ शेख! हर बार उसे सच्चे ईश्वर ने - उदात्त हो उसकी महिमा - अपने आप को अपने अवतार के विग्रह में प्रकट किया है। ''वह जो चाहता है करता है और जैसा चाहता है निर्धारित करता है'' के मानदण्ड के साथ मनुष्यों के पास आया। किसी को क्यों या किस लिए पूछने का अधिकार नहीं है और जिसने ऐसा किया है, उसने वस्तुतः प्रभु परमेश्वर से मुँह फेर लिया है। प्रत्येक अवतार के दिनों में ये चीजें सामने आती हैं और सुस्पष्ट हैं।

इसी प्रकार, इस पीड़ित के बारे में भी ऐसी बातें कहीं गई हैं जिनकी असत्यता के साक्षी वे लोग रहे हैं और आज भी हैं जो ईश्वर के निकट और उसके प्रति समर्पित हैं। ईश्वर की साधुता की सौगन्ध! वर्तमान में यद्यपि बहुतेरों का उद्देश्य अपनी झूठ और अशोभनीय निन्दा से इसे मैला कर देने का रहा है किन्तु उसके वस्त्र का यह आंचल सदा अमलिन रहा और रहता है। तथापि ईश्वर जानता है और वे नहीं जानते। ईश्वर की शक्ति तथा सामर्थ्य से जो धरती के सभी बांधवों के सम्मुख उठ खड़ा हुआ है और परमोच्च क्षितिज की ओर जिसने जनसमूहों का आह्वान किया है उसे उन्होंने ठुकरा दिया है और उसके बजाय ऐसे लोगों से जा मिले हैं, जो निरन्तर नकाबों और परदों के पीछे छिपे रहे हैं और अपनी ही सुरक्षा में लिप्त रहें है। इसके अतिरिक्त, अनेक व्यक्ति झूठ और मिथ्यापवाद फैला रहे हैं और लोगों की आत्माओं तथा हृदयों में विश्वास पैठाने के सिवा उनका कोई दूसरा इरादा नहीं है। जैसे ही कोई 'महान नगर' (कॉन्स्टैन्टीनोपल) से इस धरा के दर्शनार्थ प्रस्थान करता है, वे अविलम्ब ढ़िंढ़ोरा पीटते हैं कि वह धन चुरा कर अक्का भाग गया है। एक अत्यन्त सुसंस्कृत, विद्वान तथा विशिष्ट व्यक्ति ने अपनी ढ़लती उम्र में शान्ति और एकान्त की तलाश में पवित्र भूमि की यात्रा की और उसके बारे में ऐसी बातें उन्होंने लिखी हैं जिसके कारण जो ईश्वर के प्रति निष्ठावान एवं उसके निकट हैं उनके मुँह से आह निकल पड़ी है।

महामहिम मुशीरूद्दौला स्वर्गीय मिर्जा हुसैन खां - ईश्वर उन्हें क्षमा करे - इस 'पीड़ित' से परिचित हुए हैं और इसमें संदेह नहीं कि उन्होंने अधिकारियों को 'सब्लाइम पोर्ट' पर इस 'पीड़ित' के आगमन का और उसकी कथनी करनी का विवरण अवश्य दिया होगा। हमारे आने के ही दिन शासनाधिकारी, जिसका काम सरकारी आगन्तुकों का स्वागत-सत्कार करना था, हमसे मिला और हमें उस स्थान पर ले गया जहाँ ले जाने को उससे कहा गया था। दूसरे दिन मंत्रीवर स्वर्गीय मुशीरूद्दौला के प्रतिनिधि के रूप में प्रिंस शुजाउद्दौला हमसे मिलने आये। इसी प्रकार अन्य लोगों ने जिनमें स्वर्गीय कमाल पाशा सहित शाही सरकार के कई मंत्री थे आकर हमसे भेंट की। पूर्णतया ईश्वर के भरोसे और अपनी किसी सम्भावित आवश्यकता या किसी अन्य विषय का जिक्र किए बगैर इस 'पीड़ित' ने उस नगर में चार महीने तक प्रवास किया। उसके कार्य सभी को ज्ञात थे और उनके अतिरिक्त जो उससे द्वेष रखते थे और सत्य नहीं बोलते थे, कोई उन्हें नकार नहीं सकता था। ईश्वर को जिसने पहचान लिया है वह उसे छोड़ कर किसी दूसरे को मान्यता नहीं देता। हमें ऐसी बातों की चर्चा कभी न भायी है न भाती है।

फारस के उच्चाधिकारी जब-जब उस नगर (कॉन्स्टैन्टीनोपल) में आये, उन्होंने प्रत्येक द्वार पर, जैसी भी भेंटें और भत्ते वे पा सकते थे, पाने की भरपूर कोशिश की। किन्तु इस

'पीड़ित' ने ऐसा कुछ नहीं किया है जिससे फारस का गौरव अवनत हो। मान्यवर (मुशीरूद्दौला) ने जो कुछ किया ईश्वर उनका स्थान ऊँचा उठाये - वह इस 'पीड़ित' के प्रति उनके मैत्री भाव से नहीं, बल्कि उनके निर्णय और उनकी आकांक्षा से प्रेरित था जिसे अपनी सरकार को अर्पित करने का उन्होंने गुप्त विचार किया था। मैं प्रमाणित करता हूँ कि अपनी सरकार की सेवा में वह इतने निष्ठावान थे कि बेईमानी की कोई भूमिका थी ही नहीं, किन्तु वह अवमानना के शिकार हुए। इस 'पीड़ित' को महान कारागार में लाने के लिए वही उत्तरदयी थे। परन्तु अपने कर्त्तव्य निर्वहन में वफादार होने के कारण वह हमारे प्रशंसा के पात्र हैं। इस 'पीड़ित' का लक्ष्य एवं प्रयास अपने स्थान का उन्नयन नहीं, बल्कि सर्वदा शासन तथा प्रजा दोनों के हितों की प्रगति रहा है। अब कुछ व्यक्तियों ने उनके आसपास दूसरों को एकत्र किया है और वे इस 'पीड़ित' को अपमानित करने के लिए उठ खड़े हुए हैं। तथापि वह ईश्वर से विनती करता है - पुनीत एवं महिमामण्डित हो वह - कि वह उनको अपने निकट लौटने का सम्बल प्रदान करे और जो कुछ उनसे किया गया है उसकी प्रतिपूर्ति और अपनी अनुकम्पा के द्वार पर पश्चाताप करने में उनकी सहायता करे। वह वस्तुतः क्षमाशील, दयालु है।

ओ शेख! मेरी लेखनी अपने आप ही अस्तित्व पर विलाप करती है और मेरी पाती उस पर फूट-फूट कर रोती है जो मुझ पर उस व्यक्ति (मिर्जा याह्या) के हाथों गुजरा है जिसकी हमने निरन्तर वर्षों देखरेख की और जिसने रात-दिन मेरे सान्निध्य में रहकर सेवा की, किन्तु अन्त में सैयद मुहम्मद नामक मेरे एक सेवक द्वारा उससे भूल कराई गई। बगदाद से इस परम महान कारागार तक मेरे निर्वासन में मेरे साथ रहे मेरे विश्वसनीय सेवक इसके साक्षी हैं। उन दोनों के हाथों मुझ पर ऐसी विपत्तियाँ आ पड़ीं, कि प्रत्येक समझदार व्यक्ति आर्तनाद कर उठा, अन्तर्दृष्टिसम्पन्न व्यक्ति ऊँचे स्वर से कराह उठा और निष्पक्ष व्यक्ति की आँखों से आँसू बह चले।

हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि जो भटक गये हैं उनको न्यायी और निष्पक्ष बनने और जिनके प्रति उन्होंने उदासीनता बरती है उनके प्रति जागरूक बनने में वह उनकी कृपालुतापूर्वक सहायता करें, सचमुच ही वह सर्वानुग्रही, परम उदार है। अपने सेवकों को, हे मेरे प्रभु! अपने कृपा द्वार से लौटा मत और उनको अपनी निकटता के दरबार से बाहर मत निकाल। उनकी सहायता कर कि वे निरर्थक मनोरथों के कुहासे और व्यर्थ कल्पनाओं से बचे। तू वस्तुतः सर्वाधिपति परमोच्च है। कोई परमेश्वर तुझ सर्वशक्तिमान, कृपालु के सिवा नहीं है।

निश्चय के क्षितिज से दमके 'ईश्वरीय साक्ष्य' के दिवानक्षत्र की शपथ खाकर कहता हूँ मैं! यह 'पीड़ित' दिन-रात उसी में लगा रहा जिससे मानवात्माएँ तब तक उन्नत हों, जब तक ज्ञान का प्रकाश अज्ञान के अंधकार पर प्रबल न हो जाये।

ओ शेख! अक्सर मैंने कहा है और अब फिर निश्चयपूर्वक कहता हूँ कि प्रभुकृपा एवं उसकी अप्रतिरोध्य इच्छा से हमने महामहिम शाह को चालीस बरसों से ऐसी सहायता प्रदान की है, जिससे वे न्याय तथा निष्पक्षता के पक्षधर बनेंगे। जब तक कोई अतिचारी और पापी न हो, या वह न हो जो हमसे द्वेष करे या हमारी सत्यता में संदेह करे, इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता। कितनी विचित्र बात है कि राज्य के मंत्री और प्रजा के प्रतिनिधि इतनी विशिष्ट एवं अकाट्य सेवा से अभी तक अनभिज्ञ रहे हैं और यदि उससे अवगत रहे हैं तो अपने ही कारणों से उसकी अवहेलना करना उन्होंने उत्तम माना है। इन चालीस बरसों से पहले ईश्वर के सेवक निरन्तर विवादों तथा संघर्षों में उलझे रहे हैं। लेकिन इस समय वाणी, विवेक, बोध और सदुपदेशों से सम्बलित होकर उन्होंने धैर्य की मजबूत डोर और सहिष्णुता का चमकीला आंचल इस प्रकार से कस कर थाम लिया है कि इस पीड़ित जनसमुदाय पर जो कुछ गुजरा उसे उसने दृढ़तापूर्वक सहा है और सब कुछ ईश्वर पर छोड़ दिया है और इसके बावजूद कि माजिन्दरान प्रान्त तथा रश्त नगर में बहुत अधिक लोगों को बहुत भीषण यातनाएँ दी गई हैं। उनमें श्रीमान हाजी नसीर थे, जो असंदिग्ध रूप से त्याग की मूर्ति थे, झिलमिलाते उज्जवल नक्षत्र हुए। बलिवेदी पर चढ़ जाने के बाद उनकी आँखे निकाल ली गईं और उनकी नाक काट ली गई और उनका इतना घोर तिरस्कार किया गया कि अजनबी भी रो पड़े और बिलखते रहे और गुप्त रूप से धन एकत्र कर उन्होंने उनकी पत्नी तथा बच्चों की सहायता की।

ओ शेख! वास्तव में जो कुछ हुआ उसका वर्णन कर मेरी लेखनी लज्जित है। साद (इस्फहान) की सरजमीं पर जुल्म के ऐसे शोले भड़के कि हर तटस्थ व्यक्ति आर्तनाद कर उठा। तेरे प्राणों की सौगन्ध! ज्ञान और विवेक के केन्द्र-नगरों का करूण रूदन सुन कर धर्मनिष्ठ एवं ईश्वर की आत्मा पिघल गई। युगल देदीप्यमान प्रकाश हसन और हुसैन (''शहीदों के राजा और शहीदों का परम प्रिय'') ने सहज भाव से अपने प्राणों की बलि दे दी। धन, वैभव और यश उनको रोक नहीं पाये। ईश्वर ही जानता है उन यातनाओं को जो उन पर गुजरी, फिर भी लोग अधिकांशतया अनभिज्ञ हैं।

उनके पहले काजिम नाम के एक सज्जन और उनके साथी और उनके बाद श्रीमान अशरफ, सभी ने परम उत्कंठा एवं लालसा के साथ आत्मोत्सर्ग का घूंट छका और 'सर्वोपरि सहचर' के निकट पहुँचने की तत्परता दिखाई। इसी प्रकार सरदार अजीज खाँ के समय वह धर्मपरायण पुरूष मिर्जा मुस्तफा और उनके सह-बलिदानी गिरफ्तार कर 'सर्वतेजोमय

क्षितिज' में 'परमोच्च मित्र' के निकट भेज दिये गये। संक्षेप में हर शहर में ऐसी क्रूरता के प्रमाण, जो तुलना या समानता से परे हैं, अचूक रूप से स्पष्ट और प्रत्यक्ष हुए और फिर भी कोई आत्मरक्षार्थ नहीं उठा। बदी का तू स्मरण कर, जो महामहिम शाह को भेजी गई पाती के वाहक थे और विचार कर कि किस प्रकार उन्होंने अपने प्राण न्योछावर किये। उस सूरमा ने, जिसने वीरगति के अखाड़े में अपने घोड़े को एड़ लगाई थी, उसके निमित्त अनमोल प्राणों का मुकुट उतार कर फेंक दिया जो 'अतुलनीय मित्र' है।

ओ शेख! अगर इस प्रकार की चीजों को भी नकारा जाता है, तो फिर वह क्या है जिसे विश्वास योग्य माना जाये? ईश्वर के वास्ते वह सत्य सामने रखो, अपनी शान्ति का पल्ला थाम कर चुप बैठने वालों में मत बनो। उन्होंने नजफअली को बंदी बनाया और वह साहसी बड़ी ललक के साथ इन शब्दों का उच्चार करते शहादत स्थल की ओर दौड़ पड़े "हमने 'बहा' और खूँ-बहा (रक्तधन) दोनों को निभाया है।" इन शब्दों के साथ उन्होंने अपनी चेतना का समर्पण किया। उस आभा एवं तेज का चिन्तन करो जो मुल्ला अली-जान के उच्च हृदय-प्रकोष्ठ से जगमगाते आत्मत्याग के दीपक से छिटका। परमोदात्त शब्द के समीरों से और महिमामय शक्ति से वह इस कदर उन्मत्त हुए कि शहादत का मैदान उनके लिए लौकिक आनन्दों के बसेरों के बराबर, नहीं-नहीं उनको मात देने वाला बन गया। आबा-बसीर और सैयद अशरफ-ए-जनजानी के आचरण पर मनन करो। अपने पुत्र को उसके उद्देश्य से रोकने के लिए अशरफ की माँ को बुलाया गया। लेकिन उसने पुत्र को प्रेरणा का ऐसा सम्बल दिया कि उसने अत्यन्त गौरवशाली शहादत का वरण किया।

ओ शेख! यह जनसमुदाय नामों की संकीर्णताओं के उस पार खड़ा है और अपने तम्बू आत्मत्याग के सागर तट पर तान चुका हैं। अपने बैरियों की इच्छा के शब्द उच्चरित करने के बजाये वह हजार जीवन खुशी-खुशी उत्सर्ग कर देंगे। वे उससे बंधे हैं जिससे परमात्मा प्रसन्न होता है और पूर्णतया निरासक्त तथा उन चीजों से मुक्त है जिनका सम्बन्ध मनुष्यों से है। एक शब्द अनुचित बोलने के स्थान पर अपने शीश कटा देने को उन्होंने वरीयता दी है। मेरा विचार है कि उन्होंने आत्मत्याग के महासागर से जी भर कर पान किया है। इहलोक का जीवन इनको ईश्वर की राह में अपने प्राणों की आहुति देने से रोक पाने में विफल हो गया है।

माजिन्दरान में बहुत अधिक संख्या में ईश्वर के सेवकों को शहीद कर दिया गया। मिथ्यावादियों के प्रभाव मे आकर गवर्नर ने बहुतों का सब कुछ लूट लिया। उसने उन पर जो आरोप लगाये उनमें एक यह था कि वे हथियार उठाते रहे हैं, जबकि जाँच होने पर यह पाया गया कि उनके पास एक छोटी राईफल के अतिरिक्त कुछ नहीं था। कृपालु प्रभु! इस जनसमुदाय को संहारक शस्त्रों की क्या आवश्यकता है जबकि उन्होंने विश्व के पुर्ननिर्माण के लिए कमर कस ली है। उनके सैन्यदल सद्कर्मों के सैन्यदल हैं और उनके

अस्त्र सदाचरण के अस्त्र हैं और ईश भय इनका सेनापति है। वह धन्य है जो निष्पक्ष निर्णय करता है। प्रभु की साधुता की सौगन्ध! ऐसा लग रहा है इस समुदाय का धैर्य, संतोष और विरक्त भाव कि वे न्याय के ध्वजावाहक बन गये हैं और इतनी विशाल रही है उनकी सहिष्णुता, कि उन्होंने प्राण लेने के बजाये स्वयं प्राणों की आहुति दी है और इस तथ्य के बावजूद कि इन लोगों ने जिन्हें दुनिया ने प्रताड़ित किया है, ऐसी विपदायें सही हैं जो विश्व के इतिहास में अभूतपूर्व हैं और किसी राष्ट्र के नेत्रों के समक्ष अघटित रहीं है। वह क्या है जो उनको इन घनघोर विपत्तियों के साथ सामंजस्य बिठाने और उनके निवारण के लिए हाथ बढ़ाने से विरक्त रहने के लिए ललचा सका है? इतना आत्मसमर्पण कैसे? सच्चा कारण उस निषेध में मिलेगा जिसे 'महिमामय लेखनी' ने किया है।

बदी के पिता का स्मरण करो। उस 'पीड़ित' को उन्होंने पकड़ा और अपने धर्म को धिक्कारने तथा अपशब्द कहने का आदेश दिया। किन्तु ईश-कृपा से उन्होंने आत्मबलिदान को चुना और उसका वरण किया। प्रभु पथ पर उत्सर्ग हुए शहीदों को तुम लोग अगर गिनोगे तो गिने नहीं जायेंगे। सैयद इस्माइल का विचार करो - ईश्वर की शान्ति और प्रेमल सौजन्य हो उन पर - किस प्रकार सूर्योदय के पहले वह मेरे मकान की देहरी को अपनी पगड़ी से झाड़ा करते थे और अंत में उसी मकान पर दृष्टि जमाए, नदी-तट पर खड़े होकर उन्होंने अपने हाथों से अपने प्राण विसर्जित कर दिये।

क्या तू ईश-शब्द के मर्मबेधी प्रभाव पर विचार करता है? इन लोगों से प्रत्येक को पहले अपनी आस्था की निन्दा करने और उस पर लानत भेजने का हुक्म दिया गया, लेकिन ईश्वरेच्छा के आगे स्वेच्छा को वरीयता देता कोई नहीं मिला।

ओ शेख! पूर्ववर्ती कालों में कत्ल करने के लिए जिसे चुना गया था वह मात्र एक व्यक्ति था, परन्तु अब इस 'पीड़ित' ने तेरे लिये वह उत्पन्न किया है जिसे देखकर प्रत्येक निष्पक्ष व्यक्ति विस्मय-विमुग्ध होता है। तू ईमानदारी से निर्णय कर - मैं तुझसे अनुरोध करता हूँ और तेरे प्रभु की सेवा को उठता हूँ। वह, सत्य ही, तुझे ऐसा पुरस्कार प्रदान करेगा जिसकी समता धरती के सारे खजाने और राजाओं तथा शासकों की सारी जायदादें भी नहीं कर सकतीं। अपने सभी क्रियाकलापों में तू ईश्वर में भरोसा रख और उनको उसके हवाले कर दे। वह तुझे ऐसा प्रतिफल देगा जिसे 'पुस्तक' में महत् निर्दिष्ट किया गया है। अपने जीवन के इन बीतते जा रहे दिनो में तू इस प्रकार कर्मशील हो कि दैवी सदिच्छा की सुवास फैले और उसकी स्वीकृति के अलंकरण से विभूषित हो। इथोपियाई बलाल के कार्य ईश्वर की दृष्टि में इतने प्रीतिकर हुए, कि उनकी हकलाती जुबान के 'सिन' (गुनाह) को सारे जगत द्वारा बोले जाने वाले "शिन" से श्रेष्ठता प्राप्त हुई। यह वह दिन है जिसमें सभी राष्ट्रों को चाहिये कि वे एकता और मैत्री की ज्योति बिखेरें। संक्षेप में, विश्व के

कतिपय राष्ट्रों के गर्व तथा मिथ्याभिमान ने सच्ची समझ को तबाह कर दिया है और न्याय एवं निष्पक्षता का घर उजाड़ दिया है।

ओ शेख! इस 'पीड़ित' को जिस वेदना ने मर्माहत किया है उसकी तुलना या समानता नहीं हो सकती। हर्ष और स्वीकृति भाव से वह सब हमने सहा है ताकि मनुष्य को शांति और उन्नत्ति प्राप्त हो और ईश शब्द उत्कर्ष प्राप्त करें। मीम (माज़िन्दरान) प्रदेश के कारागार में हमारे बंदी होने के समय एक दिन हमें धर्मगुरुओं के हाथों में दे दिया गया। तू बखूबी कल्पना कर सकता है कि हम पर क्या बीती। तुझे यदि कभी शाह की कालकोठरी देखने का अवसर मिले तो तू प्रमुख जेलर से वे दो जंजीरें दिखाने के लिए कहना, जिसमें एक को 'क़ारागुहर' और दूसरी को 'सलासिल' कहा जाता हैं। न्याय के दिवानक्षत्र की सौगंध खाकर कहता हूँ मैं कि चार महीनों तक यह 'पीड़ित' उनमें से एक या दूसरी से बंधा और यातनाग्रस्त रहा। 'मेरा दुःख उन सभी संतापों से बढ़कर है जिनको जैकब ने व्यक्त किया है और जॉब की सारी पीड़ाएँ मेरी व्यथाओं का अंश मात्र हैं।'

इसी प्रकार तू 'प्रेमनगर' (इश्क़ाबाद) में हाजी मुहम्मद-रिदा की शहादत पर विचार कर। धरती के आततताइयों ने उस दुःखियारे को ऐसी क्रूर यातनायें दीं, जिस पर अनेक विदेशियों ने रो-रोकर विलाप किया। विश्वसनीय सूत्रों से जैसा कि ज्ञात हुआ है, उनके पावन शरीर पर बत्तीस घाव किये गये। फिर भी निष्ठावान ने मेरी आज्ञा की अवहेलना नहीं की और प्रतिरोधस्वरूप अपना हाथ नहीं उठाया। 'पुस्तक' में जिसका आदेश दिया गया है उसका स्थान उन्होंने अपनी अभिरूचियों को नहीं लेने दिया, परिणाम कुछ भी हो। जबकि उस नगर में उस समुदाय की पर्याप्त संख्या रही है और आज भी रहती है।

हम महामहिम शाह से विनती करते हैं कि ईश्वर उनकी सहायता करे कि वह स्वयं इन घटनाओं पर विचार कर न्याय तथा निष्पक्षता के साथ निर्णय करें। हाल के वर्षों में यद्यपि कई निष्ठावानों ने फारस के अधिकांश नगरों में प्राण लेने के बजाय स्वयं प्राणहानि उठाई है फिर भी कुछ हृदयों में सुलग रही द्वेषाग्नि पूर्व की अपेक्षा अधिक भीषणता से भड़क उठी। दमनचक्र के भुक्तभोगियों का अपने शत्रुओं के पक्ष में मध्यस्थता करना शासकों की दृष्टि में शानदार काम है। कुछ व्यक्तियों ने निश्चय ही सुना होगा कि उस नगर (इश्क़ाबाद) में इस उत्पीड़ित समुदाय ने अपने हत्यारों की ओर से गर्वनर को सफाई दी और उनकी सजा हल्की करने का निवेदन किया। अतः तुम सब जो अन्तर्दृष्टिसम्पन्न हो, इस पर भलीभाँति ध्यान दो।

ओ शेख! 'आभा लेखनी' ने एक पाती में स्पष्ट लिखा है। ''रे सेवक, इस 'पीड़ित' की आवाज सुन, जिसने ता (तेरहान) की भूमि में कारागृह में जाने तक ईश्वर की राह में कष्ट सहे हैं।

मनुष्य को उसने परमोदात्त बैकुण्ठ की ओर बुलाया, परन्तु उसे बन्दी बना कर देश-देशान्तर में घुमाया गया। मेरे प्रति प्रेम के कारण कितनी ही रातें मेरे प्रियजनों की आँखों से नींद गायब हो गई और कितने ही दिन अपने विरूद्ध मुझे जनसमूहों के आक्रोश झेलने पड़े। कभी तो मैंने अपने आपको पहाड़ों की ऊँचाइयों पर पाया और कभी ज़ंजीरों तथा बेड़ियों से जकड़ा ता (तेहरान) के कारागार की गहराइयों में। परमात्मा की साधुता की सौगंध! सर्वदा मैं उसके प्रति कृतज्ञ रहा, उसकी ओर उन्मुख होकर, उसकी इच्छा से सन्तुष्ट, उसके सम्मुख विनत एवं अधीन भाव से, उसकी ही स्तुति और उसी को स्मरण करता रहा। इसी तरह मेरे दिन गुजरे, जब तक कि इस कारागार (अक्का) में उनका अन्त नहीं हुआ। धन्यभागी है वह जिसने अपनी व्यर्थ कल्पनाओं को उस समय त्याग दिया, जब वह 'पीड़ित' प्रकट हुआ। वस्तुतः हमने इस 'परम महान धर्म प्रकटीकरण' की घोषणा कर दी है, फिर भी लोग विचित्र मोह में पड़े हैं।''

इस पर हिजाज़ की ओर से एक 'स्वर' मुखर हुआ। ऊँची आवाज में पुकार कर उसने कहा: ''महान है तेरी धन्यता, ओ अक्का, क्योंकि ईश्वर ने तुझे अपने 'परम मधुर स्वर' का दिवास्रोत और अपने परम शक्तिशाली चिह्नों का ऊषाकाल बनाया है। सौभाग्यशाली है तू कि न्याय का सिंहासन तुझ पर स्थापित हुआ है और ईश्वर की प्रेमल सौजन्यता तथा अनुग्रह का 'दिवानक्षत्र' तेरे क्षितिज के ऊपर चमका है। कल्याण हो उस निष्पक्ष व्यक्ति का जिसने समुचित रूप से उसका निर्णय किया है जो 'परम महान स्मृतिचिह्न, है और धिक्कार है उसे जो भ्रान्ति में एवं संदेहग्रस्त है।''

कुछ बलिदानियों की प्राणाहुति के बाद 'धर्मों के प्रभु' के धर्मप्रवर्तन रूपी स्वर्ग से लौह-ए-बुरहान (प्रमाण की पाती) प्रकट की गई।

''वह सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वप्रज्ञ है! अत्याचारियों के हाथों जो कुछ हुआ है उसके कारण 'बाथा (मक्का) की नौका' को विद्वेष की बयार ने घेर लिया है। ओ तू जो अपनी विद्वता के कारण प्रतिष्ठित है तूने उसके विरूद्ध सजा सुनाई है जिसके लिये 'विश्व की पुस्तकों' ने रूदन किया है और जिसके पक्ष में सभी धर्मग्रन्थों ने प्रमाण दिये हैं। तू, जो बहुत दूर भटक गया है, वस्तुतः मोटे परदे में लिपटा है। स्वयं परमात्मा की सौगंध! तूने उसके विरूद्ध निर्णय सुनाया है जिससे आस्था का क्षितिज ज्योतिर्मय हुआ है। परम दयामय तेरे प्रभु के धर्म के जो अवतार और 'धर्मप्रवर्तन के उदयस्थल' हैं, जिन्होंने उसके 'ऋजु मार्ग' में अपना सर्वस्व होम कर दिया है, वे इसकी साक्षी देते हैं। तेरी निरंकुशता से त्रस्त होकर प्रभुधर्म ने सर्वत्र हाहाकार किया है, फिर भी तू आमोद-प्रमोद में डूबा है और दूसरों की भाँति

उल्लास मना रहा है। तेरे या किसी के प्रति मेरे हृदय में किंचित द्वेष नहीं है। प्रत्येक विवेकवान व्यक्ति की दृष्टि तुझ पर और उन सभी पर लगी है तो तेरे ही जैसे हैं। तूने जो कुछ किया है उसका फल यदि तुझे ज्ञात हो जाता, तो खुद को तू आग में झोंक देता, या अपना घर छोड़कर पहाड़ों में भाग जाता, अथवा तब तक आर्तनाद करता जब तक तू उसके द्वारा जो शक्ति एवं सामर्थ्य का स्वामी है अपने लिये नियत किये गये स्थान पर वापस नहीं आ जाता। ओ तू जो नास्तिक रूप है! अपने निरर्थक मनोरथ और व्यर्थ कल्पनाओं के आवरण छिन्न-भिन्न कर, जिससे तू इस जगमगाते "क्षितिज" से आलोकित होते ज्ञान के दिवानक्षत्र के दर्शन कर सके। तूने तो स्वयं "ईशदूत" के ही अंश के टुकड़े-टुकड़े कर दिये हैं और कल्पना कर ली है कि तूने ईश्वर के धर्म की सहायता की है। तेरी आत्मा ने तुझे इसी भाँति उकसाया है और तू सचमुच प्रमादीजनों में एक है। तेरे कृत्य ने ऊध्र्वस्थ देवमण्डली तथा उनके हृदयों को धो डाला है जिन्होंने सभी लोकों के प्रभु ईश्वर के धर्म की परिक्रमा की है। तेरी क्रूरता के कारण उस साध्वी (फातिमा) की आत्मा द्रवीभूत हुई है और बैकुण्ठ के निवासियों ने आर्तनाद किया है।"

"तू न्यायसम्मत निर्णय कर, मैं ईश्वर की शपथ लेकर तुझसे अनुनय करता हूँ। जब वह जो 'ईश्वर की चेतना' (ईसा मसीह) था, यहूदी धर्माचार्यों के समक्ष सत्य लेकर उपस्थित हुआ, तो उसकी निन्दा के लिए उन्होंने कौनसा प्रमाण प्रस्तुत किया? बुतपरस्त पुरोहितों द्वारा सामने रखा गया क्या प्रमाण था जिससे मुहम्मद को स्वीकार नहीं करने का औचित्य सिद्ध होता? जब वह एक 'पुस्तक' लेकर उनके पास आये, तो सत्य और असत्य के बीच ऐसे न्याय के साथ निर्णय दिया जिससे धरा पर अंधकार के स्थान पर प्रकाश छा गया और जिन्होंने उनको जाना उनके हृदयों में आनन्द भर गया। तूने आज के दिन वस्तुतः वही प्रमाण उपस्थित किये हैं जो मूर्ख धर्मोपदेशकों ने उस काल में प्रस्तुत किये थे। इस महान कारागार में, जो अनुग्रह-जगत का अधिपति है वही यह प्रमाणित करता है। तू सचमुच उनके ही मार्गों पर चला है, बल्कि नृशंसता में उसको भी पछाड़ दिया है और मान बैठा है कि प्रभुधर्म की सहायता तथा सर्वज्ञ, सर्वप्रज्ञ 'ईश्वर के विधान' की रक्षा कर रहा है। जो सत्य स्वरूप है उसकी सौगन्ध! तेरे अधर्म के कारण गैब्रीयल कराह उठे हैं और उस 'ईश्वरीय विधान', से आँसू टपके हैं, जिसके जरिये न्याय के समीर उन सभी पर बहे हैं जो धरा पर और गगन में है। क्या तूने भोलेपन से यह कल्पना कर ली है कि तूने जो फैसला सुनाया है उससे तुझे लाभ हुआ है? नहीं-नहीं, उसकी सौगन्ध जो सभी नामों का सम्राट है! तेरी हानि तो वह प्रमाणित करता है जिसके पास संरक्षित पाती में अंकित सभी वस्तुओं का ज्ञान है।"

''ओ तू जो पथ से भटक गया है! तू न तो मुझसे मिला है, न मुझसे जुड़ा है और न क्षणांश को भी मेरा सहचर रहा है फिर कैसे तूने लोगों को मुझे धिक्कारने को कहा है? यह करके तूने क्या अपनी ही आकांक्षाओं का अनुगमन किया है या अपने प्रभु की आज्ञा का पालन किया है? अगर तू सत्यपरायण है, तो कोई एक लक्षण प्रस्तुत करके दिखा। हम प्रमाणित करते हैं कि ईश्वरीय विधान को पीठ पीछे फेंक कर तूने अपनी वासनाओं के दामन को पकड़ रखा है। उसके ज्ञान से सचमुच कुछ भी नहीं बचा है। यथार्थतः वह अतुलनीय, सर्वविज्ञ है। रे असावधान! उस दयानिधान ने कुरान में जिसे प्रकट किया है उसे सुन यदि तू उनमें है जो सुनते हैं! ऐसे हर व्यक्ति से यह मत कहो कि 'तू श्रद्धालु नहीं है।' यह निर्णय उसने दिया है जिसकी मुट्ठी में धर्म प्रकटीकरण रहा है और सृष्टि जगत है। ईश्वराज्ञा को तूने ताक पर रख दिया है और अपनी ही अभिलाषाओं के स्फुरणों से चिपका है। धिक्कार है तुझे ओ संशयग्रस्त प्रमादी! अगर तू मुझे नहीं मानता है तो किस प्रमाण से तू अपने सत्य को प्रमाणित कर सकता है? उसे प्रस्तुत कर, ओ तू जो ईश्वर का साझेदार बन बैठा है और उसकी प्रभुता से मुँह फेर बैठा है।''

''तू यह जान ले कि सच्चा पाण्डित्य उसी का है जिसने मेरे प्रकटीकरण को माना है और मेरे ज्ञान के सागर से पान किया है और मेरे प्रेम के गगन में जिसने विहार किया है और मेरे अतिरिक्त सभी का जिसने परित्याग कर दिया है; मेरी अद्‌भुत वाणी जगत से जिसे उतारा गया है उसे मजबूती से ग्रहण कर लिया है। मानवजाति के लिए वह वस्तुतः नेत्र के समान और समस्त सृष्टि रूपी देह के लिए चेतना के सदृश्य है। महिमामण्डित हो सर्वदयामय, जिसने उसे प्रबुद्ध बनाया और अपने महत् एवं सक्षम धर्म की सेवा हेतु ऊँचा उठाया है। वस्तुतः ऐसे व्यक्ति को, जिसने मुझ सर्वसमर्थ, सर्वशक्तिमान के नाम पर मेरी मुहरबन्द मदिरा का पान किया है, उसे देवमण्डली तथा उन्होंने धन्य माना है जो 'महिमा के मण्डप' में निवास करते हैं। तू यदि ऐसे किसी लोकोत्तर स्थान का अधिकारी हो तो, आसमानों के रचयिता परमेश्वर से प्राप्त कोई चिह्न प्रस्तुत कर और अगर तू अपनी अशक्तता जान ले, तो तू अपनी वासनाओं को लगाम दे और अपने प्रभु की ओर लौट आ, ताकि वह तेरे पाप को क्षमा कर दे, जिन्होंने 'दिव्य पद्म वृक्ष, के पात भस्म कर डाले हैं और जिनके कारण 'शिला' चीत्कार कर उठी तथा प्रबुद्धजनों के नेत्रों ने अश्रुपात किया है। 'दिव्यत्व का आवरण' तेरे कारण तार-तार हो गया है और ''नौका'' डूब गई है और 'चेतना' (ईसा) अपने उदात्त आश्रय में कराह उठी है। उसके साथ विवाद करता है तू जो तेरे पास परमेश्वर के उन प्रमाणों एवं चिह्नों को लेकर आया है जिस पर तू अधिकार किये बैठा है और जो धरावासियों के अधिकार में हैं? अपनी आँखें खोल ताकि तू उस

सर्वोच्च, उस परम सत्य, उस देदिप्यमान ईश्वर की इच्छा के क्षितिज पर जगमगाते इस 'पीड़ित' को निहार सके। फिर अपने कानों को मत बंद कर, ताकि तू 'दिव्य पदम्-वृक्ष, का वह उद्गार सुन सके, जिसे सचमुच सर्वशक्तिमान, लोकोपकारी परमेश्वर ने गुंजरित किया है। तेरी नृशंसता और तेरे जैसों के अपराधों के बावजूद, यह वृक्ष वस्तुतः उच्च स्वर से पुकार कर मानवमात्र को 'सद्र-तुल-मुन्तहा' और 'परमोच्च क्षितिज' की ओर बुला रहा है। धन्य है वह आत्मा जिसने परम महान चिह्न' पर दृष्टि जमा दी है और वह कान जिसने उसका अत्यन्त मधुर स्वर सुना है और धिक्कार है उसको जिसने मुँह फेर लिया तथा द्वेषपूर्ण आचरण किया है।''

ओ ईश्वर विमुख लोगों! 'दिव्य पद्म वृक्ष' पर तू अगर न्याय सम्मत दृष्टि डालता तो उसकी टहनियों पर, उसकी शाखाओं पर और उसके पातों पर तुझे अपनी कटार के निशान दिखाई देते, जबकि ईश्वर ने तुझे उसे पहचान कर उसकी सेवा करने के अभिप्राय से रचा था। विचार कर, ताकि भाग्यवश तू अपना अत्याचार समझ ले और तेरी गिनती उनके साथ हो सके जिन्होंने पश्चाताप किया है। क्या तू सोचता है कि हम तेरी क्रूरता से डरते हैं? तू जान ले और आश्वस्त हो ले, कि जिस दिन 'परमोदात्त लेखनी' की आवाज अवनी और अम्बर के बीच गूँजी उसी पहले दिन से हमने उस उदात्त, उस महान परमेश्वर की राह में अपनी आत्मा, अपने शरीर, अपने पुत्र और अपनी सम्पत्तियाँ होम की हैं और सभी सृजित वस्तुओं तथा देवमण्डली के बीच हम इस पर गर्व करते हैं। इस ऋजुपथ में हम पर जो कुछ आन पड़ा है वे विपदायें इसका प्रमाण देती हैं। ईश्वर की सौगंध! हमारे हृदय चुक गये और हमारे शरीर यंत्रणाग्रस्त हुए और हमारा लहू बहा और उस समय हमारी आँखें साक्षी, सर्वदर्शी अपने प्रभु के स्नेहपूरित सौजन्य के क्षितिज पर लगी थीं। व्यथाएँ जितनी दुःखद होती गई, उतना ही अधिक बहाजनों का प्रेम परवान चढ़ा। कुरान में सर्वदयामय ने जिसे अवतरित किया है वह वचन उनकी सच्चाई का प्रमाण देता है। वह कहता है तुम अगर सच्चे हो, तो फिर मृत्यु की कामना करो। 'वरेण्य कौन है', जिसने यवनिकाओं के पीछे शरण ले रखी है वह, या वह जो प्रभु के मार्ग पर उत्सर्ग हो गया है? तू न्यायसंगत निर्णय कर और उन जैसा मत बन जो असत्य के अरण्य में विक्षिप्त भटक रहे हैं। परम दयामय के प्रेम की जीवंत जलधारों से वे इस प्रकार उन्मत्त हुए हैं कि संसार की भुजाएँ या कौमों की शमशीरें उस दाता, उदार अपने प्रभु की अनुकम्पा के सागर की ओर निगाहें टिकाने से उनको नहीं रोक पाई हैं।

''ईश्वर की सौगंध! संकट मुझे हतोत्साहित करने में विफल रहे हैं और धर्मोपदेशकों द्वारा अस्वीकार किया जाना मुझे निर्बल करने में अशक्त रहा है। मानव के समक्ष मैंने कहा है

और आज भी कहता हूँ कि 'कृपा कपाट खुल गया है और जो न्याय का दिवास्रोत है वह शक्ति एवं सामर्थ्य के प्रभु ईश्वर के सुस्पष्ट चिह्नों तथा प्रत्यक्ष प्रमाणों के साथ आ गया है।' 'तू मेरे सम्मुख उपस्थित हो ताकि उन रहस्यों को सुन सके जिनको विवेक के सिनाई पर इमरान के पुत्र (मूसा) ने सुना था। यह आदेश तुझे अपने महाकारागृह से वह देता है जो दयालु परमेश्वर तेरे प्रभु के धर्म प्रकटीकरण का उदय स्थल है।''

इस पर एक बार फिर सच्चे प्रभुधर्म ने बिलख कर आर्तनाद करते हुए कहा: सिनाई वस्तुतः उच्च स्वर से पुकार कर कह रहा है: ''ओ बयान के लोगों! तुम उस दयामय से डरो। मैंने अवश्य ही उसका सान्निध्य पाया था जिसने मुझसे वार्तालाप किया और मेरे हर्षातिरेक ने धरती के कंकड़ों-पत्थरों तथा धूल को भी जकड़ लिया है।'' और 'झाड़ी' ऊँचे स्वरों से कह रही है: ऐ बयान के लोगों! ''जो कुछ व्यक्त हुआ है तुम उसका ईमानदारी से निर्णय करो।'' ''वास्तव में अब वह 'अग्नि' प्रकट हुई है जिसे ईश्वर ने उसके समक्ष प्रदर्शित किया था जिसने उसके साथ वार्तालाप किया था। अन्तर्दृष्टि और ज्ञानसम्पन्न प्रत्येक व्यक्ति इसकी साक्षी देता है।''

हमने इस प्रकटीकरण के कतिपय बलिदानियों का उल्लेख किया है और इसी प्रकार अपने वाणी-जगत से उनके सम्बन्ध में प्रकट की गई कुछ पंक्तियाँ उद्धृत की हैं। निश्चय ही हम यह आशा करेंगे कि संसार से पूरी तरह अनासक्त होकर तू उन चीजों पर विचार करेगा जिनकी हमने चर्चा की है।

तेरे लिये अब यही उचित है कि तू मिर्जा हादी दौलत-आबादी और साद-ए-इस्फहानी की दशा पर विचार कर, जो ता (तेहरान) भूमि में निवास करते हैं। मिर्जा हादी ने जैसे ही यह सुना कि उनको बाबी कहा गया है वैसे ही वह इतने विचलित हो गये कि उनके संतुलन ने उनका साथ छोड़ दिया। प्रवचन मंचों पर चढ़ कर उन्होंने ऐसे शब्द कहे जो उनके लिए अशोभनीय थे। प्राचीन काल से संसार के लोगों ने नेतृत्व की लालसा में ऐसे काम किये हैं जिनके फलस्वरूप मनुष्य ने गलतियाँ की हैं। तथापि तू यह कल्पना मत कर कि सभी निष्ठावान इन जैसे ही होते हैं। हमने इस धर्मप्रर्वतन की हुतात्माओं की निष्ठा, स्थिरता, अडिगता, निश्चय, प्रसन्नता एवं गरिमा का वर्णन किया है ताकि तू भलीभाँति अवगत हो सके। राजाओं तथा दूसरों को भेजी गई पातियों के अंश उद्धृत करने में मेरा उद्देश्य यही रहा है कि तू सुनिश्चित रूप से जान ले कि इस 'पीड़ित' ने ईश्वरीय धर्म को छिपा कर नहीं रखा है, बल्कि अत्यधिक वाग्मितापूर्ण भाषा में उन वस्तुओं का उद्घोष एवं वितरण किया है जिनकी प्रस्तुति के लिए उसे भेजा गया था। किन्तु कुछ दुर्बल लोगों ने जैसे हादी तथा दूसरों ने प्रभुधर्म में हस्तक्षेप किया है और इस क्षणभंगुर जीवन की चिन्ता में इस धर्म के सारभूत सत्य के ज्ञान के बावजूद वह कहा और किया है, जिसके

कारण न्याय के नेत्र ने आँसू बहाये हैं और 'महिमामय लेखनी' दुःखाभिभूत हुई है - जबकि इस 'पीड़ित' ने उसे ईश्वर के निमित्त प्रकट किया है।

ओ हादी! तू मेरे भाई के पास गया है और उससे मिला है। अब तू अपना मुखड़ा इस 'पीड़ित' की ओर घुमा, ताकि धर्मप्रवर्तन के समीर और प्रेरणा के झोंके तेरी सहायता करें और तू अपना लक्ष्य प्राप्त करने योग्य बन जाये। जो व्यक्ति इस युग को मेरे चिह्नों से युक्त देखेगा, वह छाया से धूप की भाँति असत्य से सत्य को अलग कर लेगा और लक्ष्य का ज्ञाता बनेगा। ईश्वर जानता है और मेरा साक्षी है कि जो कुछ उल्लेख किया गया है वह ईश्वर के ही निमित्त है, ताकि सौभाग्य से तू मनुष्य के मार्गदर्शन का माध्यम बन सके और विश्व के जनसमुदायों को निरर्थक मनोरथों तथा व्यर्थ कल्पनाओं से मुक्ति दिला सके। कृपालु प्रभु। अभी तक जिन्होंने मुझसे मुँह फेरा और मुझे ठुकराया है, वे उसे पहचान पाने में विफल रहे है, जिसे वह संदेश प्रेषित किया गया था। इसका ज्ञान सर्वलोकों के प्रभु ईश्वर के पास है।

यत्न कर, ओ शेख! और इस धर्म की सेवा के लिए उठ खड़ा हो। 'मुहरबन्द मदिरा' आज के दिन मानव नेत्रों के सम्मुख अनावृत है। अपने प्रभु के नाम पर उसे थाम और उसकी याद में, जो सामर्थ्यशाली है, जी भर कर पी। यह 'पीड़ित' दिन रात उसी में लगा रहा है जो हृदयों को जोड़ सके और मानवात्माओं को ऊँचा उठाये। प्रारम्भिक वर्षों में फारस में घटी घटनाओं से विशुद्ध हृदय वाले लोग सचमुच व्यथित हुए हैं। प्रत्येक वर्ष एक नए जनसंहार, लूटपाट और रक्तपात का साक्षी बना। एक बार ज़नजान में वह सब दिखाई दिया जिससे भीषणतम उथल-पुथल मची, दूसरी बार नैरीज़ में और फिर तीसरी बार तबरसी में और अंत में तेहरान का आख्यान घटित हुआ। उसी समय से इस 'पीड़ित' ने उस एक सच्चे परमेश्वर की सहायता से इस उत्पीड़ित समुदाय को उन चीजों से अवगत कराया जो उनके लिए उचित थीं। सभी ने उन वस्तुओं से अपना नाता तोड़ लिया है जिनका सम्बन्ध ईश्वर से है वे उनसे जा चिपटे हैं और उन पर भी अपनी दृष्टि टिका दी है जो दूसरों के पास है।

महामहिम शाह के लिए अब यह आवश्यक है कि वह इस समुदाय के साथ प्रेमपूर्ण और दयालुता का व्यवहार करें। ईश्वर उदात्त है उनकी रक्षा करे। यह 'पीड़ित' स्वयं दिव्य काबा के सम्मुख वचन देता है कि सत्यपरायणता और विश्वासपात्रता के अतिरिक्त, यह समुदाय ऐसा कुछ नहीं दर्शाएगा जिसका किसी भी तरह महामहिम की शोभा बढ़ाने वाले विचारों से विरोध हो। अपने शासक की प्रतिष्ठा के प्रति ऊँचा सम्मान भाव रखना, उसकी अधीनता में रहना, उसकी आज्ञाओं का पालन करना और उसके प्रभुत्व को पूर्णतया

अंगीकार करना प्रत्येक राष्ट्र के लिए आवश्यक है। पृथ्वी के प्रधान शासक ईश्वर की महिमा, गौरव तथा शक्ति के साक्षात स्वरूप रहे हैं। किसी के साथ इस 'पीड़ित' ने कभी कपटाचरण नहीं किया है। सभी इससे भलीभाँति अवगत हैं और इसकी साक्षी देते हैं। सर्वोच्च शासक पद हेतु सम्मान दिव्य रूप से निर्दिष्ट है, जैसा कि ईशदूतों एवं ईश्वर के प्रियजनों के शब्दों से स्पष्टतया प्रमाणित है। वह जो 'चेतना' (ईसा) है उससे पूछा गया: "ओ ईश्वर की चेतना! सीज़र को श्रद्धांजलि देना विधिसंगत है या नहीं?" और उसने उत्तर दिया "हाँ, जो चीजें सीज़र की है वे सीज़र को प्रदान करो और जो चीजें ईश्वर की हैं वे ईश्वर को।" उसने उसका निषेध नहीं किया। ये दोनों कथन अन्तर्दृष्टिसम्पन्न मनुष्यों की दृष्टि में एक और समान हैं क्योंकि जो कुछ सीज़र का है वह ईश्वर का है। जो कुछ सीज़र का है वह अगर ईश्वर से ही न आया होता, तो वह इसका निषेध कर देता। और इसी प्रकार इस पवित्र पंक्ति में कि "ईश्वर की आज्ञा मानों और तुम्हारे बीच जो अधिकारसम्पन्न हैं उनकी आज्ञा मानों, "जो अधिकारसम्पन्न हैं का तात्पर्य मूलरूप से इमाम है। वे वस्तुतः ईश्वरीय शक्ति की पहचान, उसके प्रभुत्व के स्रोत, तथा उसके ज्ञान के आगार और उसकी आज्ञाओं के दिवास्रोत हैं। ये शब्द उन नरेशों तथा शासकों की ओर भी संकेत करते हैं जिनके न्याय के प्रकाश से सम्पूर्ण विश्व प्रकाशित है। हम आशा करते हैं कि महामहिम शाह ऐसी न्याय-दीप्ति से जगमगायेंगे जिसकी कांति धरती के सभी लोगों को घेर लेगी। प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह उचित है कि वह परमेश्वर से उसके लिए विनती करे जो आज के दिन उचित और शोभनीय है।

"हे प्रभु, मेरे परमेश्वर, मेरे स्वामिन, मेरे अवलम्बन दाता, मेरे इष्ट और मेरे प्रियतम! तेरे ज्ञान में छिपे तेरे रहस्यों के जरिये और तेरी प्रेमल सौजन्यता की सुंगन्ध बिखेरते तेरे चिह्नों के जरिये और तेरे अनुग्रह सागर की हिलोरों और तेरी कृपा एवं उदारता के व्योम और तेरे पथ पर बहे लहू और तेरे प्रति प्रेम में चूक गये हृदयों के जरिये मैं तुझसे याचना करता हूँ कि, महामहिम शाह को तू अपनी शक्ति तथा अपने प्रभुत्व की सहायता प्रदान कर जिससे वह व्यक्त हो जो तेरी पुस्तकों, तेरे धर्मग्रन्थों और तेरी पातियों में शाश्वत रूप से रहे। ओ मेरे प्रभु, अपनी सर्वशक्तिमत्ता के हाथ में तू उनका हाथ थाम ले, अपने ज्ञान के प्रकाश से उनको ज्योतिर्मय कर और अपने सद्गुणों के अलंकरण से उन्हें सज्जित कर। जो तुझे प्रिय है वह करने में तू समर्थ है और सभी रचित वस्तुओं की बागडोर तेरी मुट्ठी में है। तुझ सर्वदा क्षमाशील, सर्वानुग्रही के सिवा कोई ईश्वर नहीं है।"

रोमवासियों के प्रति अपनी पाती में संत पॉल ने लिखा है: "हर आत्मा उच्चतर शक्तियों के अधीन रहे, क्योंकि ईश्वरीय शक्ति के अतिरिक्त कोई शक्ति नहीं होती है। विद्यमान शक्तियाँ ईश्वर द्वारा निर्दिष्ट हैं। अतः जो व्यक्ति शक्ति का प्रतिरोध करता है वह ईश्वर के

ही अधिनियम का प्रतिरोध करता है।'' इसके अतिरिक्त ''क्योंकि वह ईश्वर का राजदूत है। उस व्यक्ति पर कोप करने वाला प्रतिरोधी है जो दुष्कर्म करता है।'' वह कहता है कि नरेशों का आविर्भाव और उनकी महिमा एवं शक्ति ईश्वरीय है।

इसके अतिरिक्त, प्राचीन पारम्परिक कथनों में किए गए उल्लेखों को धर्मगुरुओं ने देखा तथा सुना है। हम ईश्वर से विनती करते हैं, ओ शेख, सर्वलोकों के प्रभु, ईश्वर की अनुकम्पा रूपी नभ से जो कुछ उतरा है उसे मजबूती से पकड़ने में वह तेरी सहायता करे। धर्माचार्यों के लिए परम आवश्यक है कि वे महामहिम शाह के साथ जुड़े रहें जिससे जनसमाज की रक्षा, सुरक्षा, कल्याण एवं सम्पन्नता सुनिश्चित होते हों। एक न्यायी राजा किसी अन्य व्यक्ति की अपेक्षा ईश्वर की निकटतर समीपता का उपभोग करता है। अपने 'परम महान कारागार' में जो बोल रहा है, वह इसको प्रमाणित करता है! उस एक, अतुल, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वप्रज्ञ के अतिरिक्त कोई दूसरा ईश्वर नहीं है।

ईश्वर के निमित्त तू यदि, मात्र एक घण्टे के लिए ही, उन चीजों का मनन करे जो पहले और अभी हाल में घटित हुई हैं तो जो चीजें तेरे पास हैं उनसे उदासीन होकर तू उन चीजों की ओर मुड़ जायेगा जिनका सम्बन्ध ईश्वर से है और शब्दोन्नयन का साधन बन जाएगा। संसार की बुनियाद से लेकर आज तक क्या ईश्वरेच्छा के दिवास्रोत से कोई 'प्रकाश' या 'प्रकटीकरण' प्रकटित हुआ है, जिसे धरती के बांधवों ने स्वीकारा और उसके धर्म को अंगीकार किया है? कहाँ मिलेगा वह और उसका नाम क्या है? 'ईशदूतों की मुद्रा' (मुहम्मद) और उनके पहले 'ईश्वर की चेतना' (ईसामसीह) से लेकर 'प्रथम अवतार' तक सभी ने घोर कष्ट उठाए हैं। कुछ को पकड़ कर आधिपत्य में रखा गया, दूसरों को पाखण्डी कहा गया और इस प्रकार का बर्ताव किया गया जिसका वर्णन करने में लेखनी को लज्जा आती है। ईश्वर की सौगन्ध! उन पर वह गुजरा जिसके कारण सभी सृजित वस्तुएँ आह भर उठीं और इतने पर भी अधिकांश लोग प्रत्यक्ष अज्ञान में डूबे हैं। ईश्वर से हम उनको अपनी ओर लौटाने और अपनी दया के द्वार के सम्मुख पश्चाताप करने में सहायता देने की प्रार्थना करते हैं। सभी वस्तुओं पर वह प्रभावशाली है।

इस क्षण 'परमोदात्त लेखनी' से तीक्ष्ण स्वर उठा है और मुझे इन शब्दों से सम्बोधित किया है: ''शेख को वही प्रबोधन दे, जिसे तूने अपनी एक शाखा (पुत्र वदीउल्लाह, मुहम्मद अली के छोटे भाई) को दिया है, ताकि भाग्यवश तेरी वाणी उसे आकृष्ट कर सर्वलोकाधिकारी परमेश्वर के निकट खींच लाएँ।''

"समृद्धि में उदार बनो और विपत्ति में कृतज्ञ बनो। अपने पड़ोसी के विश्वास के योग्य बनो और उसे प्रसन्नता तथा मित्रता के भाव से देखो। निर्धनों के लिए खजाना और धनवानों के लिए सचेतक बनो, अभावग्रस्तों के अभावहर्ता और प्रतिज्ञापालक बनो। तुम्हारा निर्णय न्यायपूर्ण हो और तुम्हारी वाणी में संयम हो। किसी भी मनुष्य के प्रति अन्याय मत करो और सब के प्रति विनम्रता दिखलाओ। अंधकार में भटकने वालों के लिये दीपक के समान बनो, शोकमग्नों के लिये आनन्द, प्यासों के लिये एक सागर और विपत्ति में पड़े हुए लोगों के लिये आश्रय बनो, अन्याय से पीड़ित लोगों के रक्षक और आश्रयदाता बनो। ईमानदारी और सदाचारी के कारण तुम्हारे सभी कार्य औरों से अनूठे हों। अनजाने को घर का अपनापन दो, कष्टपीड़ितों के लिये शीतल मरहम, संत्रस्तों के लिये शक्ति के स्तम्भ बनो। नेत्रहीनों के लिए नेत्र और पथभ्रष्टों के भटकते पाँव के लिये पथदर्शी प्रकाश बनो। सत्य के मुखड़े के आभूषण, वफा के माथे के मुकुट, सदाचार के मंदिर के स्तम्भ, मानवता की देह के प्राणवायु, न्याय की सेनाओं की ध्वजा, सद्‌गुणों के क्षितिज के जगमगाते सितारे, मानव-हृदय की धरती के लिये ओसबिन्दु, ज्ञान के महासागर के जहाज, प्रभु की अक्षय सम्पदाओं के गगन के सूर्य, प्रज्ञा के मुकुट के रत्न, अपनी पीढ़ी के आकाश के प्रखर प्रकाश और विनम्रता के वृक्ष के फल बनो।" हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि "वह ईर्ष्या के ताप और द्वेष के शीत से तुम्हारी रक्षा करे। उत्तर देने में विलम्ब न करने वाला वह ईश्वर सच, तुम्हारे निकट ही है।" मेरी शाखाओं (पुत्रों) में एक के प्रति मेरी वाणी ने यही शब्द उच्चारे हैं और इसका हमने अपने उन प्रियजनों के लिए उल्लेख किया है जो निरर्थक मनोरथों का त्याग कर उनसे जुड़े हैं, जिसे उनके लिए उस दिवस में निधार्रित किया गया है जिसमें 'सुनिश्चय का दिवानक्षत्र' सर्वलोकाधिपति ईश्वर की इच्छा के गगनांचल पर दमक उठा है। वह दिवस यही है जिसमें 'वाणी के पखेरू' ने अपने प्रभु, दयानिधान परमेश्वर, के नाम पर अपना कलरव गुंजरित किया है। धन्य है वह मनुष्य, जो उत्कंठा के पंखों के सहारे 'न्याय दिवस' के प्रभु, परमेश्वर की ओर उड़ चला है।

वह एकसत्य परमेश्वर भलीभाँति जानता है और उसके सभी विश्वस्त लोग प्रमाणित करते हैं कि इस 'पीड़ित' ने सर्वदा ही घोर संकटों का सामना किया है। ईश्वर की राह में मुझ पर यदि विपदायें न आतीं तो जीवन में मेरे लिए कोई आकर्षण न रह जाता और मेरे अस्तित्व से मुझे कोई लाभ न होता। जो व्यक्ति विवेकसम्पन्न हैं और जिनकी दृष्टि 'लोकोत्तर दर्शन' पर टिकी हैं, उनके लिए यह भेद की बात नहीं है कि मैं अपने जीवन के अधिकांश दिनों में किसी गुलाम की भाँति लटकती तलवार के नीचे बैठा रहा हूँ, जो यह नहीं जानता है कि वह उस पर जल्द ही गिरेगी या देर से और इन सबके बावजूद हम

सर्वलोको के प्रभु, परमेश्वर को धन्यवाद अर्पित करते हैं। मेरी अन्तर्जिह्वा निरंतर इस प्रार्थना का पाठ करती है: ''महिमा हो तेरी, मेरे परमेश्वर ! यदि वे दुःख न होते जो तेरे पथ में सहने पड़ते हैं तो तेरे सच्चे प्रेमी कैसे पहचाने जाते, और यदि वे संकट न होते जो तेरे प्रेम के कारण उठाने पड़ते हैं तो, तेरी चाह रखने वालों के पद कैसे प्रकट होते? तेरी सामर्थ्य मेरी साक्षी है कि जो भी तेरी आराधना करते हैं, उन सबके सहचर, उनके बहाए हुए आँसू हैं और तेरी आकांक्षा करने वालों को दिलासा देने वाली हैं उनके मुख से निकली आहें। जो तुझसे मिलने की शीघ्रता करते हैं, उनका आहार उनके टूटे हुए दिल के टुकड़े हैं। कितना मधुर आस्वाद देती है मुझको तेरे पथ में भोगी गई मृत्यु की कटुता और कितने अनमोल हैं मेरी दृष्टि में तेरी वाणी के यशोगान के बदले लगने वाले तेरे शत्रुओं के तीर। अपने धर्म की राह में तू जो चाहे वह सब गरल मुझको पीने दे। अपने प्रेम में वह सब सहने दे मुझको, जिसका तूने आदेश दिया है। तेरी महिमा की सौगंध ! जो तू चाहे बस वही मेरी भी इच्छा है और प्रिय है मुझको बस वही जो तुझको प्रिय है। हर समय बस तुझमें ही रखी है मैंने अपनी सम्पूर्ण आस्था। मैं तुझसे याचना करता हूँ, हे मेरे परमेश्वर, कि तू इस धर्म के ऐसे सहायकों को उत्पन्न कर जो तेरे नाम और सम्प्रभुता के योग्य हों, ताकि वे तेरे प्राणियों के बीच मुझे स्मरण कर सकें और तेरी पृथ्वी पर विजय-पताका फहरा सकें। जैसा तुझे अच्छा लगे वैसा करने में तू समर्थ है। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, संकट में सहायक, स्वयंजीवी।''

इस पर सच्चे धर्म का स्वर मुखरित हुआ, जिसने बारम्बार उच्च स्वर से आह्वान करते हुए ये शब्द कहे: ''ओ धरती के जनसंगम! ईश्वर की सौगन्ध! मैं तुम्हारे बीच ईश्वर का सच्चा धर्म हूँ। सावधान, मुझे ठुकराओ मत। ईश्वर ने मुझे ऐसे प्रकाश के साथ प्रकट किया है जिसने उन सबको आवृत किया है जो धरा पर और आसमानों में हैं। मेरे प्राकट्य और मेरी महिमा की अभिव्यक्ति और मेरी ज्योति की प्रखरता की निष्पक्षतापूर्वक जाँच करो, ऐ लोगों और उन जैसे मत बनो जो अन्याय करते हैं।''

ओ शेख! यह पीड़ित ईश्वर से विनती करता है कि वह तुझे ऐसा बना दे जो न्याय का द्वार खोले और तेरे माध्यम से अपने सेवकों के बीच अपने धर्म को व्यक्त करे। वह वस्तुतः सर्वशक्तिमान, सर्वसमर्थ, सर्वानुग्रही है।

ओ शेख! एकमेव सच्चे परमेश्वर से तू मानवमात्र के कानों को और आँखों को और हृदयों को पवित्र बनाने और उनको दुष्प्रवृत्ति से प्रेरित कामनाओं से छुटकारा दिलाने का अनुनय-विनय कर, क्योंकि दुर्भावना दुःखद व्याधि है जो उस महान सत्ता को पहचानने से मनुष्य को वंचित करती है और उसे निश्चय रूपी सूर्य के वैभव से दूर रखती है। हम

प्रार्थना तथा आशा करते हैं कि प्रभु अपनी दया एवं कृपा से यह प्रबल अवरोध हटा सकता है। वह वस्तुतः सक्षम, सर्वाधीनकारी, सर्वशक्तिमान है।

इसी पल 'ज्योर्तिमय स्थल' के दाहिने ओर एक 'स्वर' उठा: ''प्रभु! उस नियन्ता, सर्वप्रज्ञ के सिवा दूसरा ईश्वर नहीं है। शेख के समक्ष तू लौह-ए-बरहान (प्रमाण की पाती) के शेष परिच्छेदों का पाठ कर, ताकि वे परिच्छेद उसको दयालु परमेश्वर के धर्म प्रकटीकरण के क्षितिज की ओर आकृष्ट करें, जिससे वह मेरे धर्म को सुस्पष्ट चिह्नों एवं उदात्त प्रमाणों की सहायता देने को उठे और मानवों के बीच वह बोले, जिसे 'प्रमाण की जिह्वा' ने बोला है। ''साम्राज्य सर्वलोकाधिपति परमेश्वर का है।''

तू ''किताब-ए-ईक़ान (सुनिश्चय की पुस्तक) का और सर्वदयामय ने पेरिस सम्राट (नेपोलियन तृतीय) तथा उसके जैसों के लिए जो भेजा है उसका अध्ययन कर, जिससे तू उन बातों से अवगत हो सके जो विगत में हुई हैं और तुझे यह प्रतीत हो जाये कि हमने उस भूमि में उसके सुव्यवस्थित होने के बाद अव्यवस्था फैलाने का प्रयास नहीं किया है। हम पूर्णतया ईश्वर के निमित्त उसके सेवकों को सदुपदेश देते हैं। जो उसकी ओर उन्मुख होना चाहे वह हो और जो उससे मुँह फेरना चाहे वह फेर ले। दयामय हमारा प्रभु सर्वतः तुष्ट, सर्वतः स्तुत्य है। ओ धरा के बन्धुओं! यह वह दिवस है जिसमें सभी वस्तुओं के बीच कोई वस्तु या सारे नामों के बीच कोई नाम इस नाम के सिवा तुम्हारे लिये लाभकर नहीं हो सकता, जिसे ईश्वर ने उन सभी के लिए, जो सृष्टि जगत में हैं, अपने धर्म का साक्षात स्वरूप और परमोत्कृष्ट उपाधियों का दिवास्रोत बनाया है। धन्य है वह पुरूष जिसने सर्वदयामय की सुवास पहचानी है और अटल जनों में गिना गया है। तुम्हारे विज्ञान इस दिवस में तुम्हारे लिए लाभप्रद नहीं होंगे, न तुम्हारी कलाएँ, न तुम्हारी निधियाँ और न तुम्हारी चमक-दमक। उन सबको पीठ पीछे फेंककर अपने नेत्र 'परमोदात्त शब्द' पर टिकाओ जिसके जरिए 'धर्मग्रंथ' और 'पुस्तकें' तथा यह पाती स्पष्टतया प्रस्तुत हुए हैं। ऐ लोगों! अपने निरर्थक मनोरथों तथा व्यर्थ कल्पनाओं की लेखनी से तुमने जिन चीजों को रचा है उन्हें दूर फेंक दो। ईश्वर की सौगन्ध! ज्ञान का दिवाकर निश्चय के क्षितिज पर चमक उठा है।

''ओ तू जो भटक गया है! अगर तुझे हमारे आचरण के विषय में कोई संदेह हो, तो तू यह जान ले कि हम साक्षी देते हैं उसकी जिसकी धरती तथा आसमानों की रचना के पूर्व स्वयं ईश्वर ने साक्षी दी है कि उस सर्वशक्तिमान, सर्वानुग्रही के सिवा कोई अन्य ईश्वर नहीं है। हम प्रमाणित करते हैं कि अपने साररूप में वह एक, अपनी दिव्य वृत्तियों में वह एकाकी है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में कोई उसके जैसा नहीं है। सारी सृष्टि में उसका कोई साझेदार नहीं

है। अपने संदेशवाहकों को उसी ने भेजा है और अपनी 'पुस्तकें' भेजी हैं, जिनसे उसके प्राणियों के समक्ष वे 'सीधे मार्ग' की घोषणा करें।''

''क्या शाह को सूचना है, या तेरे कृत्यों के प्रति उनकी आँखे बंद रखी गई हैं? अथवा भेड़ियों के एक झुण्ड की हुँआ-हुँआ से वह भयाक्रान्त, ईश्वरीय मार्ग की उपेक्षा कर किसी स्पष्ट प्रमाण या पुस्तक के बगैर तेरी राह में चल पड़ा है? हमने सुना है कि फारस के प्रान्त न्याय के गौरव से अलंकृत हुए हैं। किन्तु सूक्ष्म निरीक्षण करने पर हमने देखा कि वे अत्याचार के उदयस्थल और अन्याय के दिवास्रोत हैं। न्याय को हम निरंकुशता के पंजों में दबा देख रहे हैं। ईश्वर से हम, उसके सामर्थ्य तथा प्रभुत्व बल से उसे मुक्त देखने की विनती करते हैं। वस्तुतः जो कुछ आसमानों एवं धरती पर है सब पर उसकी छत्रछाया है। प्रभुधर्म पर जो कुछ गुजरा है उसके सम्बन्ध में किसी व्यक्ति का प्रतिरोध करने का किसी को भी अधिकार नहीं दिया गया है। धैर्य की डोर से बंधकर संकटमोचन, निर्बन्ध परमेश्वर में भरोसा रखना ही उसके लिए उचित है जिसने 'परमोदात्त क्षितिज' की ओर मुख घुमा लिया है ओ ईश्वर के प्रियजनो! विवेक के अजस स्रोत से जी भर पान करो और विवेक के वायुमण्डल में विहार करो और विवेक एवं वाग्मिता के साथ बोलने को मुँह खोलो। सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ तुम्हारे प्रभु तुम्हें यही आज्ञा देते हैं।

''रे प्रमादी! अपनी तड़क-भड़क और शक्ति का भरोसा न कर। तू पर्वत शिखर पर की धूप के अंतिम चिह्न जैसा ही है। शीघ्र ही वह सर्वाधिपति, सर्वोच्च परमेश्वर के निर्णयानुसार लुप्त हो जायेगी। तेरा गौरव और जो तेरे जैसे हैं उनका गौरव छीन लिया गया है और वस्तुतः यही उसके द्वारा निर्दिष्ट किया गया है जिनके पास 'मातृ पाती' है। कहाँ मिलेगा वह जिसने परमेश्वर से विवाद ठाना था और कहाँ चला गया वह, जिसने उसके चिह्नों का खण्डन किया और उसके प्रभुत्व से मुँह फेर लिया था? कहाँ हैं वे जिन्होंने उसके प्रियजनों का वध करके उसके पवित्र खून को बहाया था? विचार कर, रे मूढ़ संशयात्मा! भाग्यवश तुझे अपनी कारगुजारियों का बोध हो जाये। तुम सबके कारण 'प्रेरित' (मुहम्मद) ने करूण क्रन्दन किया और वह साध्वी (फातिमा) चीख उठी, देश बर्बाद हो गये और सभी क्षेत्रों पर अंधकार छा गया। ओ धर्मगुरूओं, तुम्हारे कारण समुदाय की अधोगति हुई और इस्लाम का ध्वज धराशायी हुआ और उसका सशक्त सिंहासन पलट गया। जब भी किसी विवेकशील पुरूष ने उस 'सत्य' को दृढ़ता से पकड़ने का प्रयास किया जिससे इस्लाम उन्नत होता, तुमने हो-हल्ला मचाया, जिसके कारण अपना लक्ष्य उपलब्ध करने में उसे व्यवधान हुआ और वह भूमि पूर्णतया विनाश की खाई में पड़ी रह गई।

"ओ मेरी सर्वोच्च लेखनी! तू उस सर्पिणी (इस्फहान का इमाम जूमेह) को याद कर जिसकी क्रूरता ने सारी सृजित वस्तुओं को रूलाया और पवित्रात्माओं के अंग कम्पा दिये हैं। सभी नामों का स्वामी से तुझे यह आज्ञा देता है। तेरे अधर्म के फलस्वरूप वह 'साध्वी' (फातिमा) चीख उठी है, फिर भी तू 'ईश्वर के प्रेरित' के परिवार का व्यक्ति होने की कल्पना कर रहा है। तेरी आत्मा ने तुझे यह प्रोत्साहन दिया है, ओ तू जो सम्पूर्ण भूत एवं भविष्य के प्रभु से दूर चला गया है। निष्पक्ष निर्णय कर, रे भुजंगिनी! 'ईश प्रेरित' के बच्चों (शहीदों का सम्राट और शहीदों का प्रियतम) को तूने किस अपराध के कारण डसा और उनकी सम्पत्ति लूटी? क्या तूने उसे भी ठुकरा दिया जिसने तेरी रचना की और वह चरितार्थ हुआ। ऐसा बर्ताव तूने 'ईश प्रेरित' के बच्चों के साथ किया है, जैसा न तो आद ने हूद के साथ किया है न थामूद ने सालेह के साथ और न यहूदियों ने 'ईश्वर की चेतना' (ईसा) के साथ। क्या तू अपने प्रभु के उन चिह्नों का भी खण्डन करता है जो उसके धर्माकाश से जैसे ही उतरे, कि संसार की सभी 'पुस्तकों' ने उनके समक्ष नमन किया? चिन्तन कर, रे असावधान परित्यक्त! ताकि अपने कृत्य का तुझे भान हो। शीघ्र ही शुद्धि दण्ड के झोंके तुझे उसी तरह जकड़ लेंगे, जैसे तुझसे पहले उन्होंने दूसरों को गिरफ्त में ले लिया है। तैयार रह, रे तू जो दृश्य तथा अदृश्य के प्रभु ईश्वर के साथ साझेदार बना बैठा है। यह वह दिन है जिसकी घोषणा अपने 'प्रेरित' की वाणी के जरिये ईश्वर ने की है। विचार कर, ताकि सर्वदयामय ने जो कुछ कुरान और इस लिपिबद्ध पाती में प्रकट किया है, उसे तू समझ सके। यह वह दिन है जिसमें वह जो 'प्रकटीकरण का दिवास्रोत' है स्पष्ट प्रतीकों के साथ आया है जिन्हें कोई गिन नहीं सकता। यह वह दिन है जिसमें प्रत्येक बोधसम्पन्न व्यक्ति ने सृष्टि जगत में सर्वदयामय की सुरभि खोज ली है और प्रत्येक अन्तर्दृष्टियुक्त पुरूष राजाधिराज अपने प्रभु की दयालुता के सचेतन जलों की ओर सत्वर चला है। रे प्रमादी जीव! बलिदान (इस्माइल) की गाथा फिर दुहराई गई है और जिसे न्योछावर होना था वह अपने कदम बलिदान स्थली की ओर बढ़ाने के बाद लौटा नहीं है। और रे हठधर्मी विद्वेषी! इसका कारण वह है जो तेरे हाथ हुआ है क्या तूने यह कल्पना कर ली है कि शहादत से इस धर्म की अवनति हो जायेगी? नहीं, कभी नहीं उसकी सौगन्ध जिसे ईश्वर ने अपने धर्मप्रकाशन का आगार बनाया है, यदि तू उन जैसा हो जिनको बोध है। लानत हो तुझ पर, ओ तू जिसने परमेश्वर के साथ साझेदारी की है और लानत हो उन पर, जिन्होंने स्पष्ट चिह्न या सुस्पष्ट पुस्तक से रहित तुझे अपना नेता माना है। कितने अधिक आततायी तेरे पहले हुए जो ईश्वरीय प्रकाश को बुझाने के लिए उठे हैं और कितने सारे अधर्मी हुए जिन्होंने इतनी हत्यायें और लूटपाट की कि उनकी निर्दयता के कारण मानव हृदय कराह उठे! अत्याचार साक्षात् विद्वेष के सिंहासन पर आरूढ़ हो गया है, जिससे न्याय का सूरज

धुधंला पड़ गया है और फिर भी लोग समझ नहीं रहे हैं। अरे मूर्ख! 'प्रेरित' के बालकों को मार कर तू उनकी सामग्रियाँ लूट ले गया है। मैं पूछता हूँ: तेरी दृष्टि में उनकी सम्पत्तियाँ या क्या वे स्वयं थे, जिसने ईश्वर को नकारा? उचित निर्णय कर, रे मूढ़, जो एक परदे के द्वारा परमेश्वर से अलग है। न्याय को ठोकर मार कर तूने अत्याचार का पल्ला थाम लिया है, जिस पर सारी सृजित वस्तुएँ बिलख उठी हैं और फिर भी तू हठधर्मिता पर अड़ा है। वयोवृद्धों को तूने मृत्यु के मुख में धकेला और अल्पवयस्कों को लूटा है। क्या तू सोचता है कि तूने अन्याय से जो बटोरा है उसे तू भोग सकेगा? कदापि नहीं, मेरी सौगन्ध! यह सूचना तुझे वह देता है जिसे सबका संज्ञान हैं। जिन वस्तुओं पर तेरा अधिकार है उनसे तुझे लाभ नहीं होगा और न उनसे जिनका अपनी नृशंसता से तूने संग्रह किया है। इसकी साक्षी तेरा सर्वज्ञ प्रभु देता है। तू इस धर्म का प्रकाश बुझाने के लिए उठा है, किन्तु उसकी आज्ञा से तेरी ही आग बुझ जायेगी। वह वस्तुतः शक्ति एवं सामर्थ्य का स्वामी है। संसार के परिवर्तन और कौमों की ताकतें उसे विफल नहीं कर सकतीं। जैसी उसकी इच्छा होती है वह करता है और अपने प्रभुत्व से जैसा चाहता है निर्धारित करता है। ऊँटनी (सालेह व हूद से सम्बधित) का विचार कर। मात्र पशु होते हुए भी सर्वदयामय ने उसे इतना ऊँचा स्थान दिया है कि लोगों ने उसका उल्लेख और गुणगान किया। आसमानों में और धरती पर जो कुछ है वस्तुतः सभी पर उसका साया है। उस सर्वशक्तिमंत, महान के सिवा कोई ईश्वर नहीं है। इस तरह अपने शब्द-प्रकाश से हमने अपनी पाती के नभ मण्डल को सजाया है। धन्य है वह मनुष्य जो उनको प्राप्त हुआ और उनके प्रकाश से आलोकित हुआ है और धिक्कार उनको जिन्होंने 'उससे' मुँह फेर लिया और उसे नकार दिया और दूर भटक गया है। सर्वलोकनायक परमेश्वर की जय हो।''

ओ शेख! हमने तुझे बैकुण्ठ की बुलबुल का सुमधुर गुंजन सुनने का अधिकार दिया है और तेरे नेत्रों के समक्ष वे चिह्न अनावृत किये हैं जिनको अपनी आज्ञा से ईश्वर ने 'परम महान कारागार' में उतारा है, ताकि मेरी दृष्टि पुलकित और तेरी आत्मा पूर्णतः आश्वस्त हो जाये। वह सचमुच सर्वानुग्रहमय, उदार है। अतः उसके प्रमाण की शक्ति से तू अपने प्रभु, दयालु परमेश्वर के धर्म की सेवा के लिए उठ खड़ा हो। तेरी आस्था अगर भयाकुल हो, तो तू मेरी पाती को कस कर थाम और उसे विश्वास के वक्षस्थल में सुरक्षित रख और जब तू पुनरूत्थान स्थल में प्रवेश करे और परमात्मा तुझसे पूछें कि किस प्रमाण से तूने इस प्रकटीकरण में विश्वास किया है तब तू यह पाती बाहर निकाल और इस पवित्र, सबल, अनुपम पुस्तक से कहः ''इस पर सभी मेरी ओर अपने हाथ उठाएंगे और पाती को हाथों में पकड़ लेंगे और अपनी आँखे उस पर गड़ा देंगे और सर्वलोकाधीश्वर परमेश्वर की वापसी की उससे सुवास लेंगे। ईश्वर यदि इस धर्म प्रकाशन में विश्वास करने के लिए तुझे प्रताड़ित करे, तो फिर उनको वह किस कारण यातना देगा जिन्होंने 'ईश-प्रेरित' मुहम्मद में और

उनसे पहले मेरी के पुत्र ईसा में और उनके पूर्व उसमें जिसने ईश्वर से वार्तालाप किया था (मूसा) और उनसे भी पहले जो ईश्वर का मित्र है (अब्राहम) और बहुत पीछे उसमें जो सर्वसमर्थ, सर्वव्यापी तेरे प्रभु की इच्छा से रचित 'प्रथम अवतार' था, अविश्वास किया है। तुझसे पहले किसी के लिए हमने इस प्रकार अपने पद उतारे हैं। और पुनः उनको तेरे लिये आज के दिन याद किया है, ताकि तुझे समझ आये और तू उन जैसा बने जो सु-आश्वासित हैं। ओ तू जो ज्ञानवाणी का धारक है। यह धर्म इतना सुस्पष्ट है कि इसे मलिन नहीं किया जा सकता और इतना सुप्रकट है कि छिपाया नहीं जा सकता। यह अपनी सर्वोत्कृष्ट आभा में स्थित सूर्य के समान चमक रहा है। जब तक कोई विद्वेषी या संशयालु न हो, इसे कोई ठुकरा नहीं सकता।

इस समय हमारे लिए यह उचित है कि हम अपनी "अभिलाषा की ओर उन्मुख हों और इन परम उदात्त शब्दों पर ध्यान दें, हे प्रभु, मेरे परमेश्वर, प्रज्ञा के तेल से तूने अपने धर्म का दीपक प्रज्वलित किया है, प्रतिकूल हवाओं से इसकी रक्षा कर। दीपक तेरा है और चिमनी भी तेरी ही है और आसमानों तथा धरती की सभी वस्तुएँ तेरे अधिकार में हैं। शासकों को न्याय और धर्मगुरूओं को ईमानदारी प्रदान कर। सर्वसार्मथ्यवान है तू, जिसने अपनी लेखनी की गति से अपने अप्रतिरोध्य धर्म को सहायता और अपने प्रियजनों को उपयुक्त मार्गदर्शन दिया है। तू शक्ति का स्वामी और सामर्थ्य का सम्राट है। तुझ सबल, स्वच्छन्द के अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं है।" तू यह भी कह, "हे प्रभु मेरे परमेश्वर! तुझे मैं धन्यवाद अर्पित करता हूँ, क्योंकि तूने अपने नाम "स्वयंभू" के अनुग्रह रूपी करों से अपनी मुहरबन्द मदिरा का मुझे पान कराया है। तेरे प्रकटीकरण के दिवास्रोत के वैभव के जरिये और तेरे परमोदात्त शब्द की शक्ति से और तेरी परमोच्च लेखनी की सामर्थ्य से, जिसकी गति से सभी सृजित वस्तुओं के यथार्थ आनन्दविभोर हुए हैं, मैं तुझसे अनुनय करता हूँ कि तू महामहिम शाह को अपने धर्म को विजयी बनाने, अपने प्रकटीकरण के गगनांचल की ओर उन्मुख होने और अपने मुखमण्डल की कान्तियों की दिशा में अपनी दृष्टि टिकाने में सहायता प्रदान कर। हे मेरे प्रभु, अपने निकट आने में तू उनकी मदद कर। फिर धरती और आसमानों के आध्यात्मिक सैन्यदलों की सहायता उनको दे। ओ तू जो सभी नामों का स्वामी है और आसमानों का निर्माता है। मैं तेरे धर्म की ज्योति और तेरे प्रेमल सौजन्य के पद्म वृक्ष की अग्नि के जरिये तुझसे विनती करता हूँ कि अपने प्राणियों के बीच अपने धर्मप्रकाशन हेतु तू सम्राट की सहायता कर फिर अपनी कृपा, अपनी दया और अपने अनुग्रह के कपाट उनके नेत्रों के सम्मुख खोल दे। तू अपने शब्द से जो चाहे करने में समर्थ है। जैसे कि 'भव' से हो जाता है।"

ओ शेख! ईश्वर की शक्ति और उसकी दैवी सामर्थ्य से हमने अधिकार की बागडोर थामी थी, क्योंकि 'जो' समर्थ और सबल है केवल 'वही' थाम सकता है यह बागडोर। विद्रोह या उपद्रव भड़काने की किसी में ताकत नहीं थी। किन्तु अब, जब इस प्रेमपूर्ण सौजन्य और अनुग्रहों को महत्व नहीं दिया गया है तो अपने कर्मों के लिए आवश्यक प्रतिकार से वे पीड़ित होंगे और हुए हैं। प्रगति देखते हुए अधिकारियों ने मेरी विपत्तियों को चहुँ ओर से बढ़ा दिया। महान नगर (कॉन्स्टैन्टिनोपल) में उन्होंने बहुत से लोगों को इस 'पीड़ित' का विरोध करने के लिए भड़काया है। हालात यहाँ तक आ पहुँचे कि उस नगर में अधिकारियों ने इस तरह का आचरण किया है कि वहाँ की सरकार और वहाँ के लोग शर्मसार हो गए। एक प्रतिष्ठित सैय्यद जिनकी ईमानदारी, सर्वमान्य आचरण और व्यापारिक प्रतिष्ठा निष्पक्ष व्यक्ति स्वीकार करते थे और जिन्हें सभी अत्यधिक सम्मानित व्यापारी मानते थे उन्होंने एक बार बेरूत का भ्रमण किया। इस 'पीड़ित' के प्रति उनके मैत्रीभाव के विचार से फारसी दुभाषिए को तार द्वारा सूचना दी गई कि यह सैयद अपने सेवक की सहायता से धन और दूसरी वस्तुएँ चुराकर अक्का चला आया है। इस विषय में उनका षड़यन्त्र इस 'पीड़ित' को अप्रतिष्ठित करना था। फिर भी, इन अशोभनीय कथाओं के द्वारा इस देश के वासी सच्चाई और ईमानदारी के सहज मार्ग में प्रवृत्त होने से दूर ही रहे। संक्षेप में, हर दिशा से मुझ पर हमला किया जा रहा है और मेरी आपदाओं को पुनः प्रभावी बनाया जा रहा है किन्तु यह 'पीड़ित' जो इन दिनों प्रत्येक व्यक्ति की कृपापूर्वक सहायता करने के लिए एकमेव सच्चे परमेश्वर से विनती करता है दिन रात अपनी दृष्टि इन स्पष्ट शब्दों पर गड़ाये हुए, मैं गुनगुनाया करता हूँ: "हे प्रभु, परमेश्वर तेरी भव्यता के सूर्य और तेरे ज्ञान के सागर और तेरे न्याय के स्वर्ग के जरिये मैं तुझसे विनती करता हूँ कि तू उनकी सहायता कर जिन्होंने तेरे सम्मुख अपने पापों की अभिस्वीकृति से इन्कार किया है और जिन्होंने लौट कर न आने के लिए तुझसे मुँह फेर लिया है और जिन्होंने न्यायप्रिय तथा निष्पक्ष होते हुए भी तेरी निन्दा की है। उनकी सहायता कर, हे मेरे प्रभु, कि वे तेरे निकट वापस आयें और तेरी कृपा के द्वार के सम्मुख पश्चाताप करें। तू जो चाहे सो करने में सक्षम है और जो धरती पर तथा आसमानों में हैं उन सभी की लगामें तेरी मुट्ठी में है। सभी लोकों के प्रभु परमेश्वर की जय हो।"

वह समय निकट है, जब जो कुछ मानव हृदयों तथा मानवात्माओं में निहित है, वह प्रकट होगा। यह वह 'दिवस' है जिसे लुकमान ने अपने पुत्र के प्रति वह 'दिवस' कहा था जिसकी घोषणा महिमामय प्रभु ने की थी और जिसका परिचय उसने उसको जो उसका मित्र (मुहम्मद) था इन शब्दों के जरिये दिया था - उदात्त हो वह! "ओ मेरे पुत्र! ईश्वर प्रत्येक वस्तु को प्रकाश में लायेगा, चाहे वह सरसों के दाने भर वजन की हो अथवा किसी चट्टान

में या आसमानों में अथवा धरती के अन्दर छिपी हो, क्योंकि ईश्वर अतिसूक्ष्म से भी अवगत है।'' आज के दिन आँखों में धूल झोंकने वाले और जो कुछ मानव वक्षों में छिपा हुआ है वह सभी ज्ञेय बनाये गये है और उसके प्रकटीकरण के सिंहासन के सम्मुख खोल दिये गये हैं। जो भी हो उसके ज्ञान से बच कर भाग नहीं सकता। वह सुनता है और देखता है और वह सममुच सब सुनने वाला, सब देखने वाला है।'' यह कितनी विचित्र बात है कि विश्वासपात्रों और विश्वासघातियों के बीच पहचान नहीं की जा रही है।

कितना अच्छा होता कि फारस के महामहिम शाह - ईश्वर उनका प्रभुत्व अक्षय करें -इस देश में रह चुके सम्मानित फारस सरकार के वाणिज्यदूतों से पूछताछ करते, ताकि वह इस 'पीड़ित' के व्यवहार तथा गतिविधियों से परिचित हो जो संक्षेप में, उन्होंने अख्तर आदि बहुतेरों को भड़काया है और दुष्प्रचार में व्यस्त हैं। यह साफ और प्रत्यक्ष है कि विद्वेष की तलवारों और बैर की बरछियों से वे उस व्यक्ति को घेरेंगे, जिसे लोग मनुष्यों के बीच परित्यक्त और एक से दूसरे देश में निष्कासित हुआ जानते हैं। यह पहला अवसर नहीं है जब इस प्रकार अधर्म किया गया है, न पहला पात्र ही है जिसे जमीन पर पटक दिया गया है और न पहला परदा है जिसे सर्वलोकाधीश्वर परमात्मा की राह में दो टुकड़ों में फाड़ दिया गया है, तथापि यह 'पीड़ित' 'परम महान कारागार' में, अपने क्रियाकलापों में व्यस्त और ईश्वर के अतिरिक्त सभी से पूरी तरह निरासक्त रहता हुआ, शान्त और मौन रहा। अन्याय बढ़ कर इतना दारूण हो गया है कि संसार की लेखनियाँ उसका उल्लेख करने में असमर्थ हैं।

इस सम्बन्ध में निम्नांकित घटना का उल्लेख करना आवश्यक है, ताकि लोग न्याय और सत्यपराणता की डोर को मजबूती से पकड़ सकें। हाजी शेख मुहम्मद अली - सर्वदा शाश्वत परमेश्वर की भव्यता हो उन पर - अत्यन्त प्रतिष्ठित व्यापारी और महान नगर (कॉन्स्टैन्टिनोपल) के अधिकांश निवासियों में सुपरिचित थे। अधिक दिन नहीं हुए, जब कॉन्स्टैन्टिनोपल का फारसी दूतावास गुप्त रूप से उपद्रव भड़काने में लगा था। यह देखा गया कि यह आस्थावान एवं सत्यनिष्ठ व्यक्ति बहुत उद्विग्न हुआ अन्ततः एक रात वह समुद्र में कूद पड़े, लेकिन उसी क्षण संयोगवश उनके निकट आ गये किसी पथिक ने उनकी प्राण-रक्षा की। इसके कारण की विस्तृत रूप से समीक्षा की गई और विभिन्न लोगों ने भाँति-भाँति के अर्थ निकाले। इसके बाद, एक रात वह एक मस्जिद में गए और जैसी कि वहाँ के संरक्षक ने सचूना दी, उन्होंने सारी रात जागरण किया और भावविह्वल हो अश्रुपूरित आँखों से प्रातःकाल तक अपनी प्रार्थनाएँ तथा विनतियाँ करने में निमग्न रहे। जब उनकी प्रार्थना एकाएक बन्द हो गई, जब वह संरक्षक उनके पास गया तो उसने देखा कि उन्होंने अपनी आत्मा का समर्पण कर दिया है। एक खाली शीशी उनके निकट पड़ी मिली, जो

यह संकेत था कि उन्होंने विषपान कर लिया था। अत्यधिक आश्र्यचकित हो उस संरक्षक ने लोगों को यह समाचार दिया। यह पता चला कि वह दो वसीयतें छोड़ गये हैं। पहली में उन्होंने ईश्वर की एकता को मान्यता देते हुए स्वीकारा था कि उसकी 'सत्ता' का कोई जोड़ या समतुल्य नहीं है और उसका सार समस्त स्तुति, सारे महिमामण्डन तथा वर्णन से ऊँचा है। उन्होंने ईशदूतों और पावनात्माओं के धर्मप्रकटीकरण को भी प्रमाणित किया और मानवमात्र के प्रभु, ईश्वर की पुस्तकों में जो कुछ लिखा है उसे मान्यता दी। एक अन्य पृष्ठ पर, जिसमें उन्होंने एक प्रार्थना अंकित की थी, उपसंहार में उन्होंने ये शब्द लिखे "यह सेवक और ईश्वर के प्रियजन बहुत व्याकुल हैं। एक ओर तो परमोच्च की लेखनी ने सभी मनुष्यों को विद्रोह, कलह, संघर्ष में लिप्त होने से मना किया है और दूसरी ओर, उसकी लेखनी ने ये परमोदात्त शब्द प्रकट किए हैं "ईश्वरावतार की उपस्थिति में यदि कोई व्यक्ति किसी आत्मा का कोई दुर्भाव देखे तो वह उसका विरोध न करे, बल्कि उसे ईश्वर पर छोड़ दे। यह विचार करे कि, एक ओर यह बाध्यकारी आज्ञा स्पष्ट और दृढ़ता से स्थापित है और दूसरी ओर सुनने या सहने की मानव-क्षमता से परे झूठे आरोप लगाये गये हैं, इस सेवक ने यह घोर पाप करने का कदम उठाया। मैं विनयपूर्वक ईश्वरानुग्रह के महासागर और दिव्य दया के महाकाश की ओर उन्मुख होता हूँ और आशा करता हूँ कि अपनी कृपा और अनुग्रहभाव की लेखनी से वह इस सेवक के अपकर्मो को पोंछ डालेगा। मेरे सीमोल्लंघन चाहे अनेकानेक और मेरे कुकर्म चाहे अनगिनत हों, तो भी मैं उसके ही अनुग्रह की डोर कसकर थामता हूँ और उसकी ही उदारता के आंचल से चिपटता हूँ। ईश्वर साक्षी है और वे जो उसकी देहरी के निकट हैं, भली प्रकार जानते हैं कि यह सेवक विश्वासघातियों द्वारा कही गई कथाएँ सह नहीं पाया इसीलिए यह कृत्य मैंने कर डाला है। यदि वह मुझे दण्ड देगा तो वह जो करता है उसके लिये सचमुच प्रशंसा का ही पात्र होगा और अगर वह मुझे क्षमा कर देगा तो उसकी आज्ञा का पालन होगा।"

अब विचार कर, ओ शेख! ईश्वर के शब्दों के प्रभाव का ताकि तू निरर्थक मनोरथ से विमुख हो सके। इस 'पीड़ित' ने किसी के प्रति कपट का आचरण नहीं किया है और अपने प्राणियों के समक्ष ईश-शब्दों का उच्च स्वर से उद्घोष किया है। जो उसकी ओर उन्मुख होना चाहे वह उन्मुख हो और जो मुँह फेरना चाहे वह मुँह फेरे। किन्तु ये चीजें जो इतनी स्पष्ट, इतनी प्रत्यक्ष और असंदिग्ध हैं, यदि ठुकरा दी गई तो और क्या हो सकता है जिसे अन्तर्दृष्टिसम्पन्न मनुष्यों की दृष्टि में स्वीकार्य तथा विश्वास के योग्य माना जा सकता है। हम ईश्वर से - मंगलमय और महिमामंडित हो वह - प्रार्थना करते हैं कि वह पूर्वोक्त व्यक्ति (हाजी शेख मुहम्मद-अली) को क्षमा कर उनके दुष्कमों को सुकर्मों में बदल दे। वह वस्तुतः सर्वसमर्थ, सर्वशक्तिमान और सर्वानुग्रहमय है।

इस प्रकार की चीजें इस धर्म-प्रकटीकरण में दिखाई दी हैं कि ज्ञान-विज्ञान के प्रतिनिधियों या न्याय-निष्पक्षता के अवतारों के लिए उनको मानने के अतिरिक्त कोई दूसरा रास्ता नहीं है। इस दिवस में अलौकिक शक्ति के साथ उठना और ज्ञान की सहायता से विश्व के जनसमुदायों के संदेहों का निवारण करना तेरे लिए अत्यावश्यक है जिससे सभी मनुष्य पवित्र बन सकें और परमेश्वर के उद्देश्य के साथ दृढ़ता से बंध सकें।

मुझसे विमुख हुआ प्रत्येक व्यक्ति अपने ही सारहीन शब्दों से उलझा है और उसके प्रति आपत्तियों को स्वर दे रहा है जो परम सत्य है। कृपालु प्रभु! ईश्वरत्व के सम्बन्ध में पवित्रात्माओं तथा ईश्वर के प्रियजनों द्वारा किये गए उल्लेखों को अस्वीकृति और खण्डन का एक निमित्त बना लिया गया है। इमाम सादिक़ ने कहा है: ''दासभाव एक तत्व है। जिसका सार दैवत्व है।'' 'वफादार' के सेनापति (इमाम अली) ने आत्मा के सम्बन्ध में प्रश्न किये जाने पर एक अरब को यह उत्तर दिया: ''तीसरी है आत्मा जो दिव्य तथा अलौकिक है। यह एक दिव्य ऊर्जा, एक सरल और स्वयं पर निर्भर तत्व है।'' और उसके बाद उन्होंने कहा: ''अतः वही ईश्वर का परमोदात्त सार, कल्याणमयता का तरू, जिसके आगे कोई राह नही है वह 'पद्म वृक्ष', विश्रान्ति का उपवन है।'' इमाम सादिक ने कहा है: ''जब हमारा क़ाइम उठेगा तो धरती अपने प्रभु के प्रकाश से चमकेगी।'' इसी प्रकार एक दीर्घ पारम्परिक कथन में, जो अब आबिद अब्दुल्लाह का माना जाता है - शांतिलाभ हो उन्हें - ये लोकोत्तर शब्द मिलते हैं: ''इस पर वह जो सर्वसम्मोहक है - उदात्त और महिमामंडित हो वह - देवदूतों सहित बादलों से उतरेगा। और क़ुरान में कहा गया है ''इसके सिवाय कि ईश्वर उनके पास बादलों की छाया में उतरे, ऐसे लोग क्या आशा कर सकते हैं?'' और मुफज्जल के पारम्परिक कथन में यह उक्ति है: ''क़ाइम 'पुण्यस्थल' से अपनी पीठ टिकाएगा और अपना हाथ फैलायेगा और देखो, वह हिमधवल किन्तु अक्षत होगा।'' और वह कहेगा ''यह ईश्वर का हाथ, ईश्वर का दाहिना हाथ है जो ईश्वर से ईश्वर की आज्ञा से आया है।'' जिस किसी विधि से ये पारम्परिक कथन व्याख्यायित हुए हैं, उसी तरीके से उसे भी प्रतिपादित किया जाये जिसे परमोदात्त लेखनी ने प्रस्तुत किया है। 'वफादार' के सेनापति (इमाम अली) ने कहा है: ''मैं वह हूँ जिसे नाम नहीं दिया जा सकता और न जिसको बताया जा सकता है। और इसी प्रकार उन्होंने कहा है ''बाहर से मैं एक इमाम हूँ किन्तु भीतर से अदृश्य, अज्ञेय हूँ।'' अबू-जफ़र-ए-तुसी ने कहा, मैंने अबू अब्दुल्लाह से कहा: ''आप ईश्वर की पुस्तक में उल्लिखित मार्ग हैं और आप 'ईश्वर के शीर्ष हैं' और आप ही तीर्थयात्रा।'' उन्होंने उत्तर दिया: ''ऐ आदमी, हम ईश्वर की पुस्तक में उल्लिखित 'मार्ग' है - उदात्त और महिमामंडित हो वह - और हम 'शीर्ष' हैं'' और हम उपवास हैं और हम

तीर्थयात्रा हैं और हम पवित्र माह हैं और हम पवित्र नगर हैं और हम ईश्वर के काबा हैं और हम ईश्वर के 'आराधना बिन्दु' हैं और हम ईश्वर का मुखड़ा हैं। जबीर ने कहा है कि अबू जफर ने उनसे ये शब्द कहे थे। ''ओ जबीर! विवरण पर और अर्थो पर ध्यान दो।'' उन्होंने आगे कहा: ''बयान जो है वह ईश्वर की - महिमामंडित हो वह - तेरी इस मान्यता में कि उसका कोई समानधर्मी नहीं और उसके प्रति तेरे भक्तिभाव में और उसका साझीदार बनने की तेरी अस्वीकृति में है।'' 'मायने' जो है, तो हम हैं उसका अर्थ और उसका पक्ष और उसका हाथ और उसकी वाणी और उसका हेतु और उसकी प्रभुता और उसका ज्ञान और उसका हक। हम अगर किसी वस्तु की इच्छा करते हैं तो वह ईश्वर ही है जो उसकी इच्छा कर रहा है और वह वही चाहता है जो हम चाहते हैं। ''इसके अतिरिक्त, वफादार के सेनापति (इमाम अली) ने कहा है: ''उस प्रभु की उपासना मैं कैसे करूँ जिसे मैंने देखा ही नहीं हैं?'' और एक अन्य संदर्भ में वह कहते है: ''किसी वस्तु का मुझे इसके सिवाय बोध नहीं हुआ है कि मैंने ईश्वर को उसके पीछे, और ईश्वर को उसके साथ देखा।''

ओ शेख! इन बातों पर मनन कर जिनका उल्लेख किया गया है, ताकि तू उसके नाम की शक्ति से जो स्वयंभू है 'मुहरबंद मदिरा' का आचमन कर ले और वह प्राप्त कर ले जिसे समझने में कोई समर्थ नहीं है। प्रयास की कमर कस ले और परम लोकोत्तर साम्राज्य की ओर उन्मुख हो, ताकि तुझे 'प्रकटीकरण' और प्रेरणा की सांसों का, जैसे वे मुझ पर उतरी है, बोध हो और वे तुम्हें प्राप्त हो जायें। मैं सत्य ही कहता हूँ: प्रभुधर्म का समतुल्य या समानधर्मी न आज है और न कभी रहा है। थोथी कल्पनाओं के परदे चीर डाल। अपनी कृपा के चिह्नस्वरूप वह सचमुच तुझे सम्बलित करेगा और तेरी सहायता करेगा। वह वास्तव में सबल, सर्ववशकारी, सर्वशक्तिमान है। अभी भी समय है और मंगलमय 'पद्म वृक्ष' अब तक मनुष्यों को उच्च स्वर से पुकार रहा है, तू अपवंचन की हानि न उठा। ईश्वर में अपना विश्वास रख और अपने कामकाज उसे सौंप दे और फिर परम महान कारागार में प्रवेश कर ताकि तू उसे सुन सके जिसे किसी ने नहीं सुना है और उसे निहार सके जिसे किसी ने कभी नहीं देखा है। इस प्रकार के विवरण के बाद क्या संदेह की कोई गुंजाइश रह सकती है? कदापि नहीं, ईश्वर की सौगन्ध, जो अपने धर्म के चतुर्दिक खड़ा है। मैं सच कहता हूँ इस दिन कल्याणकारी शब्दों ''किन्तु वह, 'ईश्वर का प्रेरित' और 'ईश्वर की मुद्रा है'' को पद ''वह दिन जब मानवजाति सर्वलोकों के अधीश्वर के सम्मुख खड़ी होगी'' में अपनी परिपूर्ति प्राप्त हुई है। इतने महान अनुग्रह के लिए तू ईश्वर को धन्यवाद अर्पित कर।

ओ शेख! धर्मप्रवर्तन के समीरों को कभी दूसरी बयारों के साथ मिलाया नहीं जा सकता। वह 'पद्म वृक्ष' जिसके पार कोई राह नहीं है अनगिनत फलों से लदा तेरे सामने खड़ा है। निष्प्रयोजन मनोरथों से तू अपने आपको मलिन मत कर, जैसा कि पहले दूसरों ने किया है। यह वचन स्वतः प्रभुधर्म की सच्ची प्रकृति का घोष करते है। वही सभी वस्तुओं का साक्षी है। अपने धर्म प्रकाशन की सत्यता दर्शाने के लिए वह किसी पर निर्भर नहीं है और न रहा है। दीप्तिमान पदों एवं सुस्पष्ट शब्दों से पूर्ण लगभग एक सौ ग्रन्थ उसकी इच्छा के व्योम से उतारे जा चुके हैं और सभी को उपलब्ध हैं। अब तेरी बारी है कि तू 'परम लक्ष्य', 'सर्वोपरि साध्य' और 'परमोदात्त शिखर' की ओर कदम बढ़ा ताकि सर्वलोकेश्वर परमात्मा ने जो कुछ व्यक्त किया है उसे तू सुन और प्रत्यक्ष देख सके।

"दिव्य उपस्थिति" से सम्बन्धित पदों का तनिक मनन कर, जिन्हें नाम जगत के प्रभु ने क़ुरान में उतारा है, ताकि सम्भवतः तू सत्य मार्ग को खोज ले और उसके प्राणियों के मार्गदर्शन का एक साधन बन जाये। इस दिन तेरे जैसे व्यक्ति का इस धर्म की सेवा के लिए उठ खड़ा होना अत्यन्त आवश्यक है। इस 'पीड़ित' का अनादर और तेरा गौरव दोनों तिरोहित हो जायेंगे। प्रयास कर कि भाग्यवश तू ऐसा कर्म सम्पादित कर ले जिसकी सुवास धरा से कभी न मिटे। 'दिव्य व्यक्तित्व' के सम्बन्ध में जो कुछ प्रकट किया गया है उसका खण्डन या परित्याग कोई प्रतिवादी नहीं कर पाया है और न आज कर सकता है। वह कहता है "वह ईश्वर है जिसने स्तम्भ विहीन आसमानों को निर्मित किया है जिनकों तू देख नहीं सकता, फिर वह अपने सिंहासन पर आरूढ़ हुआ और सूर्य तथा चन्द्रमा पर नियम आरोपित किये: प्रत्येक अपने निर्धारित लक्ष्य की यात्रा करते हैं। सभी वस्तुओं को वह आदेश देता है। वह अपने चिह्नों को स्पष्ट करता है ताकि तुम अपने प्रभु की विद्यमानता में दृढ़ आस्था रख सको। यह भी कहता है वह: "जो ईश्वर का सान्निध्य प्राप्त करने की आशा करते हैं, उसके लिये ईश्वर का निर्धारित समय निश्चित ही आयेगा। और वह श्रोता, ज्ञाता है।" और आगे वह वह कहते हैं "वे जो ईश्वर के चिह्नों में विश्वास नहीं करते हैं, अथवा यह कि उसका सान्निध्य कभी प्राप्त नहीं करेंगे, वे मेरी दयालुता से निराश होंगे और एक दारूण शुद्धि दण्ड इनकी प्रतीक्षा में है।" और इसी प्रकार वह कहते हैं: "कितना विलक्षण! जब हम धरती में छिपे पड़े होंगे तो क्या हम एक नई रचना बनेंगे? हाँ, वे नकारते हैं कि वे अपने प्रभु का सान्निध्य प्राप्त करेंगे।" और इसी प्रकार वह कहता है: "वे सचमुच अपने प्रभु की उपस्थिति में संदेह करते हैं। वह वस्तुतः सभी वस्तुओं पर छाया हुआ है।" और इसी भाँति वह कहते हैं: "वस्तुतः जो हमारा सान्निध्य प्राप्त करने की आशा नहीं करते हैं और इस लौकिक जीवन से संतुष्टि प्राप्त करते हैं और उसी पर

टिकते हैं और जो हमारे चिह्नों के प्रति उदासीन हैं - ये! इनके कर्मों के प्रतिफल में इनका निवास स्थान आग है।'' और इसी प्रकार वह कहते हैं - ''लेकिन जब हमारे स्पष्ट चिह्न उनको पढ़ कर सुनाये जाते हैं तो वे जो हमारा सान्निध्य प्राप्त करने को उत्सुक नहीं हैं, कहते हैं, ''इससे भिन्न कुरान लाओ, अथवा इसी में कुछ परिवर्तन करो।'' ''सुनो: उसे बदलना मेरा काम नहीं है, क्योंकि मेरी अपनी आत्मा यही जानती है। मैं केवल उसका अनुसरण करता हूँ जो मुझ पर प्रकट हुआ है: यदि मैं अपने प्रभु से विद्रोह करूँ तो, मैं इस महादिवस के दण्ड से डरता हूँ।'' और इसी प्रकार वह कहते हैं: ''तब हमने मूसा की पुस्तक दी - उसके लिए पूर्ण जो उचित करे और सभी विषयों के लिए एक निर्णय और एक मार्गदर्शन और एक दयालुता, ताकि वे अपने प्रभु की विद्यमानता में विश्वास कर सके।'' और इसी प्रकार वह कहते हैं ''वे वहीं हैं जो प्रभु के चिह्नों में विश्वास नहीं करते, या यह कि कभी उसका सान्निध्य प्राप्त करेंगे। अतः, उनके कार्य व्यर्थ हैं और पुनरूत्थान दिवस पर हम उन्हें कोई महत्व नहीं देंगे। यही उनका प्रतिफल होगा - नरक। क्योंकि वे अनास्थावान रहे, और मेरे चिह्नों तथा मेरे दूतों के प्रति अनादर का भाव दिखलाते रहे।'' और इसी प्रकार वह कहते हैं ''क्या मूसा का इतिहास तुम तक पहुँचा है? जब उन्होंने आग देखी और अपने परिवार से कहा, 'तुम लोग यहीं ठहरो, क्योंकि मैं एक आग देख रहा हूँ। भाग्यवश मैं तुम्हारे लिए उससे एक नई वस्तु ले आऊँ, अथवा उस आग पर मार्गदर्शन मिल जाये और जब वह उसके निकट आये, तो उनको पुकारा गया, 'ओ मूसा! वस्तुतः मैं तुम्हारा प्रभु हूँ; अतः अपने जूते उतार दे, क्योंकि तू जोबा की पवित्र घाटी में है और मैंने तुझे चुना है। तो तू उसे सुन जो प्रकट किया जायेगा। वस्तुतः, मैं ईश्वर हूँ, मेरे सिवा कोई ईश्वर नहीं है। अतः, मेरी आराधना कर'' और इसी तरह वह कहते हैं ''क्या उन्होंने अपने मन में यह विचार नहीं किया है कि ईश्वर ने धरती तथा आसमानों को और वह सब जो उनके बीच है मात्र एक उद्देश्य और एक नियत अवधि के लिए नहीं रचा है? लेकिन सचमुच अधिकांश व्यक्ति यह विश्वास नहीं करते हैं कि उनको अपने प्रभु का सान्निध्य प्राप्त होगा।'' और इसी प्रकार वह कहते हैं: ''क्या उनके पास कोई विचार नहीं है कि उनको उस 'महादिवस' के लिए पुनः जीवित किया जायेगा। वह दिवस जब मानवजाति सर्वलोकों के प्रभु के सम्मुख खड़ी होगी।'' और इसी भाँति वह कहते हैं ''इसके पहले हमने मूसा को पुस्तक दी। हमारा सान्निध्य प्राप्त करने के विषय में तुझे कोई सन्देह तो नहीं है?'' और कहते हैं: ''अरे हाँ! लेकिन धरती को जब कुचल-कुचल कर पार कर जायेगा और तेरा प्रभु तथा दल पर दल देवदूत आएंगें'' और इसी भाँति वह कहते हैं ''ईश्वरीय प्रकाश को वे अपने मुखों से बुझाने को तत्पर होंगे। किन्तु अधर्मी उससे द्वेष

करते हैं, पर ईश्वर अपने प्रकाश को परिपूर्ण करेगा।'' और इसी तरह वह कहते हैं ''और जब मूसा ने वह अवधि पूरी कर ली और अपने परिवार के साथ यात्रा कर रहे थे, तो पर्वत की ओर उन्हें एक आग का बोध हुआ। अपने परिवार से उन्होंने कहा ''तुम लोग ठहरो, क्योकि मैं एक आग देख रहा हूँ। भाग्यवश मैं उससे तुम्हारे लिए एक सुसमाचार या उस आग से तुम्हें गरमाने की कोई नई वस्तु ले आऊँ। और जब वह उसके निकट आये तो उस पवित्र स्थल में घाटी के दाहिने उस झाड़ी में से एक आवाज ने उनसे उच्च स्वर से कहा ''ओ मूसा, मैं सचमुच ईश्वर हूँ, सभी लोकों का प्रभु।''

सभी दैवी पुस्तकों में ''दिव्य अस्तित्व'' के वचन का सुस्पष्ट उल्लेख हुआ है। इस ''अस्तित्व'' से तात्पर्य है उसकी उपस्थिति, जो चिह्नों का दिवास्रोत और स्पष्ट प्रतीकों का उदयस्थल और उत्कृष्ट नामों का प्रकट स्वरूप और सच्चे प्रभु की प्रवृत्तियों का स्रोत है, उदात्त हो उसकी महिमा! अपने स्वत्व तथा सारभूत स्वरूप में ईश्वर सदैव अगोचर, अगम्य और अज्ञेय रहा है अतः उपस्थिति का अर्थ उसकी उपस्थिति है जो मनुष्यों के बीच उसका प्रतिनिधि है। इसके अतिरिक्त उसका कोई समतुल्य या समानधर्मी न तो था और न है। क्योंकि उसका यदि समतुल्य या समानधर्मी होता, तो यह कैसे दर्शाया जाता कि सारी तुल्यता तथा सादृश्य में उसकी सत्ता ऊँची और उसका तत्व निर्मल है? संक्षेप में, ईश्वर के धर्म के प्रकाशन तथा विद्यमानता के सम्बन्ध में 'किताब-ए-ईक़ान' में जो कुछ व्यक्त किया गया है वह निष्पक्ष मन-मस्तिष्क वालों के लिए पर्याप्त है। हम उससे प्रत्येक व्यक्ति को सत्यपरायणता का सार बनने और उसके निकट आकृष्ट होने की सहायता प्रदान करने की विनती करते हैं। वह वस्तुतः शक्ति और सामथ्र्य का स्वामी है। उस सर्वश्रोता, वाणी के स्वामी, सर्वशक्तिमान, सर्वस्तुत्य के अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं है।

ओ तू जो अपनी विद्वता के लिए प्रख्यात है! लोगों से वह करने को कह जो प्रशंसनीय है और उन जैसा मत बन जो प्रतीक्षा करते रहते हैं। तू सजग दृष्टि से निरीक्षण कर। सत्य-सूर्य, वाणी जगत के प्रभु और ज्ञान-गगन के सम्राट की आज्ञा से कारानगर अक्का के क्षितिज पर उद्दीप्त प्रभा के साथ चमक रहा है। अस्वीकृति से उस पर परदा नहीं पड़ पाया है और उसके विरूद्ध उठ खड़े हुए दस हजार सैन्य दल अपनी कान्ति बिखेरने से उसे रोक नहीं पाये हैं। अब तुम्हारी कोई सफाई नहीं चलेगी। तुम या तो उसे पहचान लो या ईश्वर करे, उठो और सभी अवतारों को नकार दो।

ओ शेख! शिया सम्प्रदाय पर विचार करो। निरर्थक मनोरथों तथा व्यर्थ कल्पनाओं के हाथों कितने सारे भवन उन्होनें निर्मित किये और कितने अधिक नगर बनाये। अन्ततः वे व्यर्थ कल्पना गोलियों में बदल गयीं और निशाना वह बना जो इहलोक का 'राजकुँवर'

है। उसके धर्मप्रकाशन के 'दिवस' में उस सम्प्रदाय के अगुवाओं में एक भी व्यक्ति ने उसको नहीं स्वीकारा। जब-जब उसके नाम की चर्चा हुई, सब कहा करते: "ईश्वर के आगमन का आनन्द जल्दी आये।" किन्तु उस सत्य-सूर्य के प्रकटीकरण के दिन सभी ने, जैसा देखा गया, चिल्ला कर कहा है "ईश्वर उसे शीघ्र दण्डित करें!" उसे जो सत्ता का सार और गोचर-अगोचर का प्रभु था, उसे उन्होंने अधिकार वंचित कर दिया और वह किया जिससे 'पाती' रो पड़ी, 'लेखनी' कराह उठी, सच्चे जनों का आर्तनाद फूट पड़ा, और ईश्वर के प्रिय जनों ने अश्रुपात किये।

सोचो, ओ शेख, और अपनी कथनी में ईमानदार रहो। शेख-ए-अहसाई (शेख अहमद) के अनुयायियों ने ईश्वर की सहायता से उसे समझा है, जो दूसरों के परिज्ञान के लिए ढंका रहा और जिससे वे वंचित रह गए। संक्षेप में, हर काल एवं सदी में, धर्म प्रकटीकरण के दिवास्रोतों और प्रेरणा के उदयस्थलों और दिव्य ज्ञान के आगारों के प्राकट्य दिवसों में भेदभाव उठे हैं, जो मिथ्यावादी अधर्मी व्यक्तियों द्वारा उत्पन्न किये और उकसाये गए हैं। इसे विस्तार से प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है। शंकालुओं की व्यर्थ कल्पनाओं तथा अंधविश्वासों से तू स्वयं ही सुपरिचित है।

आज की तारीख में, यह 'पीड़ित' तुझसे और अन्य धर्मगुरूओं से जिन्होंने ईश्वरीय ज्ञान का प्याला पिया है और न्याय रूपी दिवाकर के कान्तिमान शब्दों से जो आलोकित है, अनुरोध करता है कि किसी को बताये बगैर एक व्यक्ति को निश्चित कर इन क्षेत्रों में भेजें और थोड़े से समय के लिए उसे साइप्रस द्वीप में मिर्जा याह्या के सम्पर्क में रहने दें, तो वह सम्भवतः इस धर्म के मूलभूत सत्य और दैवी नियमों तथा आज्ञाओं के स्रोत से अवगत हो जाये।

यदि तू थोड़ा मनन् करे तो ईश्वर की प्रभुता, शक्ति और प्रज्ञा की साक्षी देगा। कतिपय व्यक्ति जो इस धर्म से अनभिज्ञ थे और हमसे नहीं मिले उन्होंने इन असावधान जनों के पाखण्ड को प्रमाणित किया है। अब अगर तुम प्रयास करो तो इस धर्म की सत्यता मानवजाति पर प्रकट हो जाये और यह समुदाय इस दुःखद और दमनकारी अंधकार से मुक्त हो जाये। बहा के अतिरिक्त और कौन मनुष्यों के समक्ष बोल सकता है और उसे छोड़कर किसमें उसका उद्घोष करने की शक्ति हो सकती है जिसके लिए उसे 'जनसमूहों के प्रभु' की आज्ञा प्राप्त हुई है?

यह प्रमाद लिप्त "रौदा खानी" (इमाम हुसैन के लिए परम्परागत शोक प्रदर्शन) की परिपाटी से चिपटा है वह - ईश्वर की सौगंध खाकर कहता हूँ मैं - प्रत्यक्ष भ्रांति में है,

क्योंकि इस समुदाय का विश्वास यह है कि काइम के धर्मप्रकाशन के दौरान इमाम अपनी कब्रों से निकल आये हैं। यह वास्तव में सत्य है और इसके बारे में कोई संदेह नहीं है। हम ईश्वर से अंधविश्वासियों को सुनिश्चित की गई प्राणवंत जलधाराओं का एक अंश प्रदान करने की विनती करते हैं जो 'परमोदात्त लेखनी' के अजस्रोत से प्रवाहित हो रही है। ताकि इन दिनों जो उचित है, सब लोग उसी को प्राप्त हों।

ओ शेख! विपत्तियों से घिरा होकर यह 'पीड़ित' इन शब्दों को लिपिबद्ध करने में लगा है। चारों ओर दमन और अत्याचार की लपट देखी जा सकती है। एक ओर हमें ये समाचार मिले हैं कि हमारे प्रियजनों को ता (तेहरान) भूमि में कैद किया गया है और इसके बावजूद कि सूर्य, चन्द्रमा, धरती और सागर सभी प्रमाणित करते हैं कि यह समुदाय वफादारी के आभूषण से अलंकृत है और जिससे शासन का उत्कर्ष और राष्ट्र में व्यवस्था का रखरखाव तथा प्रजाजनों की प्रशान्ति सुनिश्चत हो सकती है। इसके अतिरिक्त किसी को उसने अंगीकार नहीं किया है और न करेगा।

हमने बारम्बार कहा है कि कुछ वर्षों से हमने महामहिम शाह को अपनी सहायता प्रदान की है। वर्षों से फारस में कोई अप्रिय घटना नहीं हुई है। विभिन्न सम्प्रदायों के बीच विद्रोह भड़काने वालों की लगामें मजबूती से राजसत्ता की मुट्ठी में थमी है। अपनी सीमाओं का किसी ने उल्लंघन नहीं किया है। ईश्वर की सौगन्ध! यह समुदाय उत्पात करने को कभी प्रवृत्त नहीं हुआ है और न आज है। उसके हृदय ईश-भय के प्रकाश से ज्योतित और उसके प्रेम के अलंकरण से सज्जित हैं। उसकी चिन्ता विश्व के सुधार की है और रही है उसका उद्देश्य भेदभावों का उन्मूलन और द्वेष तथा वैर की अग्नि का शमन है, जिससे सम्पूर्ण धरा एक देश जैसी दिखाई देने लगे।

दूसरी ओर, 'महान नगर' (कॉन्स्टैन्टिनोपल) के फारसी दूतावास के अधिकारी जोश-ओ-खरोश के साथ इन पीड़ित जनों को विनष्ट करने का प्रयास कर रहे हैं। वे कुछ चाहते हैं और ईश्वर की इच्छा कुछ और है। अब विचार करो कि हर भूमि में ईश्वर के विश्वस्त जनों पर क्या गुजरा है। कभी उन पर चोरी और तस्करी के आरोप लगे हैं तो कभी इस प्रकार के मिथ्या आरोपों जिनका प्रतिरूप इस संसार में तो नहीं है। तू ईमानदारी से उत्तर दे। अपने ही प्रजाजनों के खिलाफ फारसी दूतावास द्वारा लगाये गये चोरी के आरोप के विदेशों में कैसे परिणाम हुए? अगर यह 'पीड़ित' लज्जित हुआ तो इस सेवक पर थोपे गये अपमान के कारण नहीं बल्कि इस लज्जा से कि विदेशी राजदूतों को ज्ञात हो गया कि फारसी दूतावास के कई प्रमुख अधिकारी कितने अकुशल और नादान हैं। "अपने मिथ्यारोप तू उनके सम्मुख उछालता है जिनको एकमेव सच्चे परमेश्वर ने अपने सातवें मण्डल की निधियों का न्यासधारी बनाया हैं?" संक्षेप में, जो इस उदात्त पद का अधिकारी है उसके माध्यम से परम लोकोत्तर दर्जों को खोजने और उसका परामर्श प्राप्त करने के

बजाय वे उसका प्रकाश बुझाने में लगे हैं। किन्तु जैसी सूचना मिल रही है उसके अनुसार माननीय राजदूत मिर्जा मोहसिन खान उस समय कॉन्स्टैन्टिनोपल में नहीं थे। इस प्रकार की घटनाएँ इसलिए हुई हैं क्योंकि यह विश्वास था कि फारस के महामहिम शाह उन लोगों से नाराज थे जो 'प्रज्ञा के देवालय' के सानिध्य में आए हैं और उनकी परिक्रमा की है। ईश्वर भलीभाँति जानता और प्रमाणित करता है कि यह 'पीड़ित' मजबूती के साथ उससे बंधा रहा है जो शासन एवं प्रजा दोनों के गौरव का संवाहक है। वस्तुतः ईश्वर पर्याप्त साक्षी है।

बहाजनों का वर्णन करते हुए 'परमोदात्त लेखनी' ने ये शब्द प्रकट किये हैं: ''ये वस्तुतः वे मनुष्य हैं जो शुद्ध स्वर्ण के नगरों में आकर भी उन पर ध्यान नहीं देंगे और सर्वाधिक लावण्यमयी तथा परम मनोहर स्त्री के सम्पर्क में आने पर भी उससे मुँह फेर लेंगे।'' उसकी ओर से जो 'परामर्शदाता' सर्वदर्शी है, 'परमोदात्त लेखनी' द्वारा बहाजनों के लिए यही प्रकट किया गया है। पेरिस के महामहिम सम्राट (नेपोलियन तृतीय) के प्रति पाती के समापन में ये उदात्त शब्द प्रकट किये गये हैं: ''तू क्या अपने खजानों पर उल्लसित हो रहा है, यह जानते हुए भी कि ये नष्ट हो जायेंगे? क्या तू इसमें आनन्द मना रहा है कि तू धरती के एक टुकड़े पर शासन करता है, जबकि बहाजनों की दृष्टि में सारे संसार की कीमत एक निर्जीव चींटी की आँख के तिल जितनी ही है? उसे उनके लिये छोड़ दे जिनका उन पर अनुराग हो और तू उसकी ओर मुड़ जो जगत का इष्ट है।''

केवल ईश्वर को - उदात्त हो उसकी महिमा - उन चीजों का संज्ञान है जो इस 'पीड़ित' पर आ पड़ी है। कॉन्स्टैन्टिनोपल के दूतावास पर, हमारे विरूद्ध गढ़ी गई कहानियों की हर रोज एक नई सूचना पहुँचती है। कृपालु प्रभु! उनके कुचक्रों का समग्र लक्ष्य इस सेवक को पूर्णतया विनष्ट करना है। किन्तु यह तथ्य वे भूल गये हैं कि ईश्वर की राह में तिरस्कार ही मेरा सच्चा गौरव है। समाचार पत्रों में यह लिखा गया है: ''अक्का के कुछ निर्वासितों के साथ के छल-कपट पूर्ण व्यवहार और अनेक लोगों के प्रति उनके द्वारा किये गये अत्याचारों, इत्यादि के विषय में लिखा गया है.....'' उनके प्रति जो न्याय के प्रतिनिधि और निष्पक्षता के दिवास्रोत हैं, लेखक का इरादा सुस्पष्ट और उसका प्रयोजन साफ है। संक्षेप में, वह उठा और मुझे उसने भाँति-भाँति की विपदाओं से आक्रांत किया और मेरे साथ अन्याय तथा निष्ठुरता का बर्ताव किया। ईश्वर की सौगंध! 'परमोदात्त निवासस्थल' के लिए भी यह 'पीड़ित' इस निर्वासन स्थान का सौदा नहीं करेगा। अन्तर्दृष्टि सम्पन्न मनुष्यों की दृष्टि में ईश्वर की राह में चाहे जो आ पड़े वह प्रत्यक्ष गौरव और सर्वोपरि सिद्धि होती है। पहले भी हमने कहा है: ''महिमा हो तेरी, मेरे परमेश्वर !'' ''यदि वे दुःख

न होते जो तेरे पथ में सहने पड़ते हैं तो तेरे सच्चे प्रेमी कैसे पहचाने जाते, और यदि वे संकट न होते जो तेरे प्रेम के कारण उठाने पड़ते हैं तो, तेरी चाह रखने वालों के पद कैसे प्रकट होते?''

इतना निरादर किया गया है कि वे नित्यप्रति नए-नए मिथ्यारोपों का प्रचार करते हैं। परन्तु इस 'पीड़ित' ने मुनासिब धैर्य धारण किया है। कितना अच्छा होता कि फारस के महामहिम शाह, जो कुछ हम पर कॉन्स्टैन्टिनोपल में गुजरा उन चीजों की सूचना मंगवाते, ताकि वह वास्तविक तथ्यों से पूर्णतया अवगत हो जाते। ओ शाह! दयामय परमेश्वर तेरे प्रभु के वास्ते मैं तुझसे निष्पक्ष दृष्टि से इस मामले की छानबीन करने का अनुनय करता हूँ। क्या कोई न्यायपरायण व्यक्ति मिलेगा जो आज उसके अनुसार निर्णय दे जिसे ईश्वर ने अपनी पुस्तक में प्रकट किया है? कहाँ है वह निष्पक्ष व्यक्ति जो स्पष्ट चिह्न या प्रमाण के बगैर हम पर ढ़ाये गये अत्याचार पर सम्यक विचार करे?

ओ शेख! मनुष्यों के व्यवहार पर मनन करो। ज्ञान और विवेक नगरों के संवासी मन ही मन यह प्रश्न करते हुए बहुत हैरान हैं कि ऐसा क्यों है कि शिया सम्प्रदाय ने जो धरती के समस्त जनसमुदायों में अपने आपको सर्वाधिक विद्वान, सर्वाधिक सदाचारी और परम धर्मनिष्ठ मानता हैं, उसके धर्मप्रकाशन के दिवस में मुँह फेर लिया है और ऐसी नृशंसता दर्शायी है जैसी कभी देखी सुनी नहीं गई है। यह अत्यावश्यक है कि तू इस पर तनिक विचार कर। इस सम्प्रदाय के आरम्भ से आज तक कितने अधिक धर्माचार्य हो गये हैं, जिनमें से कोई इस प्रकटीकरण की प्रकृति का संज्ञाता नहीं हुआ है। इस हठधर्मिता का कारण क्या हो सकता है? यदि हम इसका उल्लेख करें तो, उनके अंग प्रत्यंग विदीर्ण हो जायेंगे। अतः यह आवश्यक है कि एक हजार साल चिन्तन करें, ताकि भाग्यवश वे ज्ञान सागर की एक बूँद प्राप्त कर लें और उन चीजों को ढँढ़ लें जो इस दिन उनको विस्मृत है।

मैं ता (तेहरान) में विचरण कर रहा था, जो तेरे प्रभु के चिह्नों का दिवास्रोत हैं। तभी देखो, मैंने प्रवचन-मंचों का हाहाकार और परमेश्वर के प्रति विनती का स्वर सुना: ''हे जगदीश्वर और राष्ट्रों के स्वामिन्! तू हमारी दशा और अपने सेवकों की क्रूरता के कारण हम पर आ पड़ी मुसीबतें देख रहा है। अपने महिमामण्डन तथा स्तुति के लिए तूने हमें रचा है। हम पर हठधर्मी जिसका उद्घोष कर रहे हैं उसे तू सुन ही रहा है। तेरे सामथ्र्य की सौंगंध! हमारी आत्माएँ द्रवीभूत हैं और हमारे अंग काँप रहे हैं। हा, हन्त! कितना अच्छा होता कि तूने हमें रचा ही न होता।''

उन शब्दों से उनके हृदय चुक गए हैं जिन्होंने ईश्वर का सामीप्य लाभ लिया है और जो उसके प्रति समर्पित हैं। इनके आर्तनाद उनसे उठे हैं। ईश्वर के निमित्त बारम्बार हमने प्रख्यात धर्मोपदेशकों को चेतावनी दी है और "परमोदात्त क्षितिज" की ओर उनका आह्वान किया है, ताकि उसके प्रकटीकरण के दिनों में वे उसकी वाणी के महासिन्धु से अपने अंश प्राप्त कर सकें जो 'जगत का इष्ट' है।

हमारी अधिकांश पातियों में उसकी दयालुता के स्वर्ग से यह परम गुरूतर सदुपदेश उतारा गया है: "ओ शासकों तथा धर्मगुरूओं के समूह! अपने कान अक्का के क्षितिज से पुकारती आवाज पर लगाओ। वह वस्तुतः सम्यक रूप से तुमको आगे बढ़ने में सहायता देगा और तुमको उसके निकट ले जायेगा और उस स्थान की ओर तुम्हारे पगों का संचालन करेगा जिसको ईश्वर ने अपने प्रकटीकरण का दिवास्रोत और अपने वैभवों का उदयस्थल बनाया है। ओ विश्वजनों! वह जो "परम महान नाम है, पुरातन सम्राट की ओर से आ गया है और मनुष्यों के प्रति उसने इस धर्मप्रकाशन की घोषणा की है जो उसके ज्ञान में सन्निहित है तथा उसके सुरक्षा-कोष में संरक्षित था और सर्वोदात्त लेखनी द्वारा प्रभुओं के प्रभु, ईश्वर की पुस्तकों में लिखा गया था। ऐ शीराज के लोगों! क्या तुम मेरी प्रेमल सौजन्यता और मेरी दयालुता भूल गये हो, जो सृजित वस्तुओं से श्रेष्ठ है और जो उस ईश्वर से निस्सृत हुई है जो मनुष्यों की ग्रीवाएँ झुका कर रखता है?"

"किताब-ए-अक़दस" (परम पावन पुस्तक) में निम्नांकित पद्य प्रकट किया गया है: "कहो: ओ धार्मिक नेतागण ! ईश्वर के ग्रन्थ का मूल्यांकन ऐसे मापदंडों और ऐसे शास्त्रों से मत करो जो तुम्हारे बीच प्रचलित हैं क्योंकि यह ग्रंथ स्वयं ही लोगों के बीच संस्थापित एक 'अचूक तराजू' है। इस सर्वाधिक पूर्ण तुला में धरती के लोगों और बन्धुओं के अधिकार की सभी वस्तुओं का माप-तौल किया जाना चाहिए किन्तु स्वयं इसके वजन का लेखा-जोखा इसके अपने ही पैमाने से किया जाना चाहिए, काश! तुम यह जान पाते।" मेरी स्नेहिल सौजन्यता के नेत्र फूट-फूट कर तुम पर रोते है, क्योंकि तुम उसे नहीं पहचान सके, जिसे तुम अहर्निशि, सांझ-सवेरे आवाज देते रहे हो। ऐ लोगों, हिमधवल चेहरों और प्रभासित हृदयों से उस मंगलमय और अरूणाभ स्थल की ओर बढ़ो, जहाँ वह 'वृक्ष' पुकार रहा है जिसके आगे कोई राह नही है। 'ओ फारस के धार्मिक नेतागणों! तुम्हारे बीच कौन है वह पुरूष जो सूक्ष्मदृष्टि और अन्तर्दृष्टि में मेरे साथ स्पर्धा कर सके? कहाँ मिलेगा वह जो शब्दोद्गार या विवेक में मेरे समान होने का दावा करने की हिम्मत जुटा पाये। कदापि नहीं, सर्वदयालु मेरे प्रभु की सौगंध! धरती पर से सभी चले जायेंगे और तुम्हारे सर्वशक्तिमान, परम प्रिय प्रभु की वही प्रतिष्ठा रहेगी। हमने आदेश दिया है, ऐ लोगों, कि

प्रत्येक विद्या का उच्चतम एवं अंतिम उद्देश्य उसका अभिज्ञान हो जो सम्पूर्ण ज्ञान का लक्ष्य है और फिर भी देखो की किस तरह तुमने अपनी विद्या को वह अवरोधक परदा बना लिया है जो प्रकाश के इस उदयबिन्दु तक पहुँचने से तुम्हे रोकता है, जिसके माध्यम से हर छिपी वस्तु व्यक्त हो गई है। सुनो: वस्तुतः यही वह स्वर्ग है जहाँ 'मातृग्रन्थ' संचित है, अगर तुम यह समझ सको। वही तो है जिसने 'शैल' को हुंकृत किया है और प्रज्वलित झाड़ी को पर्वत पर पवित्र भूमि के ऊपर अपनी आवाज बुलन्द कर यह उद्घोष करने के लिए प्रेरित किया है: ''बादशाहत सबके सर्वोपरि प्रभु, सर्वशक्तिमान, स्नेही, परमेश्वर की है।'' हम किसी पाठशाला में नहीं गये और न हमने तुम्हारे किसी शोध प्रबन्ध को पढ़ा है। तुम इस अनपढ़ के शब्दों की ओर ध्यान दो, जिनसे वह तुम्हें चिरन्तन परमेश्वर की ओर बुलाता है। तुम्हारे लिए यह धरती की सभी निधियों से अधिक उत्तम है, अगर तुम यह समझ पाओ। दिव्य प्रकटीकरण के व्योम से जो कुछ प्रकट किया गया है उसकी व्याख्या करते हुए जो व्यक्ति उसके सुस्पष्ट अर्थ को बदलेगा, वह वस्तुतः उन लोगों में होगा जिन्होंने ईश्वर के उदात्त शब्द को विकृत किया है। ''बोधगम्य पुस्तक में उसे भटके हुओं में गिना गया है।''

इस पर हमने सच्ची 'आस्था' की कराह सुनी और उससे कहा ''ओ सच्ची आस्था, मैं किसलिये तुझे रात्रि काल में आर्तनाद करते, दिन के समय आहें भरते और अरूणोदय में विलाप करते सुन रहा हूँ?'' उसने उत्तर दिया: ''ओ जगत के 'राजकुमार' जो 'परम महान नाम' में व्यक्त है। प्रमादियों ने तेरी श्वेत 'ऊँटनी' को पंगु बना दिया है और तेरी 'रक्ताभ नौका' को डुबो दिया है और तेरे प्रकाश को बुझाना चाहा तथा तेरे धर्म के मुखड़े को आवृत करना चाहा है। इसीलिए मेरे विलाप का स्वर और सभी सृजित वस्तुओं के बिलखने की आवाज उठी है, फिर भी लोग अधिकांशतया अनभिज्ञ ही हैं।'' सच्ची ''आस्था'' ने आज के दिन हमारे अनुग्रह का आँचल दृढ़ता से थाम रखा है और हमारे विग्रह की परिक्रमा कर रही है।

ओ शेख! तू मेरे सान्निध्य में आ, ताकि तू उसके दर्शन कर सके जिसे ब्रह्माण्ड की आँखों ने कभी नहीं देखा है और सम्पूर्ण सृष्टि के कानों ने जिसे कभी नहीं सुना है तू वह सुन सके, ताकि तू भाग्यवश अस्पष्ट भ्रान्तियों के दलदल से मुक्त हो जाये और उस 'परमोदात्त स्थान' की ओर उन्मुख हो जाये, जहाँ यह 'पीड़ित' उच्च स्वर से पुकार रहा है ''बादशाहत सर्वशक्तिमान, सर्वस्तुत्य परमेश्वर की है।'' हम सोत्साह यह आशा करेंगे कि तेरे प्रयासों से मानव पंख स्वार्थ एवं कामना के कीचड़ से स्वच्छ हो सकते हैं और ईश्वरीय प्रेम के वायुमण्डल में विहार करने योग्य बन सकते हैं। पंक से मलिन पंख कदापि उड़ नहीं सकते

हैं। इसे वे प्रमाणित करते हैं, जो निष्पक्षता तथा न्याय के प्रतिनिधि हैं, फिर भी लोग प्रत्यक्षतः संशयग्रस्त हैं।

ओ शेख! हमारे विरूद्ध हर दिशा से प्रतिवाद के स्वर उठे हैं - ऐसे प्रतिवाद हैं ये जिनको लिपिबद्ध करने के लिए हमारी लेखनी क्षमायाचना करती है। तथापि, अपनी दयालुता के कारण हमने मानवों की समझ के अनुसार उनका उत्तर दिया है ताकि वे सम्भवतः नकार तथा खण्डन की आग से छुटकारा पाकर समर्थन और स्वीकार की दीप्ति से ज्योतित हो जायें। निष्पक्षता का मिलना दुर्लभ है और न्याय का अस्तित्व ही नहीं रह गया है।

कुछ व्यक्तियों को उत्तर देते समय, अन्य पदों के बीच ये प्रांजल पद दिव्य ज्ञान जगत से उतरे हैं: ''ओ तू जिसने मेरे मुखमण्डल की आभाओं पर अपनी दृष्टि टिका दी है। अस्पष्ट रूचियों ने धरावासियों को घेर लिया है और उनको सुनिश्चित के क्षितिज और उसकी जगमगाती दीप्ति और उसके प्राकट्य तथा प्रभा की ओर मुड़ने से रोक दिया है। व्यर्थ कल्पनाओं ने उनको उससे दूर कर दिया है जो स्वयंभू है। वे वही बोलते हैं जैसी उनकी लालसा उनको सुझाती है।'' इनमें वे हैं जो कहते है ''क्या दिव्य छन्द नीचे भेजे गये है?'' मैं कहता हूँ: ''हाँ, उसके द्वारा जो आसमानों का स्वामी है।'' 'क्या वह समय' आ गया है?' वस्तुतः, वह 'अवश्यसम्भावी' आ गया है और वह, सत्य, प्रमाण एवं साक्ष्य सहित प्रकट हुआ है। 'मैदान' अनावृत हो गया है और मानवजाति अत्याधिक व्याकुल एवं भयभीत है। भूकम्प खुल पड़े हैं और जन समुदायों ने सर्वबाध्यकारी, शक्ति के स्वामी, ईश्वर के भय से विलाप किया है। 'सुनो' विलक्षण तुरही का निनाद उच्च स्वर से गूँज उठा है और 'दिवस' उस एक, निर्बन्ध ईश्वर का है। क्या 'महाविपत्ति' गुजर गई है? सुनो: 'हाँ, प्रभुओं के प्रभु की सौगंध!' 'क्या' पुनरूत्थान आ गया है? 'बल्कि इससे भी ज्यादा, वह जो स्वयंभू है अपने चिह्नों के जगत के साथ प्रकट है।' 'क्या तू लोगों को नतमस्तक देख रहा है?' ''हाँ, मेरे उदात्त, सर्वोच्च प्रभु की सौगन्ध। 'क्या वृक्षों के ठूंठ उखाड़े गये है?' 'हाँ, और पर्वत भी धूल में बिखरे पड़े है,' सहज गुणों के उस स्वामी की सौगन्ध!'' कहते है वे ''बैकुण्ठ कहाँ है, और नरक कहाँ है? तो सुनो: एक मेरे साथ पुनर्मिलन है और दूसरा तेरा अपना स्व। ओ तू जो परमात्मा के साथ साझेदारी भी करता है और संदेह भी करता है।'' वे कहते है हम 'तुला' नहीं देख रहे हैं। मैं कहता हूँ: 'बेशक, दयामय परमेश्वर मेरे प्रभु की सौगन्ध! जो अन्तर्दृष्टि से सम्पन्न हैं उनके सिवा उसे कोई नहीं देख सकता।' 'क्या तारे गिर पड़े हैं?' सुनो: 'हाँ अब उसने, जो स्वयंभू है, रहस्यभूमि (एड्रियानोपल) में वास किया। ध्यान दो तुम सब, जो विवेकयुक्त है' सामर्थ्य एवं महिमा के वक्ष से जब हमने ''शक्ति सम्पन्न हाथ''

बाहर निकाला तो सभी चिह्न प्रकट हो गये। वचनदत्त समय जब आया, तब 'उद्घोषक' ने वस्तुतः मुनादी कर दी है और जिन्होंने सिनाई के वैभवों को पहचाना है वे, सृष्टि के स्वामी तेरे प्रभु की महिमा के सम्मुख, अनिश्चय के अरण्य में अचेत पड़े हैं। तुरही पूछती है: "क्या बिगुल बजा है?, "सुनो, हाँ दिव्य प्रकटीकरण के सम्राट की सौगन्ध! जब वह सर्वदयामय अपने नाम से सिंहासन पर आरूढ़ हुआ, सकल प्रकाश के स्रोत, तेरे प्रभु की दयालुता के उदीयमान प्रकाश ने अंधकार का पीछा कर उसे भगा दिया है। सर्वदयामय का समीर बहा है और आत्माएँ अपने शरीरों की कब्रों में अनुप्राणित हो गई हैं। सामर्थ्यशाली, उपकारी, परमेश्वर का आदेश इस प्रकार पूर्ण हो गया है।" भटके हुए हैं वे जो, कहते हैं "आसमान कब फट गये?" "सुनो: जिस समय तुम हठधर्मिता और भ्रान्ति की कब्रों में पड़े थे" प्रमादियों के ही बीच है वह जो अपनी आँखें मलता है और दायें बायें देखता है। मैं कहता हूँ अंधा हो गया है तू, भाग कर आश्रय लेने को तेरे पास कोई शरणस्थान नहीं है।' और इन्ही के बीच वह है जो कहता है: लोग, क्या एकत्र हो गये हैं? "सुनो: 'हाँ, मेरे प्रभु की सौगंध! जब तू निरर्थक मनोरथों के झूले में लेटा था।' और उनके बीच वह है जो कहता है: 'पुस्तक क्या सच्चे विश्वास की शक्ति से प्रकट हुई है?" सुनो: "सच्चा विश्वास स्वयं भौंचक है। तुम भय खाओ ओ प्रबुद्ध हृदयों से सम्पन्न लोगों।" और उनके बीच यह है जो कहता है 'क्या मैं दूसरों, दृष्टिहीनों के जमावड़े में शामिल हूँ?' सुनो "हाँ उसकी सौगन्ध, जो बादलों पर सवार होता है। बैकुण्ठ रहस्यमय गुलाबों से सजा है और नरक को अधर्मियों की आग से धधकाया गया है।" सुनो: "धर्म प्रकटीकरण के क्षितिज से प्रकाश चमका है और जो संविदा दिवस का प्रभु है उसके आगमन से सम्पूर्ण धरा आलोकित हो उठी है। 'संशयात्माओं का नाश हो गया है और प्रतीति के प्रकाश की प्रेरणा से जो 'सुनिश्चय के दिवास्रोत' की ओर उन्मुख हुआ, वह फला-फूला है।" धन्य है तू जिसने मुझ पर अपनी दृष्टि टिका दी है। क्योंकि यह पाती जिसे तेरे लिये उतारा गया है ऐसी पाती है जो मानवात्माओं को ऊँचा उठाती है। इसे स्मरण कर और इसका पाठ कर। "मेरे जीवन की सौगन्ध! मेरे प्रभु की दया का द्वार है यह। सायंकाल तथा उषाकाल में जो इसका पाठ करता है उसका मंगल होता है। सचमुच हम इस धर्म की प्रशस्ति सुन रहे हैं जिसके जरिए ज्ञान-गिरी चूर चूर हो गया है और मानव पग फिसल गये हैं। तुझ पर और उस पर जो सर्वशक्तिमान, सर्वानुग्रहमय की ओर उन्मुख हुआ है मेरी भव्यता बरसे। पाती समाप्त है, परन्तु प्रकरण अवशेष है। धैर्य रख, क्योंकि तेरा प्रभु धीर है।"

ये वे पद हैं जिनको कारानगर अक्का में आने के बाद हमने पहले ही प्रकट किया है और उनको हमने तुझे भेजा है, ताकि हमारा धर्म जब प्रभुत्व और सामर्थ्य ये युक्त उनके बीच

आया तब उनकी मिथ्याभाषिणी जिह्वा के मनोरथों की बुनियादें हिल गईं हैं और व्यर्थ कल्पनाओं का आकाश फट कर टुकड़े टुकड़े हो गया, फिर भी लोग संशयग्रस्त हैं और उसके साथ विवाद करते हैं। ईश्वर के साक्ष्य तथा उसके प्रमाण को उन्होंने नकार दिया है। जो निर्धारित किया गया था उसे उन्होंने त्याग दिया है और वे अपराध किये हैं, जिनका निषेध पावन पुस्तक में किया गया है। अपने परमेश्वर को परित्याग कर वे अपनी कामनाओं से लिपटे हैं। सचमुच वे भटके हुए हैं और भ्रांति में हैं। वे दिव्य पदों को पढ़ते हैं और उनको ठुकरा देते हैं। स्पष्ट चिह्न वे देखते हैं और मुंह फेर लेते हैं, सचमुच ही, वे विचित्र संदेह में खो गये है।

अपने प्रियजनों को हमने ईश्वर से डरने की चेतावनी दी है। यह भय ही सभी सद्कर्मो और सद्गुणों का प्रमुख स्रोत है। बहा के नगर में न्याय के सैन्यदलों का सेनाधिपति है वह। धन्यभागी है वह जो उसकी जगमगाती पताका के साये में प्रविष्ट हुआ है और जिसने मजबूती से उसे थाम लिया है। वह वस्तुतः रक्ताभ नौका के सहचरों में है, जिसका उल्लेख 'कय्यूम-ए-अस्मा' में हुआ है।

सुनो: ओ ईश्वर के जनो! अपने ललाट को विश्वासपात्रता और धर्मनिष्ठा के अलंकरण से सज्जित करो। सद्कर्मो तथा प्रशंसनीय आचरण के सैन्यदलों से अपने प्रभु की सहायता करो। अपनी पुस्तकों और अपने धर्मग्रन्थों और अपनी पातियों में हमने फूट और विवाद का तुम्हारे लिए निषेध किया है और ऐसा करते हुए तुम्हारे उत्कर्ष तथा प्रगति के अतिरिक्त कुछ नहीं चाहा है। आसमान और उनके सितारे, सूर्य और उसकी दीप्ति, वृक्ष और उनके पात, सागर और उनकी लहरें और धरती तथा उसकी निधियाँ इसे प्रमाणित करती हैं। ईश्वर से अपने प्रियजनों की सहायता करने और इस कल्याणकारी, सामर्थ्यशाली तथा अद्भुत अवस्थान में जो कुछ उनके लिए उपयुक्त है उसकी मदद देने की हम प्रार्थना करते हैं।

इसके अतिरिक्त, एक अन्य पाती में हमने कहा है - "ओ तू जिसने मेरे मुखमण्डल पर अपनी दृष्टि जमा दी है लोगों को चेताओं कि वे ईश्वर से डरें। परमेश्वर की सौगन्ध! यह भय मेरे प्रभु की सेना का प्रधान सेनापति है। प्रशंसनीय चरित्र और सद्कर्म उसके सैन्यदल हैं। उसी के माध्यम से कालों तथा सदियों से मानव हृदयों के नगर खोले गये है और उत्थान तथा सफलता के ध्वज दूसरी सभी ध्वजाओं से ऊँचे उठे हैं।"

"अब हम विश्वासपात्रता और सामर्थ्यशाली सिंहासन के प्रभु, तेरे प्रभु, परमेश्वर की दृष्टि में उसके स्थान का तुझसे उल्लेख करेंगे।" इन दिनों में एक दिन हम अपने 'हरित द्वीप' में गये। वहाँ आने पर हमने सरिताओं को बहते और उसके तरूओं को अत्यन्त उर्वर और धूप को उनके बीच क्रीड़ा करते देखा। दाहिनी ओर मुख घुमाने पर हमने जो कुछ देखा उसका

वर्णन करने में लेखनी असमर्थ है और वह उसे नहीं प्रस्तुत कर सकती जिसे 'मानवजाति के प्रभु' के नेत्र ने उस परम पावन, उस परम लोकोत्तर, उस मंगलमय और परमोदात्त स्थल पर निहारा है। तत्पश्चात बायें मुड़ने पर हमने 'परमोत्कृष्ट बैकुण्ठ' के सौन्दर्य को आकाश के एक स्तम्भ पर खड़े होकर यह कह कर पुकारते हुए सुना: ''ओ अवनी और अम्बर के निवासियों! तुम सब मेरे सौन्दर्य और मेरी दीप्ति और मेरे प्रकटीकरण और मेरे उद्गार का अवलोकन करो। उस सत्य परमेश्वर की सौगन्ध! मैं विश्वासपात्रता और उसकी अभिव्यक्ति और उसका सौन्दर्य हूँ। जो व्यक्ति मुझे अंगीकार करेगा और मेरा पद तथा स्थान पहचानेगा और मेरा आंचल थामेगा, मैं उसका उसे प्रतिदान दूंगा। मैं बहा के जनो का परम महत आभूषण हूँ और जो सृष्टि जगत में हैं उन सभी की गौरवमयी पोशाक हूँ। जगत की सम्पन्नता का मैं सर्वोच्च साधन और सभी प्राणियों की आश्वस्ति का क्षितिज हूँ। तेरे निकट हमने इस प्रकार उसे उतारा है जो लोगों को सृष्टि के प्रभु के निकट ले जायेगा।''

विश्वजनों को जो कुछ उन्नत करेगा और ईश्वर के निकट ले जायेगा, उसी के लिए इस 'पीड़ित' ने सर्वदा उनका आह्वान किया है। 'परम लोकोत्तर क्षितिज' से वह प्रकाश प्रदीप्त हुआ है जो किसी दुविधा के लिए कोई गुंजाइश नहीं छोड़ता है। तथापि हठधर्मी उससे लाभ उठाने में विफल हुए हैं, बल्कि इससे उनकी हानि में ही इजाफा होगा।

ओ शेख! महामहिम शाह के साथ - ईश्वर उनकी सहायता करे - एकजुट होकर रहना और रात-दिन उससे सम्पर्क में रहना जो शासन तथा राष्ट्र दोनों का स्थान ऊँचा उठाये। धर्मगुरुओं के लिए यह अत्यावश्यक है। यह समुदाय मानवात्माओं को प्रबुद्ध बनाने और उनकी दशा बहाल करने के काम में सप्रेम लगा है। इस बोधगम्य पाती में 'सर्वोदात्त लेखनी' द्वारा जो कुछ प्रकट किया गया है वह इसे प्रमाणित करता है। कितनी ही बार चीजें सरल और कार्यसिद्धि हेतु सुगम रही हैं, फिर भी अधिकांश व्यक्ति असावधानी कर रहे हैं और समय नष्ट करने वाली बातों में व्यस्त हैं।

कॉन्स्टैन्टिनोपल में रहते समय एक दिन इस 'पीड़ित' से कमाल पाशा ने मुलाकात की। हमारा वार्तालाप घूम-फिर कर मनुष्यों के लिए लाभप्रद विषयों पर हुआ। उन्होंने कहा कि उन्होंने कई भाषाएँ सीखी हैं। उत्तर में हमने कहा: ''आपने अपना जीवन व्यर्थ गवां दिया है। आप और अन्य शासनाधिकारियों के लिए उचित है कि एक सभा का आयोजन कर विभिन्न भाषाओं में एक भाषा का और इसी प्रकार वर्तमान लिपियों में एक लिपि का चयन कर लें, अथवा इसके स्थान पर एक नई भाषा और नई लिपि की रचना करें जिन्हें सारे संसार की पाठशालाओं में बच्चों को सिखाया जाये। इस प्रकार वे केवल दो भाषाओं का ज्ञानार्जन करेंगे - एक उनकी मातृ भाषा होगी और दूसरी वह भाषा होगी जिसमें सारे विश्व के लोग वार्तालाप कर सकेंगे। यदि लोग दृढ़ता के साथ इसे अपनायें

जिसका उल्लेख किया गया है, तो सम्पूर्ण धरा को एक देश माना जा सकेगा और विभिन्न भाषाओं को सीखने-सिखाने के काम से मुक्ति और राहत मिल जायेगी।'' हमारे निकट उन्होंने अपनी मौन स्वीकृति दी, बल्कि बहुत प्रसन्नता और पूर्ण सन्तुष्टि भी दर्शाई। फिर हमने इस विषय को सरकार के मंत्रियों तथा अधिकारियों के सम्मुख रखने के लिए उनसे कहा, जिससे विभिन्न देशों में इसे क्रियान्वित किया जा सके। इसके बाद वह यद्यपि प्रायः हमारे पास आये किन्तु इस विषय की चर्चा पुनः कभी नहीं की। जिसका सुझाव दिया गया था वह विश्वजनों की मैत्री एवं एकता का संवाहक है।

हम सहर्ष यह आशा करते हैं कि फारस सरकार इसे अंगीकार कर कार्यान्वित करेगी। एक नई भाषा, नई लिपि आविष्कृत हुई है। तू चाहे तो हम तुझे उसके बारे में सूचित करेंगे। हमारा उद्देश्य यही है कि सब लोग उस विधि को अपनाएँ जिससे अनावश्यक भ्रम घटे ताकि उनके दिन समुचित रूप से व्यतीत हों। ईश्वर वस्तुतः सहायक, ज्ञाता, नियंता, सर्वदर्शी है।

ईश्वर ने चाहा तो फारस इस समय जिससे अत्यधिक वंचित हो गया है उसे प्राप्त कर सुशोभित हो सकता है। सुनो - ओ शेख! प्रयासरत हो, ताकि समस्त विश्वजन तेरे न्याय-सूर्य के विपुल वैभवों से ज्योतिर्मय बन जायें। इस 'पीड़ित' की आँखें विश्वासपात्रता, सत्यपरायणता, शुचिता और जो मनुष्यों के लिए लाभप्रद है उन सबको छोड़कर कहीं नहीं लगी हैं। ''उसे विश्वासघाती मत मानों। महिमावंत है तू और मेरे प्रभु और मेरे स्वामिन और मेरे मुख्य आधार।'' तू अपने नियमों तथा आज्ञाओं को कार्यान्वित करने और अपने सेवकों के बीच अपना न्याय दर्शाने की सहायता महामहिम शाह को प्रदान कर। तू वस्तुतः सर्वानुग्रहमय, अपार कृपा का स्वामी, सर्वशक्तिमान, सर्वसामर्थ्यवान है। प्रभुधर्म उसकी कृपा के स्वरूप आया है। अहोभाग्य है उनका जो उद्यम करते हैं, बढ़भागी हैं वे जो समझते हैं, धन्यभागी हैं वह नर जो अवनी और अम्बर से निर्लिप्त रह सत्य से जा लिपटा हैं।''

ओ शेख! तू 'परम महत् महासागर' का तट खोज और फिर उस 'रक्ताभ नौका' में प्रवेश कर, जिसे कय्यूम-ए-अस्मा में ईश्वर ने महान लोगों के लिए निर्दिष्ट किया है। सचमुच वह थल और जल पर से गुजरती है। उसमें जो प्रवेश करता है वह सुरक्षित होता है और जो उससे विमुख होता है वह नष्ट हो जाता है। तू यदि उसमें कदम रखे और उसे प्राप्त हो जाये, तो अपनी दृष्टि संकट में सहायक, स्वयंभू ईश्वर के काबा की ओर घुमा और कह: ''हे मेरे परमेश्वर! तेरे परम जाज्वल्यमान प्रकाश के द्वारा मैं तेरी विनती करता हूँ! तेरा

प्रकाश वस्तुतः तेजोमय है।'' इस पर तेरे सम्मुख दिव्य साम्राज्य के द्वार पूरी तरह खुल जायेंगे और तुझे देखने तथा सुनने को जो मिलेगा उसे कभी किसी नेत्र ने नहीं देखा है और कान वह सुनेगा जिसे किसी ने अभी तक नहीं सुना है। तुझे यह 'पीड़ित' वही प्रबोधन दे रहा है जो उसने पहले तुझे दिया था। तेरे लिये उसने इसके सिवा कोई इच्छा नहीं रखी है कि तू सर्वलोकेश्वर परमात्मा की एकता के महासिन्धु में प्रवेश करे। यह वह दिन है जिसमें सभी रचित वस्तुएँ मानवों के प्रति चीख-चीख कर इस प्रकटीकरण की दुन्दुभि बजा रही है, जिसके जरिये वह प्रकट हो गया है जो सामर्थ्यशाली, सर्वस्तुत्य परमेश्वर के ज्ञान में गूढ़ तथा संरक्षित था।

ओ शेख! ज्ञान के 'पदम् वृक्ष' की टहनियों पर चहकते ''वाणीमय फाख्ताओं'' के तूने मधुमय गान सुने हैं अब 'परमोदात्त बैकुण्ठ में निनादित होते' प्रज्ञामय विहंगों के कलरव सुन। ये वस्तुतः उन चीजों का परिचय तुझे देंगे जिनसे तू पूर्णतया अनभिज्ञ था। 'शक्ति की सामर्थ्यमयी वाणी' ने प्रत्येक बोधसम्पन्न हृदय के इष्ट परमेश्वर की पुस्तकों में जिसे उच्चारा है उसकी ओर कान लगा। जिसके परे कोई राह नहीं हैं उस 'पदम् वृक्ष' के ''परमोदात्त बैकुण्ठ'' के हृदय में एक आवाज आई है, जिसने तुझसे उन चीजों का वर्णन करने को मुझसे कहा है जिन्हें पुस्तकों तथा पातियों में उतारा गया है और जिनको मेरे अग्रदूत ने कहा है, जिसने इस महाघोष के उस 'ऋजु मार्ग' के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। उसने कहा है और वह सचमुच सत्य ही कहता है: ''मैंने उसके स्मरणोल्लेख में ये रतन सदृश शब्द लिखे हैं 'मेरा कोई संकेत, या 'बयान' में उल्लिखित कोई बात, उसको संकेतित नहीं कर सकती।' और इसके अतिरिक्त इस परम सामर्थ्यशाली प्रकटीकरण, इस 'महाघोष' के सम्बन्ध में वह अपने ही सिवा उसे व्यक्त करने की किसी व्यक्ति की शक्ति, या अपने किसी प्राणी के वर्णन से परे, वह बहुत ऊँचा और महिमामंडित है। स्वयं मैं उसमें तथा उसके चिह्नों में विश्वास करने वाला और उसके ज्ञान-बैकुण्ठ के प्रथम फलों से उसके शब्दों की मधुर सुवास ग्रहण करने वाला मात्र प्रथम सेवक हूँ। हाँ, उसकी भव्यता की सौगन्ध! वह 'परम सत्य' ही है। उसके सिवा कोई अन्य ईश्वर नहीं है। सभी उसके आदेश पर उठ खड़े हुए हैं।'' 'दिव्य पदम् वृक्ष' की शाखाओं पर उस 'सत्य की फाख्ता' द्वारा गाये गये ऐसे शब्द हैं। उसके 'स्वर' का जिसने श्रवण किया है और इनमें से प्रत्येक शब्द में सन्निहित 'दिव्यवाणी' के सागरों से आचमन किया है, उसका कल्याण होगा। एक अन्य संदर्भ में 'बयान के स्वर' ने उत्तंुगतम शाखाओं से महारथ के साथ पुकारा है। वह कहता है ''वर्ष नौ में तुम समस्त शुभ को प्राप्त होेगे।'' ज्ञान नगरों के पखेरूओं द्वारा उच्चरित ये मधुगान

उसी के अनुरूप हैं जिसे सर्वदयामय ने कुरान में प्रकट किया है। धन्य है अन्तर्दृष्टिसम्पन्न मानक और धन्य हैं वे जो उन्हें प्राप्त होते हैं।

ओ शेख! ईश्वर की सौगन्ध खाकर कहता हूँ मैं! 'दिव्य दयालुता की सरिता' बह रही है, 'वाणी का सिन्धु' उमड़ रहा है और धर्मप्रवर्तन का सूर्य तेजोमयता से प्रभासित हो उठा है। लिप्त हृदय, विस्तीर्ण वक्ष, तथा नितान्त सत्यनिष्ठ जिह्वा से तू मेरे 'अग्रदूत' आदि बिन्दु द्वारा प्रकट किये गये इन उदात्त शब्दों का पाठ कर। श्रीमान् अज़ीम को सम्बोधित कर, वह कहता है: "यह सत्य ही वही वस्तु है, जिसका हमने तेरी पुकार का उत्तर देने के पूर्व तुझे वचन दिया था। बयान के समय से नौ बीतने तक तू प्रतीक्षा कर। फिर चिल्ला कर कह: 'धन्य हो, इस कारण, निर्माताओं में सर्वोत्कृष्ट परमेश्वर! 'सुनो: वह वस्तुतः वह 'घोषणा' है जिसे ईश्वर के सिवा किसी ने नहीं समझा है। तथापि, तुम लोग उस दिन अनभिज्ञ रहोगे।" वर्ष नौ में यह 'परम महान धर्मप्रवर्तन' उठ कर ईश्वरेच्छा के गगनांचल पर प्रखरता से प्रदीप्त हो उठा। जो प्रमादग्रस्त तथा संशयालु हैं उनके अतिरिक्त कोई उसे नकार नहीं सकता। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि अपने सेवकों को पुनः अपने निकट आने और इस निष्फल जीवन में उन्होंने जो काम किये हैं उनके लिये क्षमायाचना करने में वह उनकी सहायता करे। वह सचमुच क्षमाशील, सर्वदयालु है। एक अन्य सन्दर्भ में वह कहता है: "मैं उसमें और उसके चिह्नों में विश्वास करने वाला प्रथम सेवक हूँ।" इसी तरह फारसी बयान में वह कहता है: वह सचमुच वही है जो सभी दिशाओं में उद्घोष करता है। "मैं, सत्य ही, परमेश्वर हूँ!" मंगलमय और महिमामण्डित हो वह! देवत्व तथा ईश्वरत्व का तात्पर्य पहले बताया जा चुका है। सत्य ही, हमने आवरण छिन्न-भिन्न कर डाले हैं जिससे मनुष्य ईश्वर के निकट आयेंगे उसे अनावृत कर दिया है। ईश्वर, जो मनुष्यों की ग्रीवाएँ झुका कर रखता है। इस 'कृपालुता' में जिसने उस सबको घेर रखा है जो आसमानों में तथा धरती पर हैं। सर्वलोकाधिपति ईश्वर की आज्ञानुसार, जो न्याय एवं निष्पक्षता को उपलब्ध हुआ है, धन्यभागी है वह पुरुष।

ओ शेख! निष्पक्षता रूपी कर्ण से गॉस्पल की स्वर लहरियाँ सुन पाने वाली घटनाओं की भविष्यवाणी करता हुआ वह कहता है - महिमामण्डित हो उसकी वाणी: "लेकिन उस दिवस तथा बेला के बारे में कोई मनुष्य नहीं जानता है, स्वर्ग के देवदूत नहीं, पुत्र नहीं, किन्तु 'पिता' (जानता है)।" 'पिता' से यहाँ ईश्वर अभिप्रेरित है - उदात्त हो उसकी महिमा। वह वस्तुतः 'सच्चा गुरु है।'

जोयेल कहता है: ''चूंकि 'प्रभु का दिवस, महान और भयावह है, उसकी प्रतीक्षा कौन कर सकता है?'' पहली बात यह कि, गॉस्पल में प्रस्तुत उदात्त कथन में यह कहावत है कि दिव्य प्रकटीकरण के समय का किसी को ज्ञान नहीं है और उसे सर्वज्ञ ईश्वर के सिवा कोई नहीं जानता है। दूसरी यह कि, वह दिव्य प्रकटीकरण की महानता प्रस्तुत करता है।'' इसी प्रकार, कुरान में वह कहता है ''वे किसके बारे में परस्पर पूछ रहे हैं? 'महाघोष' के बारे में?' यही वह 'घोषणा' है जिसकी महानता का अधिकांश प्राचीन 'पुस्तकों' में उल्लेख हुआ है। यही वह 'घोषणा' है जिसने, उनको छोड़कर जिनको रक्षक, सहायक, गाढे समय में मित्र ईश्वर ने छूट देने की इच्छा की है, मानवमात्र के अंगों को कम्पा दिया है। लोगों ने वस्तुतः अपनी आँखों से देखा है कि किस प्रकार सभी मानव और सभी वस्तुएँ, उनके सिवा जिनको ईश्वर ने अलग रखना चाहा है, भ्रान्तचित्त और अत्यन्त व्याकुल हो उठी हैं।''

ओ शेख! महान है प्रभुधर्म, और महती है वह 'घोषणा'! धैर्य के साथ और शांतिपूर्वक तू देदीप्यमान चिह्नों और उदात्त शब्दों और इन दिनों जो व्यक्त हुए हैं, सब पर मनन कर, ताकि तू 'पुस्तको' में निहित रहस्यों की थाह पा ले और उसके सेवकों को राह दिखाने का प्रयास कर सके। अपने अन्तःकरण से जेरमिया की आवाज सुन, जो कहता है ''ओह, महान है वह 'दिवस' और उसका कोई समतुल्य नहीं है।'' निष्पक्षता के नेत्र से तू यदि देखे, तो तुझे उस 'दिवस' और उसका कोई समतुल्य नहीं मिलेगा। 'निष्पक्षता के नेत्र से तू यदि देखे तो तुझे उस 'दिवस' की महानता का बोध होगा। इस सर्वज्ञ 'परामर्शदाता' की 'आवाज' पर ध्यान दे और अपने आपको उस दयालुता से वंचित मत कर जो गोचर एवं अगोचर सभी सृजित वस्तुओं से श्रेष्ठ है। डेविड के गान को ध्यान देकर सुन: कहता है वह: ''कौन मुझे सशक्त नगर अक्का ले जायेगा, जिसे 'परम महान कारागार' का नाम दिया गया है और जिसमें एक दुर्ग तथा मजबूत परकोटे हैं।''

ओ शेख! ईसाइयाह ने अपनी पुस्तक में जो कहा है उसका अध्ययन कर। वह कहता है ''तू उच्च पर्वत का रूप धारण कर, ओ जिऑन, आवाज उठा, डर मत, जुडा के नगरों से कह: 'निहारो अपने परमेश्वर को! देखो प्रभु परमेश्वर सबल हाथ लेकर आयेगा और उसकी भुजा उसके लिए शासन करेगी।' ''इस 'दिवस' में ये सभी चिह्न प्रकट हुए हैं। आकाश से एक 'महान नगर' उतरा है और ईश्वर के प्रकटीकरण पर जिऑन उल्लास से पुलकित है, क्योंकि उसने ईश 'स्वर' सुना है। इस 'दिवस' में जेरूसलम एक नए देवदूत को उपलब्ध

हुआ है, क्योंकि गूलर के स्थान पर देवदार खड़े हैं। जेरूसलम सभी विश्वजनों का तीर्थस्थान है और उसे 'पवित्र नगर' कहा गया है। जिऑन और फिलस्तीन सहित, सभी इन्हीं क्षेत्रों में सम्मिलित हैं। इसलिये कहा गया है ''धन्य है वह मनुष्य जो अक्का में जा बसा है।''

आमोस कहता है: ''प्रभु जिऑन से गर्जना करेगा और जेरूसलम से आवाज देगा और गड़ेरियों के बसेरे शोक करेंगे और कार्मल की चोटी निस्तेज हो जायेगी।'' ईश्वरीय पुस्तक में कार्मल को 'ईश्वर की पहाड़ी' और उसका अंगूरों का बगीचा कहा गया है। यहीं, प्रकटीकरण के प्रभु' की कृपा से, महिमा का वितान ताना गया है। ''अहोभाग्य है उनका जो उसकी ओर उन्मुख होते हैं और इसी प्रकार वह कहता है ''हमारा ईश्वर आयेगा और वह मौन नहीं रहेगा।''

ओ शेख! जो 'जगत का इष्ट' है, उसके द्वारा आमोस के लिए कहे गए इन शब्दों पर विचार कर। वह कहता है ''अपने परमेश्वर से मिलने की तैयारी कर, ओ इजरायल, क्योंकि देख, वह जो पर्वतों को आकार देता है और पवन की रचना करता है, उसे उसके सम्मुख प्रकट करता है और प्रातःबेला को अंधकार बनाता है और धरा के उच्च स्थानों पर विचरण करता है, प्रभु जनसमुदायों का परमेश्वर, उसका नाम है।'' वह कहता है कि वह प्रातःबेला को अंधकार बनाता है। इसका तात्पर्य यह है कि, जिसने सिनाई पर वार्तालाप किया था उसके प्राकट्य के समय यदि कोई अपने को सच्चा प्रभात माने तो वह, ईश्वर की शक्ति और सामर्थ्य से, अंधकार में तब्दील हो जायेगा। अपने आपको सच्चा मानते हुए भी वह वस्तुतः झूठा प्रभात है। धिक्कार है उसको और धिक्कार है उनको जो अखिल लोकों के प्रभु, परमेश्वर द्वारा प्रदत्त स्पष्ट चिह्न के बगैर उसका अनुसरण करते हैं।

ईसाइयाह कहता है ''उस 'दिवस' में मात्र प्रभु का उत्कर्ष होगा।'' दिव्य धर्म प्रकाशन की महानता के सम्बन्ध में वह कहता है। ''प्रभु के भय से और उसकी महिमा के तेज से, तू धूल में दुबक और आश्रय ग्रहण कर ले।'' और एक अन्य प्रसंग में वह कहता है ''बीहड़ और निर्जन स्थान मन ही मन प्रसन्न होंगे और मरूस्थल आनन्द मनायेगा और गुलाब के मानिन्द खिल जायेगा। वह हरा-भरा हो जायेगा और गाते हुए सोल्लास प्रफुल्लित होगा। उसे लेबनान की भव्यता प्रदान की जायेगी। लोग प्रभु की भव्यता और हमारे परमेश्वर का वैभव निरखेंगे।''

इन परिच्छेदों को किसी समीक्षा की आवश्यकता नहीं है। ये सूर्य की भाँति प्रत्यक्ष तथा प्रदीप्त और प्रकाश की भाँति उज्ज्वल तथा ज्योतिर्मय हैं। इन शब्दों की सुवास प्रत्येक निष्पक्ष व्यक्ति को बोध के उपवन का मार्ग दिखलाती है और वह उसे प्राप्त कर लेता है जिससे अधिकांश व्यक्ति अवगुंठित और अवरूद्ध हैं। सुनो: ईश्वर से डरो, ऐ लोगों और उनके संदेहों के पीछे मत भागो जो जोरों से चीखते हैं, जिन्होंने ईश्वर की संविदा और वसीयत भंग की है और उसकी दयालुता को ठुकरा दिया है, जो धरती तथा आसमानों के सर्वस्व है।

और इसी प्रकार, वह कहता हैः ''जो भीत हृदय के हैं उनसे कहो: सबल बनो, डरो मत, अपने परमेश्वर के दर्शन करो।'' यह मंगलकारी पंक्ति दिव्य धर्म प्रकटीकरण की महत्ता और प्रभुधर्म की महानता का प्रमाण है। जो विश्वास और निरासक्ति के प्रकाश से आलोकित हो गया है उस 'दिवस' की प्रताड़नाएँ उसको व्यवधान तथा संत्रास नहीं देंगी। उसकी आज्ञा से, जो सर्वदयालु है, 'दिव्योद्गार की जिह्वा' ने यही शब्द कहे हैं। वह वस्तुतः सबल, सर्वसमर्थ, सर्वशक्तिमान है। सुनने के योग्य कान और देखने के योग्य नेत्र से जो सम्पन्न हैं उनके लिए यह अत्यावश्यक है कि वे इन लोकोत्तर शब्दों पर मनन करें, जिनमें से प्रत्येक में छिपे अर्थ और स्पष्टीकरण के सागर निहित है। दैवयोग से उसके द्वारा उच्चरित शब्द जो 'दिव्य प्रकटीरण का प्रभु है, अपने सेवकों को परम उल्लास तथा प्रफुल्लता के साथ उस 'सर्वोपरि लक्ष्य' और 'परमोदात्त शिखर' पर इस 'वाणी' के उदयस्थल को उपलब्ध करा दे।

ओ शेख! तू यदि मेरे वचनोद्गार की सुवासों का सुई के छेद से भी कम बोध कर लेता, तो जगत और जो कुछ उसमें है सबका परित्याग कर अपनी दृष्टि उस 'इष्ट' के मुखमण्डल की आभाओं पर टिका देता। संक्षेप में, उसके कथनों में जो 'चेतना' (ईसा) है उसमें असंख्य अभिप्राय सन्निहित हैं। अनेक बातों का उल्लेख उसने किया, लेकिन जब उसने किसी को सुनने लायक कर्ण या देखने योग्य नेत्र से सम्पन्न नहीं पाया तो, उसने इनमें से अधिकांश चीजों को छिपाए रखना चाहा। जैसा कि उसने कहा है: ''.....लेकिन उनको तुम इस समय धारण नहीं कर सकते।'' ''दिव्य प्रकटीकरण का वह उदयस्थल'' कहता है कि उस 'दिवस' में वह जो 'प्रतिज्ञापित' है उन चीजों को प्रकट करेगा जो आने को हैं। तदनुसार ''किताब-ए-अकदस'' में और सम्राटों के प्रति पातियों में और ''लौह-ए-रईस'' में और ''लौह-ए-फुआद'' में, उन अधिकांश चीजों की जो इस धरती पर आ गुजरी हैं 'परमोदात्त लेखनी' द्वारा घोषणा तथा भविष्यवाणी की गई है।

अधोलिखित को ''किताब-ए-अकदस'' में प्रकट किया गया है: ''ओ 'ता' (तेहरान) की भूमि! ''तुम किसी बात से दुःखी न हो, क्योंकि ईश्वर ने तुम्हें समस्त मानव के आनन्द का स्रोत बनाया है। यदि ईश्वर की इच्छा होगी तो वह तुम्हारे राजसिंहासन पर ऐसे व्यक्ति को विराजमान करेगा, जो भेड़ियों द्वारा तितर-बितर कर दी गई ईश्वर की भेड़ों को एकत्रित करेगा। ऐसा शासक आनन्द और उल्लास के साथ वहाँ के लोगों की ओर उन्मुख होगा और उन्हें अपनी कृपा प्रदान करेगा। ईश्वर की दृष्टि में, सत्य ही, वह मानव-रत्न के रूप में गिना गया है। उस पर सदा-सदा के लिए ईश्वर और उसके प्रकटीकरण के साम्राज्य के सभी निवासियों की गरिमा निर्भर करती है।'' ये पंक्तियाँ पहले प्रकट हुई थीं। परन्तु, निम्नांकित पद प्रकट किया गया है। ''हे ईश्वर, मेरे परमेश्वर! तेरे मुखमण्डल की आभाओं और तेरे प्रकटीकरण के सागर की तरंगों तथा तेरे वचन रूपी सूर्य के देदीप्यमान वैभव के द्वारा बहा तुझसे विनती करता है और शाह को निष्कपट तथा न्यायसंगत होने में सहायता देने की अनुनय करता है। यदि तेरी इच्छा हो तो, उसके माध्यम से तू अधिकार एवं प्रभुत्वपूर्ण सिंहासन को धन्य कर। तुझे जो सुहाता है उसे करने में तू समर्थ है। कोई अन्य ईश्वर तेरे सिवा नहीं है जो सुनता हो, जो उत्तर देने को तत्पर हो।'' ''उमंग के साथ आनन्द मना, ओ 'ता' की भूमि, इसलिए कि ईश्वर ने तुझे अपने प्रकाश का दिवसोदय बनाया है, क्योंकि 'उसकी भव्यता के अवतार' ने तुझमें ही जन्म लिया है। तुझे प्रदत्त इस नाम के लिये तू प्रसन्न हो। कृपालुता के 'दिवानक्षत्र' ने इसी नाम के जरिये अपनी आभा बिखेरी है, जिससे अवनी और अम्बर दोनों ज्योतिर्मय हुए हैं। तेरे अन्दर हो रहे कार्यकलापों की दशा में शीघ्र ही परिवर्तन होगा और सत्ता की बागडोर जनता के हाथों में होगी। सत्य ही, तेरा प्रभु सर्वज्ञ है। सभी वस्तुओं पर उसकी प्रभुता है। अपने प्रभु की सहायता पर तू भरोसा रख। शाश्वत रूप से उसकी स्नेहिल सौजन्यता की दृष्टि का लक्ष्य तू होगी। वह दिन निकट आ रहा है, जब तेरी अशान्ति के स्थान पर अमन चैन होगा। विलक्षण पुस्तक, में यह आदेश दिया गया है।''

और इसी प्रकार ''लौह-ए-फुआद'' में और पेरिस सम्राट (नेपोलियन तृतीय) की पाती में और अन्य पातियों में इस प्रकार की चीजें प्रकट हुई हैं, जो प्रत्येक निष्पक्ष व्यक्ति को ईश्वर की शक्ति, महिमा तथा विवेक प्रमाणित करने की दिशा में ले जायेंगी - उदात्त हो उसकी महिमा। लोग यदि न्याय की दृष्टि से अवलोकन करें तो वे इस मंगलमय पद के रहस्य से अवगत हो जायेंगे कि, ''कोई वस्तु हरी या मुर्झाई नहीं होती है, किन्तु एक सुस्पष्ट लेख में यही लिखा है: ''और इसे भली-भाँति समझ जायेंगे। किन्तु आज के दिन सत्य के परित्याग ने मनुष्यों को उसे समझ पाने से रोक दिया है, जिसे सचमुच उसके द्वारा

अवतरित किया गया है जो चिरन्तन "प्रकाशक" है। कृपालु प्रभु! सुव्यक्त चिह्न सब ओर प्रकट हुए हैं, फिर भी लोग उनको देखने तथा समझने के सौभाग्य से अधिकांशतः वंचित है। हम ईश्वर से अपनी सहायता प्रदान करने की विनती करते हैं जिससे सभी लोग "परम महान सागर" की सीपियों में छिपे मोतियों को पहचान लें, और उनके मुख से निकल पड़े: "जय हो तेरी, हे जगदीश्वर।"

ओ निष्पक्ष जनसमूह! ईश्वरीय ज्ञान एवं वचन के सागर की तरंगो को ध्यान से देखो और उन पर विचार करो ताकि तुम अपनी अन्तर्बाह्य जिह्वाओं से यह प्रमाणित कर सको कि उसे उस सबका ज्ञान है जो 'पुस्तक' में है। कुछ भी उसके ज्ञान से बचा नहीं है। उसने सत्य ही उसे व्यक्त किया है जो गुप्त था - जब वह अपने प्रत्यागमन पर 'बयान' के सिंहासन पर आरूढ़ हुआ। जिसे प्रकट किया गया है वह सब शब्दशः धरती पर घटित हुआ है और होगा। किसी के विमुख होने या प्रतिरोध करने की कोई सम्भावना शेष नही हैं। स्थापित निष्पक्षता जब तक अवमानित और प्रच्छन्न है, अधिकांश व्यक्ति अपने निरर्थक मनोरथों के ही वशीभूत हो बोलते हैं।

हे परमेश्वर, मेरे परमात्मन! अपने सेवकों को अपने मुखड़े सुनिश्चय के प्रकाश की ओर, जो तेरी इच्छा के क्षितिज पर उदित हुआ है, फेरने से न रोक और हे मेरे प्रभु, अपने चिह्नों के सागरों के अपवंचन से उनको आक्रांत मत कर। हे मेरे स्वामिन्! वे तेरे नगरों में तेरे सेवक और तेरी भूमि पर तेरे दास हैं। यदि तू उन पर दया नहीं करेगा तो फिर कौन उन पर दया दिखलायेगा? हे मेरे परमात्मन्, तू उनके हाथ थाम ले जो निरर्थक मनोरथों के समुद्र में डूब गये हैं और अपनी शक्ति, अपनी सामर्थ्य की भुजाओं से तू उनकी रक्षा कर। तू जो चाहे करने में समर्थ है और तेरे दाहिने हाथ में सबकी, जो आसमानों में और धरती पर हैं, बागडोर हैं।

इसी प्रकार वह "आदि बिन्दु" कहता है: "उसके ही नेत्रों से तुम उसके दर्शन करो। उसे तुम यदि दूसरे के नेत्रों से देखोगे तो तुम उसे कभी पहचान तथा जान नहीं पाओगे। यह कथन किसी और का नहीं, बल्कि इसी 'परम महान प्रकटीकरण' को इंगित करता है। जो निष्पक्ष निर्णय करते हैं उनका कल्याण होगा। और इसी प्रकार, वह कहता है: "वह एक वर्षीय अंकुर जिसमें आने वाले धर्मप्रवर्तन की सम्भावनाएँ निहित हैं सम्पूर्ण बयान की संयुक्त शक्तियों से श्रेष्ठ शक्ति से सम्पन्न है।" बयान तथा पूर्व कालों की पुस्तकों के ये सुसमाचार अनेक पुस्तकों में विभिन्न नामों से उल्लिखित हुए हैं, ताकि संयोग से लोग

उसका निष्पक्षता से निर्णय कर सकें जो सामर्थ्यशाली सिंहासन के प्रभु, ईश्वर की इच्छा के गगनांचल पर दमक उठा है।

ओ शेख! बयान' के लोगों से कहो: ''तुम इन मंगलमय शब्दों का मनन करो।'' वह कहता है: ''सम्पूर्ण बयान उसके 'बैकुण्ठ' के पातों में मात्र एक पात है। न्यायसंगत रहो, ऐ लोगों और उन जैसे मत बनों जिनको परमेश्वर की पुस्तक में भटका हुआ माना गया है। 'मंगलमय 'पदम् वृक्ष' आज तेरे सम्मुख खड़ा है, अभिनव एवं अद्‌भुत फलों के साथ, अलौकिकता से लदा। उसके सिवा सभी से विरक्त हो उसी को निहारो। शक्ति तथा सामर्थ्यसम्पन्न 'जिह्वा' ने यही शब्द इस 'स्थल' पर बोले हैं जिसे ईश्वर ने अपने 'परम महान नाम' और सामर्थ्यशाली घोषणा के पद चिह्नों से अलंकृत किया है।''

और इसी प्रकार, वह कहता है: ''इस धर्म के प्रारम्भ से जब तक नौ वर्ष नहीं बीतेंगे, तब तक सभी सृजित वस्तुओं के यथार्थ प्रकट नहीं किये जायेंगे। अभी तक तूने जो देखा है वह सब नमीयुक्त बीज की विकसित वह अवस्था है जिसे हमने नहीं ढंका है। जब तक तू एक नूतन सृष्टि का अवलोकन न करे, तब तक धैर्य रख।'' और इसी प्रकार, इस प्रकटीकरण की शक्ति के सम्बन्ध में उसने कहा है: ''जिसे ईश्वर प्रकट करेगा उसके लिए उसे अस्वीकृत करना विधि संगत है जो धरा पर महत्तम है, क्योंकि इस प्रकार का व्यक्ति उसकी मुट्ठी में क्षुद्र जीव मात्र हैं और सभी वस्तुएँ उसकी आराधना करती हैं। हिन (68) के बाद तुमको एक धर्म दिया जायेगा जिसे तुम जान लोगे।'' और वह यह भी कहता है ''समग्र निश्चयात्मकता और सुदृढ़ रूप से स्थापित तथा परम अटल आदेश के जरिये, तू जान ले कि वह अपने ही स्वत्व से प्रत्येक वस्तु को जानता है, फिर उसके अतिरिक्त किसी अन्य के द्वारा उसे कौन जान सकता है?'' और इसके वह कहता है: ''सावधान, सावधान, 'बयान' के ये वाहिद (18 जीविताक्षर) उसके प्रकटीकरण के दिनों में तुझे उससे कहीं दूर न कर दें, क्योंकि उसकी दृष्टि में ये वाहिद एक जीव मात्र हैं। सावधान, सावधान कि बयान में प्रकट शब्द तुझे किसी परदे के द्वारा उससे दूर न कर दें।'' और पुनः कहता है: ''उसके अतिरिक्त किसी अन्य नेत्र से उस पर दृष्टि मत डाल, क्योंकि जो, व्यक्ति इसके नेत्र से उस पर दृष्टिपात करता है, वह उसे पहचान लेता है, अन्यथा वह उससे छिपा रहेगा। तू यदि ईश्वर को और उसका सान्निध्य खोजे, तो तू उसको ढूंढ और उस पर नज़र टिका।'' और इसी प्रकार वह कहता है: ''जिसे ईश्वर प्रकट करेगा उसकी एक पंक्ति का पाठ करना तेरे लिये सम्पूर्ण बयान को समझने से उत्तम है क्योंकि उस दिवस में वह एक पंक्ति तुझे उबार सकती है, जबकि सम्पूर्ण बयान तेरा उद्धार नहीं कर सकती।''

सुनो: ओ बयान के लोगों! न्यायनिष्ठ बनो, निष्पक्ष बनो। और पुनः न्यायनिष्ठ बनो उन जैसे तुम मत बनो जिन्होंने प्रभुधर्म के अवतार की दिन-रात चर्चा की है और जब वह प्रकट हुआ और दिव्य प्रकटीकरण का क्षितिज आलोकमय हो उठा तो, उन्होंने उसके विरूद्ध ऐसा निर्णय दिया जिससे दिव्य जगत के निवासी तथा वे सब करूण क्रन्दन कर उठे जिन्होंने सर्वज्ञ, सर्वप्रज्ञ ईश्वर की इच्छा की परिक्रमा की है।

इन उदात्त शब्दों का चिन्तन करो। वह कहता है: "मैं वस्तुतः उसके धर्म में और उसकी पुस्तक में और उसके प्रमाणों में और उसके मार्गों में और इनके सम्बन्ध में जो कुछ प्रकट किया गया है उसमें विश्वास करने वाला एक श्रद्धालु हूँ। उसके साथ अपनी आत्मीयता में मुझे गौरव का अनुभव होता है और उसमें अपनी आस्था पर मुझे अपने ऊपर गर्व होता हैं" और इसी प्रकार, वह कहता है: "ओ बयान के धर्मसंघ और वे सब जो उसमें हैं! तुम अपने ऊपर आरोपित सीमाओं को पहचानो, क्योंकि स्वयं बयान के बिन्दु ने उसमें सभी वस्तुओं के सृजन के पूर्व विश्वास किया है जिसे ईश्वर प्रकट करेगा। उन सभी के पहले जो धरा तथा गगन जगत में है, मैं सत्य ही इसमें गौरवानुभूति करता हूँ। ईश्वर की सौगन्ध। बयान के लोगों के बीच हठधर्मीजनों द्वारा की गई क्रूरता पर ब्रह्माण्ड का कण-कण संतृप्त हो रूदन करता है। कहाँ गये वे, जो अन्तर्दृष्टि और श्रवण क्षमता से सम्पन्न हैं। ईश्वर से हम उनका आह्वान कर उसका उपदेश देने की, जो उनके लिए लाभकारी हो और उससे रोकने की, जिससे उनको हानि होती हो, विनती करते हैं। वह सचमुच सबल, सर्वशक्तिमान है।"

और इसी प्रकार, वह कहता है: "ईश्वर द्वारा अपने आपको व्यक्त किये जाने के बाद तुम उससे एक परदे के द्वारा बहिष्कृत होने की क्षति न उठाओ। क्योंकि बयान में जो कुछ उदात्त है वह सब मेरे हाथ की मात्र एक मुद्रिका के समान है और मैं स्वयं सचमुच उसके हाथ की एक मुद्रिका मात्र हूँ जिसे ईश्वर प्रकट करेगा - महिमामण्डित हो उसका स्मरण! वह जैसा चाहता है, जिसके लिए चाहता है और जिसके द्वारा चाहता है, उसे घुमाता है। सत्य ही, वह संकटमोचन, परमोच्च है।" और इसी प्रकार वह कहता है: "यदि वह धरती के प्रत्येक व्यक्ति को ईशदूत बना दे तो, सभी ईश्वर की दृष्टि में सत्य ही ईशदूत माने जायेंगे।" और इसी प्रकार वह कहता है: "जिसे ईश्वर प्रकट करेगा उसके प्रकटीकरण के दिन सभी धरावासी उसकी दृष्टि में समान होंगे। जिस किसी को वह ईशदूत निर्दिष्ट करता है वह वस्तुतः आदि से ही ईशदूत रहा है और अनन्त अन्त तक वह ईशदूत रहेगा, क्योंकि यह ईश्वर का कार्य हैं और जो कोई उसके द्वारा प्रतिनिधि बनाया गया है वह सभी लोगों में 'प्रतिनिधि' रहेगा, क्योंकि उसकी इच्छा के माध्यम के बिना ईश्वरेच्छा किसी अन्य

प्रकार से प्रकट नहीं हो सकती और उसकी कामना के साधन के सिवा ईश्वर की कामना का कोई स्वरूप नहीं हो सकता। सत्य ही, वह सर्वविजेता, सर्वशक्तिमान, सर्वोच्च है।''

संक्षेप में, प्रत्येक वचन में उसने वही कहा है जो मानवों के मार्गदर्शन, उत्कर्ष प्रगति और अन्तःकरण का संवाहक है। किन्तु कतिपय प्रतिकूल व्यक्ति परदा और अवरोध बन गये हैं और उन्होंने लोगों को उसके मुखमण्डल की आभा की ओर उन्मुख होने से रोक दिया है। ईश्वर से हम प्रार्थना करते हैं कि अपनी प्रभुता से वह उनको बहिष्कृत कर दे और अपनी शक्ति से उनको जकड़ ले। सत्य ही, वह शक्ति का स्वामी, सामर्थ्यशाली, सर्वप्रज्ञ है।

और इसी प्रकार, वह कहता है वह सूर्य के सदृश है। उसके सम्मुख अगर अनगिनत दर्पण रख दिये जायें तो उनमें से प्रत्येक उस सूर्य की कान्ति को परावर्तित करेगा और यदि एक भी दर्पण उसके सामने रखा न जाये तो भी वह उदय एवं अस्त होता रहेगा और तब केवल दर्पण ही उसके प्रकाश से वंचित रह जायेंगे। सत्य ही, उन लोगों को प्रबोधन देने और जिससे वे ईश्वरोन्मुख हो सकते हैं और अपने सृष्टा परमेश्वर में विश्वास कर सकते हैं उसका साधन बताने के अपने कर्त्तव्य से मैं यदि वंचित न हो पाऊँ तो मेरी अन्तर्रात्मा आनन्द पर्व मनायेगी, क्योंकि तब सभी अपने अस्तित्व के शिखर को प्राप्त हो जायेंगे और अपने प्रेमास्पद के आमने सामने आ खड़े होंगे और अस्तित्व जगत में सभी उसकी भव्यता को पहचान लेंगे। यह न होने पर मेरी आत्मा वस्तुतः व्यथित होगी। सभी वस्तुओं को मैंने वस्तुतः इसी प्रयोजन के लिए शिक्षा दी है। फिर कोई उससे दूर परदे में कैसे रह सकता है? इसी निमित्त मैंने परमेश्वर को पुकारा है और पुकारता रहूँगा। सत्य ही वह सन्निकट, उत्तर के लिए तत्पर है।

और इसी प्रकार, वह कहता है: ''वे उस 'वृक्ष' को ही नकार देंगे जो न पूर्व का है और न पश्चिम का और केवल एक नाम दे देंगे, क्योंकि यदि वे उसको इस प्रकार नाम दें तो वे उसे खिन्न कर पाने में विफल रहेंगे। ऐ संसार! क्या तेरे कानों ने सुना है कि कैसी असहायवस्था में ये शब्द उसकी इच्छा के दिवसोदय से प्रकट थे? वह कहता है ''सभी मानवों को मैंने इसलिये शिक्षा दी है, कि वे इस दिव्य प्रकटीकरण को पहचानें, फिर भी बयान के लोग उस मंगलमय 'वृक्ष' के नामानुयायियों को भी मानने से इन्कार करते हैं, जो न तो पूर्व का है न पश्चिम का।'' अफसोस, अफसोस उन चीजों का, जो मुझ पर आन पड़ी हैं। ईश्वर की सौगन्ध! जिसे मैंने दिन रात पाला-पोसा और शिक्षा दी है उसके (मिर्जा याह्या) हाथों मुझे वह मिला, जिसने पावन चेतना और इस अद्‌भुत दिवस के प्रभु, ईश्वर की महिमा के मण्डपवासियों को रूलाया है।

इसी प्रकार कुछ अविश्वासियों का खण्डन करते हुए, वह कहता है: ''ईश्वर के सिवा दिव्य प्रकटीकरण का समय कोई नहीं जानता है। जब वह समय आयेगा तब सत्य बिन्दु को सब स्वीकार करेंगे और ईश्वर को धन्यवाद अर्पित करेंगे।'' जिन्होंने मुझसे मुँह फेर लिया है उन्होंने ऐसे ही शब्द बोले हैं जैसे जॉन (द बैप्टिस्ट) के अनुयायियों ने कहे थे। क्योंकि उन्होंने भी उसका जो चेतना (ईसा) था यह कहकर प्रतिवाद किया था, ''जॉन का धर्मकाल अभी समाप्त नहीं हुआ है, तो ये कहाँ से आ गया है।'' अब उन्होंने भी जिन्होंने हमारा खण्डन किया है, हमें कदापि न जानते हुए और सर्वदा इस धर्म के मूलभूत सत्यों से अनभिज्ञ रहते हुए भी कि वह कहाँ से निकला और क्या बताता है, ऐसी बातें कहीं हैं जिनके कारण सभी सृजित वस्तुएँ रो और कराह उठी हैं। मेरे जीवन की सौगन्ध! गूंगा कभी उसका सामना नहीं कर सकता जिसमें वाणी जगत ही साकार हुआ हो। ईश्वर से डरो, ऐ लोगों और फिर उसका अध्ययन करो जिसे सत्यतापूर्वक बयान के छठे वाहीद के आठवें अध्याय में प्रकट किया गया है और उन जैसे मत बनों जो विमुख हुए हैं। इसी प्रकार उसने आदेश दिया है: ''प्रत्येक उन्नीस दिनों में एक बार इस अध्याय को पढ़ा जाये, ताकि देवयोग से, जिसे ईश्वर प्रकट करेगा उसके धर्म प्रकाशनकाल में वे उन पदों में असंगत विचारों से अवगुंठित न हों, जो सभी प्रमाणों तथा साक्ष्यों में सर्वाधिक शीर्ष पर रहे हैं और आज भी हैं।''

जकारिया के पुत्र जॉन ने जो कहा वही मेरे 'अग्रदूत' ने कहा है: ''कह रहा हूँ, तुम पश्चाताप करो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट ही है। मैं वस्तुतः पश्चाताप के निमित्त जल से तुम्हें बपतिस्मा देता हूँ लेकिन वह जो मेरे पीछे आ रहा है मुझसे अधिक समर्थ है, जिसके जूते भी धारण करने योग्य मैं नहीं हूँ।'' इसी प्रकार मेरे अग्रदूत ने, समर्पण और विनम्रता के भाव से कहा है: ''सम्पूर्ण बयान उसके बैकुण्ठ के पातों में मात्र एक पात है।'' और इसी भाँति वह कहता है ''उसकी आराधना करने वाला और उसके साथ अपनी आत्मीयता पर गर्व करने वाला मैं पहला ही हूँ।'' और इस पर भी, ऐ लोगों, बयान के समुदाय ने इस प्रकार का आचरण किया है कि जिल-जावशान और इब्न-ए-अनास और अस्बाही ने इन कर्मों से त्राण हेतु ईश्वर से शरण मांगी है और आज भी मांग रहे हैं। यह 'पीड़ित' सभी धर्मों के होते हुए भी दिन रात ऐसी चीजों में व्यस्त रहा है जो प्रभुधर्म के उत्कर्ष की संवाहक है, जबकि वे लोग उससे चिपटे हैं जो हानि तथा अवमानना का कारण है।

और इसी प्रकार वह कहता है: ''उसके छन्दों से उसे पहचानों। उसे जानने के प्रयास की जितनी अधिक तुम्हारी अवहेलना होगी, उतने ही अधिक दुःखद रूप से तुम अग्नि में

लिपटते जाओगे।'' ओ बयान के लोगों! मुझसे मुँह फेर लेने वाले इन परम उदात्त शब्दों पर मनन करो जो उसकी वाणी के अजस्र स्रोत से निकले हैं जो ''ज्ञान का बिन्दु'' है। इस क्षण तुम ये शब्द सुनो। वह कहता है: ''उस 'दिवस' में 'सत्य का दिवानक्षत्र' बयान के लोगों को सम्बोधित कर कुरान की इस सुरा का पाठ करेगा, 'सुनो ओ अनास्थावानों! मैं उसकी कदापि उपासना नहीं करूंगा जिसकी तुम उपासना करते हो और न तुम उसकी उपासना करोगे जिसकी मैं उपासना करता हूँ। तुम्हारा धर्म तुम्हारे लिये है, मेरा धर्म मेरे लिये है।'' कृपालु प्रभु! इन सरल-सुबोध कथनों और इन जगमगाते कान्तिमान प्रतीकों के होते हुए भी, सब अपनी व्यर्थ कल्पनाओं में निमग्न हैं और उस इष्ट से अनभिज्ञ तथा छिपे हैं। ओ तुम जो भटक गये हो, प्रमाद की नींद से जागो और मेरे अग्रदूत के ये शब्द सुनों, वह कहता है: ''स्वीकारोक्ति का वृक्ष उसकी ओर उन्मुख होने पर स्वीकारोक्ति का वृक्ष माना जाता है।'' और इसी प्रकार वह कहता है: ''यदि कोई व्यक्ति किसी दिव्य प्रकटीकरण का दावा प्रस्तुत करो और उसके प्रमाण देने में विफल रहे, तो उसका प्रतिकार मत करो और उसे खिन्न मत करो।'' संक्षेप में, यह 'पीड़ित' दिन-रात ये शब्द कहता रहा है ''सुनो ओ अनास्थावानों!'' ताकि दिव्यशक्ति लोगों की जागृति का साधन बन जाये और उनको हम औचित्य के आभूषण से अलंकृत कर दे।

और अब, इन शब्दों पर चिन्तन करो, जिनसे सर्वलोकाधीश्वर परमात्मा के विषादपूर्ण आह्वान में उसकी निराशा का स्वर फूटता है। वह कहता है: ''महिमामण्डित है तू, ओ मेरे परमेश्वर, तू साक्षी है कि इस 'पुस्तक' के माध्यम से मैंने उसके 'ध्येय' के सम्बन्ध में जिसे तू प्रकट करेगा, अपने उद्देश्य से सम्बन्धित संविदा की स्थापना के पहले, सभी सृजित वस्तुओं के साथ संविदा की है। तू और जिन्होंने तेरे चिह्नों में विश्वास किया है वे यथेष्ट साक्षी हैं। तू सत्यतः मुझे चैन देता है। तुझमें मैंने अपना भरोसा रखा है और तू वस्तुतः सब का लेखा-जोखा लेता है।''

एक अन्य प्रसंग में वह कहता है: ''अरे सूर्य सदृश 'दर्पणों'! तुम सत्य-सूर्य पर दृष्टि डालो। वस्तुतः तुम उसी पर निर्भर हो, अगर तुम उसका ज्ञान प्राप्त कर पाओ। तुम सब सागर के जल में विचरण करती, अपने आपको उससे परदे में छिपाये मछलियाँ हो, फिर भी पूछ रही हो कि वह क्या है जिस पर तुम निर्भर हो।'' और इसी प्रकार वह कहता है: ''मैं अन्य सभी दर्पणों के विरूद्ध तुझसे शिकायत करता हूँ, ओ मेरे उदारता के दर्पण! सब मुझे अपने अपने रंगों में देखते हैं।'' ये शब्द सर्वानुग्रहमय के दिव्य प्रकटीकरण के स्रोत से प्रकट हुए

और करबलाई नाम से प्रसिद्ध सैयद जवाद को सम्बोधित हुए थे। ईश्वर प्रमाणित करता है और जगत मेरा साक्षी है कि वह सैयद इस 'पीड़ित' के पार्श्वर्व में आ खड़ा हुआ है और मुझसे विमुख हुए लोगों के विरोध में उसने विस्तृत खण्डन भी लिखा है। इसके अतिरिक्त, दो पत्र उसने हैदर अली को भेजे हैं, जिनमें उसने उस परम सत्य के दिव्य प्रकटीकरण की साक्षी दी है और जिनमें प्रभु के अतिरिक्त अन्य सभी से अपने विमुख होने के प्रमाण स्पष्ट किये हैं। सैयद की हस्तलिपि सुस्पष्ट है और प्रत्येक व्यक्ति उससे परिचित है। पत्र भेजने का हमारा प्रयोजन यह था कि संयोगवश वे जिन्होंने हमें नकार दिया है स्वीकरण के सजीव जलों को प्राप्त हो जायें और हमसे जो विमुख हैं वे प्रकटीकरण के प्रकाश से आलोकित हो सकें। ईश्वर मेरा साक्षी है कि इस 'पीड़ित' का ईश-शब्द सम्प्रेषित करने के अतिरिक्त कोई उद्देश्य नहीं रहा है वे धन्य हैं जो निष्पक्ष हैं और धिक्कार है उनको जिन्होंने मुँह फेर लिया है। जो मुझसे विमुख हुए हैं उन्होंने कई बार कुचक्र रचे हैं और विभिन्न विधियों से छल प्रपंच किये है। एक बार उन्होंने इस सैयद की एक तस्वीर दूसरों की तस्वीरों के साथ एक कागज पर चिपका दी, जिसमें सबसे ऊपर मिर्जा याह्या का चित्र था। संक्षेप में, 'सत्य प्रभु' का परित्याग करने के लिए उन्होंने हर साधन का आश्रय लिया है। सुनो: ''सत्य प्रभु दमकते सूर्य की भाँति सुस्पष्ट आया है। कितना दुःखद है कि वह अंधो की नगरी में आ गया है।'' सैयद ने खण्डनकर्ताओं की भत्र्सना की और परमोदात्त क्षितिज की ओर उनको बुलाया, पर इन पत्थरों पर प्रभाव नहीं डाल सका जिन पर कोई छाप नहीं डाली जा सकती। उसके द्वारा इस पावन दरबार को भेजे गये अनुनय विनय हमारे पास है।

'दर्पणों' के विरूद्ध अब आदि बिन्दु के दुःख-निवेदन पर मनन करो, ताकि लोग जाग्रत हों और थोथी कल्पनाओं तथा मनोरथों से आस्था और निश्चय की ओर मुड़ सकें और जिससे वे दूर हैं उसका संज्ञान उनको हो सके। वस्तुतः इस 'परम महान धर्म' को पहचानने के ही प्रयोजनार्थ वह अनस्तित्व जगत से निकल कर अस्तित्व जगत में आये हैं और इसी प्रकार, वह कहता है: ''इस सम्पूर्ण 'वृक्ष' को हे मेरे परमेश्वर, तू 'उसके' प्रति अर्पित कर, ताकि उसके भीतर ईश्वर रचित सभी फल उसके लिए प्रकट हो जायें जिसके जरिये ईश्वर ने वह सब कुछ प्रकट करने की इच्छा की है जो उसने चाहा है। तेरी भव्यता की सौगन्ध! मेरी यह कामना नहीं है कि यह 'वृक्ष' कभी कोई शाख, पात या फल धारण करे जो उसके दिव्य प्रकटीकरण के दिवस में उसके सम्मुख नतमस्तक न हो, अथवा तेरे गुणगान से इन्कार करे, जैसा कि उसके प्रकटीकरण के गौरव और उसके परमोदात्त 'अभिगोपन' की उदात्तत्ता के उपयुक्त है। और हे मेरे प्रभु, तू यदि कोई शाखा, पात या फल मुझ पर देखे जो उसके धर्मप्रवर्तन के दिवस में उसके सम्मुख नत होने से विफल हो, तो उसे, हे मेरे

परमेश्वर, उस से काट कर अलग कर दे, क्योंकि वह मेरा नहीं है और न वह मेरे पास लौट कर आयेगा।''

ओ बयान के लोगों! ईश्वर की सौगन्ध खाकर कहता हूँ मैं, जिस धर्म को प्रकट करने के लिए उसे भेजा गया है उसे व्यक्त करने के सिवा इस 'पीड़ित' का कोई दूसरा इरादा नहीं रहा है। उसकी ओर अगर तुम अपने अन्तःकरण में विचार करो तो तुम इस 'पीड़ित' के अंग-प्रत्यंग और स्नायु और उसके एक-एक रोएँ तक से वह सुनोगे जो देवमण्डली को और सम्पूर्ण सृष्टि जगत को आनन्दविभोर कर देगा।

ओ हादी! पूर्व कालों में अंध धर्मोन्दमाद ने अभागे प्राणियों को ''ऋजु मार्ग''(सीधी राह) से दूर रखा है। शिया सम्प्रदाय का विचार करो। बारह सौ बरसों तक उन्होंने ''ओ काइम!'' की गुहार लगाई है। और जब वह आया तो सभी ने उसे मृत्युदण्ड दिया और शहादत के लिए विवश किया। अब तनिक विचार करने की आवश्यकता है, ताकि जो कुछ उस 'सत्य' और उसके प्राणियों के बीच आ गया है उसका पता चल सके और जो कार्य विरोध तथा खण्डन के निमित्त रहे हैं उनको प्रकाश में लाया जा सके।

ओ हादी! हमने उन प्रवचन मंचो की कराह सुनी है जिन पर, इस धर्मप्रवर्तन काल के धर्मोपदेशक आरूढ़ हुए हैं और जहाँ से उन्होंने 'सत्य-सत्ता' को कोसा है और जो अस्तित्व का सार है उस पर तथा उसके सहचरों पर ऐसी आफतें ढाई हैं जैसी दुनिया में अभी तक न किसी आँख ने देखी हैं और न ही किसी कान ने सुनी हैं। तूने प्रभुधर्म का प्रतिनिधि और दर्पण होने का दावा करके अब समुदाय का आह्वान किया है और अभी तक कर रहे हो।

इस समुदाय का प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि सैयद मुहम्मद हमारा एक सेवक मात्र था। जिन दिनों, ओटोमन सरकार के अनुरोध से, उनकी राजधानी के लिए हमने प्रस्थान किया, वह हमारे साथ हो लिया। बाद में उसने जो कुछ किया उसके कारण - मैं परमात्मा की सौगंध लेकर कहता हूँ ''सर्वोच्च की लेखनी ने रूदन किया है और उसकी पाती संत्रस्त हुई है।'' इसलिए हमने उसे निष्कासित किया, जिस पर वह मिर्जा याह्या से जा मिला और ऐसा किया जिसे किसी अत्याचारी ने कभी नहीं किया हैं उसको परित्यक्त कर हमने उससे कहा ''चला जा, रे प्रमादी!'' ये शब्द बोले जाने के बाद वह मौलवियों के संघ में शामिल हो गया और जब हमें प्रस्थान करने के लिए कहा गया उस समय तक उन्हीं के साथ रहा।

ओ हादी! नए अंधविश्वासों के प्रसार का साधन बनने की क्षति तू न उठा और एक बार फिर शियाओं जैसे ही एक सम्प्रदाय के गठन से विमुख हो। विचार कर कि कितना खून

बहाया जा चुका है। दूसरों के बीच तूने, जिसने ज्ञान का दावा किया है, सभी शिया धर्मगुरूओं की भाँति, सत्य की सत्ता को धिक्कारा और निर्णय दिया कि उसका परम पवित्र रक्त बहे। परमात्मा से डर, ओ हादी। यह इच्छा मत कर कि पूर्वकालों की व्यर्थ कल्पनाओं से लोग पुनः आक्रान्त हों। ईश्वर से डर और उन जैसा मत बन जो अन्यायपूर्वक आचरण करते हैं। इन दिनों हमने सुना है कि तूने 'बयान' पर हाथ धरने और उसकी प्रत्येक प्रति नष्ट करने की चेष्टा की है। यह 'पीड़ित' तुझसे ईश्वर के निमित्त यह इरादा छोड़ देने का अनुरोध करता है। तेरी बुद्धिमत्ता और निर्णय उसकी बुद्धिमत्ता और न्याय से, जो इहलोक का राजकुँवर है, कभी श्रेष्ठ नहीं रहे और न आज ही श्रेष्ठ हैं। ईश्वर प्रमाणित करता है और मेरा साक्षी है कि इस 'पीड़ित' ने 'बयान' का अध्ययन नहीं किया है और उसकी विषय वस्तु से परिचित नहीं है। किन्तु यह भलीभाँति ज्ञात और स्पष्ट है कि उसने 'बयान' की पुस्तक को अपनी रचनाओं का आधार निर्धारित किया है। ईश्वर से डर और उन विषयों में हस्तक्षेप मत कर जो तुझसे बहुत परे हैं। सौ वर्षों तक उन्होंने जो तेरे ही सदृश हैं अभागे शियाओं को निरर्थक मनोरथों तथा व्यर्थ कल्पनाओं के गर्त में पीड़ित किया है। अन्ततः निर्णय दिवस पर वे चीजें उभरी हैं जिनके कारण पुराने आतताइयों ने सत्य की सत्ता की शरण ली।

उसके आर्तनाद को सुन समझ जो अपनी वाणी से स्थिर बिन्दु है। ईश्वर से 'वह' अनुनय करता है कि यदि इस वृक्ष से जो, उसका ही मंगलमय स्वत्व है, ऐसा कोई फल या पात या शाखा उपजे जो उसमें विश्वास न कर पाये, तो ईश्वर उसे काट कर उससे पृथक कर दे और इसी प्रकार 'वह' कहता है कि अगर कोई व्यक्ति कोई वक्तव्य दे, किन्तु किसी प्रमाण से उसे पुष्ट न कर सके तो, उस व्यक्ति को अस्वीकार मत करो ''और इतने पर भी जैसे एक सौ पुस्तकों का समर्थन होते हुए भी तूने उसे अस्वीकार किया है और उससे आनंदित हो रहा है।

मैं फिर अपनी बात दोहराता हूँ और तुझसे आग्रह करता हूँ कि जिसे प्रकट किया गया है उसकी तू सजगता से छानबीन कर। इस धर्मप्रवर्तन के उद्गारो के समीकरणों की तुलना पूर्ववर्ती कालों के वचनों से नहीं करो। यह 'पीड़ित' शाश्वतरूपेण विपदाग्रस्त रहा है और उसे कोई सुरक्षित स्थान नहीं मिला है जहाँ वह उस परमोदात्त बाब या किसी अन्य के लेखों का अध्ययन कर पाता। फारस के महामहिम शाह के आदेशानुसार हमारे इराक पहुँचने के दो महीने बाद मिर्जा याह्या हमसे आ जुड़ा। हमने उससे कहा कि शाही आदेश के अनुसार हमें इस स्थान पर भेजा गया है। तेरे लिये फारस में ही रहना उपयुक्त है। हम अपने भाई मिर्जा मूसा को किसी अन्य स्थान पर भेजेंगे। तुम्हारे नामों का शाही आदेश में उल्लेख नहीं किया गया है। अतः, तुम लोग कुछ सेवा कर सकते हो। ''बाद में यह

'पीड़ित' बगदाद चला गया और दो वर्षों तक संसार से अलग रहा।'' वापस आने पर हमने देखा कि वह गया नहीं था और उसने अपना जाना स्थगित कर दिया था। इस 'पीड़ित' को बहुत संताप हुआ। ईश्वर प्रमाणित करता है और हमारा साक्षी है कि हम सर्वदा इस धर्म के प्रचार में व्यस्त रहे हैं। अपने स्व को व्यक्त करने में हमें न तो जंजीरे रोक पाई हैं और न बेड़ियाँ, न तो कुन्दे और न कारावास ही। उस देश में हमने सारा उत्पात और सभी अनुचित तथा अपवित्र कर्म रोके। दिन रात हमने हर दिशा में अपनी पातियाँ भेजीं। मानवात्माओं को ऊँचा उठाने और मंगलमय शब्द को उन्नत करने के अतिरिक्त हमारा दूसरा कोई प्रयोजन नहीं था।

कुछ व्यक्तियों को हमने 'आदि बिन्दु' की रचनाओं को एकत्र करने के लिए विशेष रूप से नियुक्त किया। जब यह कार्य पूर्ण हो गया तो हमने मिर्जा याह्या और मिर्जा जवाद को एक स्थान विशेष पर मिलने के लिए बुलाया। हमारे निर्देशों के अनुरूप उन्होंने 'आदि बिन्दु' की रचनाओं की दो प्रतिलिपियाँ तैयार कराने का कार्य सम्पन्न किया। मैं ईश्वर की सौगन्ध खाकर कहता हूँ, लोगों के साथ निरन्तर अपने संसर्ग के कारण इन पुस्तकों को इस 'पीड़ित' ने नहीं देखा है और न इन लेखों पर ही दृष्टि डाली है। हमारे प्रस्थान करने के समय ये लेख इन्हीं दोनों व्यक्तियों के अधिकार में थे। तय यह हुआ था कि उन्हें मिर्जा याह्या को सौंप दिया जाये और वह फारस प्रस्थान करें और सम्पूर्ण देश में उनका प्रसार करें। आटोमन शासन के मंत्रियों के अनुरोध पर यह 'पीड़ित' उनकी राजधानी की ओर चल पड़ा। जब हम मोसुल पहुँचे तो हमने देखा कि मिर्जा याह्या उस नगर के लिए हमसे पहले चल चुका था और वहाँ हमारी प्रतीक्षा कर रहा था। संक्षेप, में वे लेख और पुस्तकें बगदाद में ही रह गये जब कि वह खुद कॉन्स्टैन्टिनोपल जा पहुँचा और सेवकों में सम्मिलित हो गया।

ईश्वर अब उन चीजों का साक्षी है जिनसे यह 'पीड़ित' संतप्त हुआ है, क्योंकि हमारे अत्यधिक श्रमसाध्य प्रयास के बाद भी वह निजी लेखों का परित्याग कर निर्वासितों में आ मिला था। यह 'पीड़ित' दीर्घकाल तक असीम कष्टों में रहा। अन्ततः ऐसी युक्तियों का आश्रय लेकर जिन्हे एकमेव सत्य परमेश्वर के अतिरिक्त कोई नहीं जानता है, हमने उन लेखों को एक दूसरे स्थान तथा दूसरे देश को इस तथ्य के कारण भेजा कि इराक में तो सारे दस्तावेजों की हर महीने सतर्कता से जाँच की जायेगी और ऐसा न हो कि वे गल कर नष्ट हो जायें। किन्तु ईश्वर ने उन्हें सुरक्षित रखा और ऐसी जगह भेज दिया जिसे उसने पहले से ही निधारित कर लिया था। सत्य ही, वह संरक्षक, रोग-निवारक है।

यह 'पीड़ित' जहाँ-जहाँ गया, मिर्जा याह्या ने उसका पीछा किया। ईश्वर तू स्वयं साक्षी है और भलीभाँति जानता है कि जो कुछ बताया गया है वह सत्य है। किन्तु इस्फहान के

सैयद ने उसे चोरी-चोरी धोखा दिया। दोनों ने वह किया जिससे वह अधिक भयाकुल हुआ। कितना अच्छा होता कि तू मिर्जा याह्या के आचरण के सम्बन्ध में उस देश के शासनाधिकारियों से पूछता। इन सबसे परे, उस एक, अतुल, शक्ति के स्वामी, परम शक्तिमान परमेश्वर के वास्ते, मैं उसके नाम पर 'आदि बिन्दु' को सम्बोधित पत्राचार की सजगता से छानबीन करने का तुझे अनुरोध करता हूँ ताकि तू उसके प्रमाण प्रत्यक्ष देखे जो सूर्य की भाँति स्पष्ट है। इसी प्रकार 'बयान' के बिन्दु के शब्दों से निस्सृत सत्य को कोई परदा धुंधला नहीं कर सकता और गर्व-गुमान के परदे या पथभ्रष्टों द्वारा सर्वशक्तिमान तेरे प्रभु की इच्छा रूपी अंगुली से परदे तो वस्तुतः तार-तार हो गये हैं हाँ, उनकी स्थिति अवश्य निराशाजनक है जिन्होंने मेरी निन्दा की है और मुझसे ईर्ष्या रखी है। अधिक समय नहीं हुआ जब यह कहा गया था कि तूने ''किताब-ए-इकान'' और अन्य पातियों के लेखन का श्रेय दूसरों को दिया है। ईश्वर की शपथ लेकर मैं कहता हूँ, यह घोर अन्याय है। दूसरे तो उनका अर्थ समझने में भी सक्षम नहीं हैं, उनको प्रकट करने की तो बात ही छोड़ दो।

हसन-ए-माजिन्दरानी सत्तर पातियाँ लेकर गये थे। उनके दिवगंत हो जाने से ये उन लोगों तक नहीं पहुँचीं जिनके लिए वे लिखी गई थीं। बल्कि इस 'पीड़ित' की एक बहिन को उन्हें सौंपा गया, जो अकारण ही मुझसे विमुख हुई। उन पातियों का क्या हुआ यह ईश्वर ही जानता है। यह बहिन हमारे साथ कभी नहीं रही थीं। सत्य-सूर्य की शपथ खाकर कहता हूँ मैं कि यह सब होने के बाद वह कभी मिर्जा याह्या से नहीं मिलीं और हमारे धर्म से अनभिज्ञ रहीं, क्योंकि उन दिनों वह हमसे उदासीन रहती थी। वह एक कमरे में रहती थीं और यह 'पीड़ित' दूसरे में। फिर भी, अपनी प्रेमपूर्ण कृपालुता, अपनी दयालुता और अपने स्नेह के कारण, अपने प्रस्थान के कुछ दिन पहले हम उससे और उसकी माँ से मिले ताकि शायद वह आस्था के जीवंत जल का पान कर सके और उसे प्राप्त कर सके जो उसको प्रभु के समीप ले जाये। ईश्वर जानता है और मेरा साक्ष्य है और इसका प्रमाण वह खुद भी देती है कि इसके अलावा मेरा कोई अन्य प्रयोजन नहीं था। अन्ततः ईश्वर की कृपा से उसमें आस्था जागी और वह प्रेम के अलंकरण से अलंकृत हुई। जब हमें निर्वासित कर दिया गया और इराक से कॉन्स्टैन्टिनोपल के लिए हम रवाना हुए उसके बाद हमें उसके समाचार मिलने बंद हो गए। 'ता' (तेहरान) की भूमि में हमारे बिछुड़ने के बाद हम अपने भाई मिर्ज़ा रिदा कुली से भी नहीं मिल पाये और अपनी बहिन के बारे में भी कोई खास समाचार नहीं मिला। शुरू के दिनों में हम एक ही घर में रहा करते थे जो बाद में, बहुत कम पैसों में नीलामी में बिका, जिसे दो भाइयों ने खरीद लिया और आपस में बंटवारा कर लिया। इतना कुछ हो जाने के बाद हम अपने अपने भाइयों से अलग हो गए। उसने अपना घर मस्जिद-ए-शाह के गेट के पास बनवाया और हम शिमरान गेट के नज़दीक रहने लगे। उसके बाद उस बहिन ने अकारण ही प्रतिकूल रवैय्या अपना लिया। किन्तु हर

परिस्थिति में इस 'पीड़ित' ने शांति बनाये रखी। फिर भी, हमारे स्वर्गीय भाई मिर्ज़ा मोहम्मद-हसन की पुत्री, जो सर्वमहान शाखा (अब्दुल-बहा) की मंगेतर थी, को इस 'पीड़ित' की बहिन नूर से अपने घर ले गई और वहाँ से अन्यत्र भेज दिया। हमारे कुछ साथियों ने इसके खिलाफ शिकायत भी की, क्योंकि यह बहुत दुःखद बात थी और सबने इसे अनुचित कहा। कितनी अनोखी बात है कि हमारी बहिन उसे अपने घर ले जाये और फिर उसे कहीं अन्यत्र भिजवा दे। इसके बावजूद यह 'पीड़ित' शान्त और मौन रहा और आज भी है। परन्तु अपने प्रियजनों की शान्ति के लिए एक बात सबको कही गई थी। ईश्वर मेरा साक्षी है कि जो कुछ कहा गया वह सत्य था और सच्चाई से कहा गया था। इन क्षेत्रों के या उस देश के हमारे प्रियजनों में किसी को विश्वास नहीं हुआ कि हमारी बहिन शालीनता, स्नेह और मैत्री के इतने विपरीत जाकर कोई काम कर सकती है। यह सब होने के बाद उन्होंने यह समझकर कि रास्ता अवरूद्ध हो गया है इस प्रकार का आचरण किया जो तुझे और दूसरों को भलीभाँति ज्ञात है। अतः यह स्पष्ट हो गया होगा कि इस आचरण से इस पीड़ित को पहुँचा संताप कितना दारूण था। बाद में वह मिर्जा याह्या के पाले में चली गई। अब उसके बारे में हमें विरोधी सूचनाए मिल रही हैं। यह भी स्पष्ट नहीं है कि वह क्या कह या कर रही है। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं - मंगलमय और महिमामंडित हो वह कि वह उसे अपनी ओर लौटाये और अपनी कृपा के द्वार पर पश्चाताप करने में सहायता दे। सत्य ही, वह समर्थ, क्षमाशाली है।

इसी प्रकार, एक अन्य प्रसंग में वह कहता है ''यदि इसी पल वह प्रकट हो जाये, तो उसकी आराधना करने वाला पहला व्यक्ति और उसके सम्मुख नतमस्तक होने वाला पहला व्यक्ति मैं हूँगा।'' ईमानदार रहो, ऐ लोगों उस परमोदात्त (बाब) का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि दिव्य प्रकटीकरण की सन्निकटता लोगों को दैवी तथा शाश्वत विधान से दूर न कर दे जिस प्रकार जॉन (दि बैप्टिस्ट) के साथी उसे जो चेतना (ईसा) है, स्वीकारने से रुक गये थे। बार-बार उन्होंने (बाब ने) कहा: 'बयान' और उसमें जो भी कहा गया है उससे मुँह मत मोड़ो ताकि तुम 'अस्तित्व के सार' से दूर न हो जाओ और इस प्रकार गोचर तथा अगोचर के प्रभु से ही कहीं दूर न हो जाओ। कोई व्यक्ति इस बाध्यकारी आज्ञा के प्रति प्रमादियों जैसा आचरण न करे।

और इसी प्रकार, वह कहता है: ''नाम एक परदा बनकर उससे तुमको दूर न बनाये रखे जो नामों का प्रभु है क्योंकि इस प्रकार का नाम मात्र उसकी वाणी का सृजन है'' और इसी प्रकार वह दूसरे वाहीद के सातवें अध्याय में कहता है: ओ बयान के लोगों ''जैसा कुरान के लोगों ने आचरण किया है वैसा तुम मत करना क्योंकि अगर तुम ऐसा करते हो तो तुम्हारी रात्रि के फल शून्य हो जायेंगे'' और इसके अतिरिक्त, वह कहता है महिमा

मण्डित हो वह उसका गुणगान हो'' तू यदि उसके दिव्य प्रकटीकरण को उपलब्ध होगा और उसकी आज्ञा का पालन करता है तो बयान का फल तू प्रकट कर लेगा। यदि तू ऐसा नहीं करेगा, तो तू ईश्वर के समक्ष उल्लेख का पात्र नहीं होगा। अपने ऊपर तरस खा। अगर तू उसकी सहायता नहीं करता है तो तू उसके दुःख का कारण भी मत बन। ''इसके उपरान्त वह कहता है: स्तुत्य हो उसका पद ''तू यदि ईश्वर का सान्निध्य प्राप्त न करे, तो ईश्वरीय चिह्न को विषादग्रस्त मत कर।'' यदि तुम उसका परित्याग करते हो जो उसे हानि पहुँचा सकता है, तो तुम उसका परित्याग करोगे जिससे उनको लाभ हो सकता है। जो 'बयान' को मानते हैं किन्तु मैं जानता हूँ कि तुम ऐसा नहीं करोगे।

हो हादी! मेरा विचार है कि इन्ही सुनिश्चित वचनों के कारण तूने 'बयान' को मिटा देने का संकल्प लिया हैं। इस 'पीड़ित' की आवाज पर ध्यान दे और इस अत्याचार को त्याग दे जिससे 'बयान' के स्तम्भ कांप उठे हैं। मैं न तो चिहरिक गया हूँ और न माहकू। इस समय तेरे शिष्यों के बीच उन शियाओं के कथनों जैसी बातें फैलाई गई हैं जिन्होंने कहा है कि कुरान अपूर्ण है। ये लोग यह तर्क वितर्क भी करते हैं कि यह मूल बयान नहीं है। सैयद हुसैन के हाथ की लिखी प्रति वर्तमान है, जैसी कि मिर्जा अहमद की हस्तलिपि में लिखी प्रति भी है।

क्या तू उसे पीड़ित मानता है जिसको इस जगत में कभी एक धक्का नहीं लगा है और जो ईश्वर की पाँच सेविकाओं से (मिर्जा याह्या की पत्नियाँ) लगातार घिरा रहा है? और उस 'सत्य-सत्ता' को, जो अपने प्रारम्भिक समय से आज तक अपने शत्रुओं के हाथों में रही है और संसार की सबसे बुरी वेदना से पीड़ित की गई है, तू ऐसे आरोपों से लांछित करता है जैसे यहूदियों ने ईसा पर भी नहीं लगाये थे? इस 'पीड़ित' की आवाज सुन और जो सब कुछ गवां चुके हैं उन जैसा मत बन।

और इसी प्रकार, वह कहता है ''कितनी अधिक हैं वे ज्वालाएँ जिनको ईश्वर उसके माध्यम से प्रकाश में बदल देगा जिसे ईश्वर प्रकट करेगा। और कितना अधिक है वह प्रकाश जो 'उसके' जरिये अग्नि का रूप धारण करेंगे। उसके आविर्भाव को मैं गगन में पूरी प्रखरता से चमकते सूर्य के सदृश्य देख रहा हूँ और दिन निकलने पर रात्रिकालीन तारों के लुप्त होने की भाँति सभी का विलोप देख रहा हूँ।'' क्या तेरे पास वे कान हैं, रे जगत, जिनसे तू उस 'सत्य की सत्ता' की आवाज सुन सके और इस दिव्य प्रकटीकरण की निष्पक्षतापूर्वक जांच कर सके, जिसके प्रकट होते ही सिनाई चीत्कार कर उठा ''वह जिसने मेरे वक्षस्थल से प्रवचन दिया था, सुस्पष्ट चिह्नों तथा देदीप्यमान प्रतीकों के साथ, आ गया है इसके

बावजूद, कि प्रत्येक प्रमादी व्यक्ति दूर तक भटका हुआ है और प्रत्येक मिथ्यावादी निन्दक ने अपने मिथ्यारोपों से ईश्वरीय प्रकाश को बुझाना और अपनी दुर्भावना से ईश्वरीय चिह्नों को मिटाना चाहा है। वे सचमुच उन्हीं लोगों में हैं जिन्होंने सर्व लोकाधिपति ईश्वर की पुस्तक के अनुसार अन्यायपूर्वक आचरण किया है।''

और इसी प्रकार, वह कहता है: ''आदि से अन्त तक 'बयान' उसकी सभी प्रवृत्तियों का आगार और उसकी अग्नि तथा प्रकाश दोनों की निधि है।'' महाप्रभु! उस उक्ति की सुवास से आत्मा उन्मत्त हो जाती है, क्योंकि जिसका उसने बोध किया है उसे अब अपार व्यथा के साथ बतला रहा है। जीविताक्षर मुल्ला बाकिर से वह कहता है ''भाग्यवश आठ वर्षों में तू उसके दिव्य प्रकटीकरण के दिवस में उसका सान्निध्य प्राप्त कर सकता है।''

तू यह समझ, ओ हादी, और उनके जैसा बन जो सुनते हैं। तू निष्पक्ष निर्णय कर। ईश्वर के सहचरों तथा जो 'सत्य है उसके साक्ष्यों' ने अधिकांशतया शहादत का वरण किया है। किन्तु तू अभी तक जीवित है। यह कैसी बात है कि तू बचा रह गया है? ईश्वर की सौगन्ध लेकर कहता हूँ मैं, इसका कारण तेरा खन्डन ही है, जबकि धन्यभागी आत्माओं का बलिदान उनकी अभिस्वीकृति के कारण हुआ। प्रत्येक न्यायप्रिय और निष्पक्ष व्यक्ति इसकी साक्षी देगा क्योंकि कारण और प्रयोजन दोनों सूर्य की तरह स्पष्ट और प्रत्यक्ष हैं।

और इसी प्रकार वह दय्यान को, इन शब्दों से सम्बोधित करता है जो उत्पीड़ित हुए और जिन्होंने अपने प्राण होम दिये, ''जिसको ईश्वर प्रकट करेगा उसके शब्दों से तू अपनी कीमत जानेगा।'' इसी भाँति, उसने इन शब्दों के जरिये उनको उसमें विश्वास करने वाला तीसरा 'अक्षर' कहा है ''जिसे ईश्वर प्रकट करेगा'' और इसी तरह उसने कहा है: ''यदि ईश्वर ने चाहा तो, वह तुझे उसके शब्दों से बतायेगा ''जिसे ईश्वर प्रकट करेगा। दय्यान जो उस आदि बिन्दु के शब्दों के अनुसार - उसके सिवा सभी की आत्माएँ उसके निमित्त न्योछावर हों। एकमेव सत्य परमेश्वर - उदात्त हो उसकी महिमा की आस्था के आगार और उसके ज्ञान मुक्ताओं की निधि - इतनी निर्दयता से शहीद किया गया कि देवमण्डली ने बिलख कर विलाप किया। यह वही है जिसको बाब ने गुप्त एवं संरक्षित ज्ञान की दीक्षा दी थी और उसे उनको सौंपा था:'' ओ तू जिसका नाम दय्यान है। यह गुप्त तथा संरक्षित ज्ञान है। इसे हमने तुझे सौंपा है और सम्मान के प्रतीकस्वरूप इसे तेरे पास भेजा हैं, क्योंकि तेरा हृदय पवित्र है। तू इसका महत्व समझेगा और इसकी उत्कृष्टता को संजो कर रखेगा। ईश्वर ने वस्तुतः 'बयान' के बिन्दु को एक गुप्त एवं संरक्षित ज्ञान प्रदान करने की कृपा की है, जिसका जोड़ ईश्वर ने इस दिव्य प्रकटीकरण के पहले अवतरित नहीं किया

है। ईश्वर की दृष्टि में वह किसी अन्य ज्ञान से अधिक मूल्यवान है महिमामण्डित हो वह। सत्य ही उसने उसे अपना प्रमाण बनाया है, जिस प्रकार दिव्य पदों को उसने अपना प्रमाण बनाया है।'' इसके कारण वह जो ईश्वरीय ज्ञान का भण्डार थे दमन के शिकार हुए। उनके सहित आदि बिन्दु के साथ मिर्जा अली अकबर - ईश्वर की भव्यता तथा दयालुता हो उन पर, और अबुल कासिम-ए-काशी तथा कई अन्य ने मिर्जा याह्या द्वारा दिये गये आदेश से शहीदों की गति प्राप्त की।

ओ हादी, उनकी पुस्तक जिसे उन्होंने ''मुस्तेकिज़, शीर्षक प्रदान किया है तेरे पास है, उसका अध्ययन कर। यद्यपि तूने वह पुस्तक देखी है, किन्तु पुनः उसका ध्यानपूर्वक अध्ययन कर, ताकि भाग्यवश तुझे सत्य के चंदोवे तले अपने लिए एक उच्चासन प्राप्त हो जाये।''

इसी प्रकार, सैयद इब्राहिम के सम्बन्ध में ''आदि बिन्दु, की लेखनी से ये शब्द प्रवाहित हुए हैं,- महिमावंत हो उसका वचन - ''ओ तू जिसका उल्लेख मेरे धर्मग्रन्थों में मेरे मित्र के रूप में और तेरी पुस्तकों में मेरे स्मृति चिह्न के रूप में हुआ है और मेरे धर्मग्रन्थों के बाद, जिसे 'बयान' में स्थान दिया गया है,'' इस प्रकार के व्यक्ति को, उसने (मिर्जा याह्या) अन्यायों का पिता और आपदाओं का पिता, उपनाम दिये थे। तू उचित निर्णय कर कि उन अत्याचार पीड़ितों की दशा कितनी दुःखद रही है और यह स्थिति तब थी जबकि उनमें से एक उसकी सेवा में था और दूसरा उसका अतिथि था। संक्षेप में, ईश्वर की सौगंध खाकर कहता हूँ मैं कि उसने जो कृत्य किये वे ऐसे थे कि जिनका विवरण देते हुए हमारी लेखनी लज्जित होती है।

'आदि बिन्दु' पर थोपे गए असम्मान का तनिक विचार करो। जो हुआ है उस पर ध्यान दो। दो वर्षों के एकान्तवास के बाद, जिस दौरान यह 'पीड़ित' पहाडों और निर्जनों में भटकता रहा, जब कुछ व्यक्तियों के हस्तक्षेप के बाद बगदाद वापस आया, तब रश्त के मिर्जा मुहम्मद अली उससे मिलने आये। उन्होंने बाब के सम्मान को चोट पहुँचा कर जो कुछ किया था उसका एक विशाल जनसमूह के सम्मुख वर्णन किया। उस कृत्य ने सचमुच पूरी धरती को दुःख से भर दिया है। महाप्रभु! कैसे लोगों ने इस अत्यधिक दारूण विश्वासघात का अनुमोदन कर लिया। संक्षेप में, इस कर्म के कर्ता को पश्चाताप कर ईश्वर की ओर लौटने की सहायता प्रदान करने की हम परमात्मा से विनती करते हैं, सत्य ही वह सहायक, सर्वप्रज्ञ है।

जहाँ तक दय्यान की बात है - ईश्वर की भव्यता और दया हो उन पर। उन्होंने 'आदि बिन्दु' की लेखनी से जो कुछ व्यक्त हुआ था उसी के अनुसार हमारा सान्निध्य प्राप्त किया। ईश्वर से हम प्रार्थना करते हैं कि जो आलसी और असावधान हैं उनको अपनी ओर उन्मुख होने में सहायता दे और जिन्होंने उससे मुँह फेर लिया है उनको अपनी ओर आने का मार्ग दिखलाने की सहायता प्रदान करें और जिन्होंने इस धर्म को स्वीकृति न देकर उसे नकारा है उनका पथ प्रदर्शन करे। यह धर्म जिसका आविर्भाव हुआ नहीं कि, सभी सृजित वस्तुओं ने उद्घोष किया "वह जो ज्ञान के भण्डार में छिपा था और परमोच्च की लेखनी द्वारा उसकी पुस्तकों और उसके धर्मग्रन्थों और उसकी पातियों में उत्कीर्ण था, आ गया है।"

इस प्रसंग में, धन्यभागी और सम्मानित अक्का नगर के प्रलेख से सम्बन्धित पारम्परिक कथनों की चर्चा करना आवश्यक प्रतीत होता है, ताकि भाग्यवश ओ हादी, तू सत्यपथ और ईश्वर की ओर जाने वाला मार्ग खोज ले।

करूणामय, दयानिधान ईश्वर के नाम पर।

निम्नांकित उल्लेख अक्का और सागर और अक्का में स्थित अयनुल बक़र (गाय का स्रोता) के गुणों के सम्बन्ध में किया गया है।

अब्दुस्सलाम के पुत्र अब्दुल अजीज़ ने हमें बतलाया है कि ईशदूत ने कहा है "अक्का सीरिया का एक नगर है जिसके प्रति ईश्वर ने अपनी विशेष दयालुता दिखलाई है।"

इब्न-ए-मसूद ने बताया: ईशदूत ने कहा है कि सभी सागर तटों में सर्वोत्तम है अस्केलान का सागर तट और अक्का अस्केलान से भी उत्तम है और अस्केलान तथा सभी अन्य सागर तटों के उत्कर्ष से ऊपर अक्का का उत्कर्ष ऐसा है जैसे अन्य सभी ईशदूतों के उत्कर्ष से ऊपर मुहम्मद का उत्कर्ष। मैं तुम्हें एक चारागाह के बीच, सीरिया के दो पहाड़ों के मध्य स्थित एक नगर का समाचार देता हूँ, जिसे अक्का कहा जाता है वस्तुतः उसके लिए लालायित और उसके दर्शन को उत्सुक जो व्यक्ति उस नगर में प्रवेश करता है उसके भूत एवं भविष्य के पाप ईश्वर क्षमा कर देगा और तीर्थयात्री के रूप में वहाँ जाने के अतिरिक्त जो व्यक्ति वहाँ से प्रस्थान करता है तो ईश्वर उसकी रूखसती को अपना आशीर्वाद नहीं देगा। उसमें "गाय का स्रोता" नामक एक जल स्रोत है। जो व्यक्ति उसका एक घूँट जल पी लेता है, उसके हृदय को ईश्वर प्रकाश से पूर्ण कर देता है और 'पुररूत्थानदिवस' पर परम भीषण आतंक से उसकी रक्षा करता है।"

मालिक के पुत्र अनीस ने कहा है, ईश्वर के देवदूत ने कहा है: "सागर तट के पास दिव्य सिंहासन के नीचे लटकता अक्का नाम से एक नगर है उसमें जो व्यक्ति अटल और ईश्वर के

उदात्त पुरस्कार की आशा करता हुआ निवास करता है, उसके लिए ईश्वर 'पुनरूत्थान दिवस तक ऐसे जनों के प्रतिफल लिखेगा जो धीर रहे हैं और उसके समक्ष खड़े होकर और घुटनों के बल बैठकर, और साष्टांग लेट कर नमन किया है।''

और 'उसने' कहा है: ''तुम्हारे पक्ष में एक नगर की घोषणा करता हूँ। वह सागर तटों पर है, श्वेत है और उसकी धवलता ईश्वर को प्रिय है।'' उसे अक्का कहा जाता है। ईश्वर की दृष्टि में वह व्यक्ति जिसे वहाँ के पिस्सुओं में से एक ने काट खाया है, उस व्यक्ति से उत्तम है जिसे ईश्वर की राह में भीषण आघात मिला है और वह जो वहाँ प्रार्थना की पुकार लगाता है, उसकी आवाज बैकुण्ठ तक जायेगी। और वह जो उसमें शत्रुओं के सम्मुख सात दिनों तक रह लेता है, ईश्वर उसे खिज्र के साथ रखेगा और पुनरूत्थान दिवस पर ईश्वर परम भीषण आतंक से उसकी रक्षा करेगा। और वह कहता है: ''स्वर्ग में राजा और राजकुमार हैं। अक्का में दरिद्र ही बैकुण्ठ के राजागण और राजपुत्र हैं। अक्का में एक माह अन्यत्र हजार बरसों से बेहतर है।''

कहा जाता है कि ''ईश्वर के प्रेरित'' ने कहा है: ''धन्य है वह पुरूष जिसने अक्का के दर्शन किये हैं, और धन्य है वह जिसने अक्का के दर्शनार्थी के दर्शन किये हैं। धन्य है वह व्यक्ति जिसने 'गाय का स्रोत' का जलपान किया और उसके जल से प्रक्षालन किया है क्योंकि श्यामनयनी किशोरियाँ बैकुण्ठ में कर्पूर पान करती हैं जो 'गाय का स्रोत' से और 'सलवान (सीलोम) स्रोत से और जमजम कूप से आया है जिसने इन स्रोतों का जलपान किया है और उनके जलों से प्रक्षालन किया है उसका कल्याण होगा, क्योंकि ईश्वर ने पुनरूत्थान दिवस पर नरकाग्नि को उसे और उसके शरीर को छूने से वर्जित किया है।''

ईशदूत का कहा बताया जाता है: ''अक्का में कर्त्तव्य पालन के अतिरिक्त सद्कार्य तथा ऐसे काम हैं जो लाभकर हैं, जिन्हें ईश्वर ने विशेष रूप से उसको प्रदान करने की कृपा की है जिससे वह प्रसन्न होता है।'' और अक्का में जो व्यक्ति कहता है - महिमा मण्डित हो ईश्वर और जय हो परमेश्वर की और ईश्वर के सिवा कोई दूसरा ईश्वर नहीं है और ईश्वर परम महान है और उदात्त, सामर्थ्यशाली ईश्वर की शक्ति और सत्ता के अतिरिक्त कहीं कोई शक्ति या सत्ता नहीं है, ईश्वर उसके नाम एक हजार सद्कर्म लिखेगा और उसके एक हजार दुष्कर्म मिटा देगा और स्वर्ग में उसे एक हजार दरजे ऊँचा उठायेगा और उसके सीमोल्लंधन को क्षमा कर देगा और जो व्यक्ति अक्का में कहता है ''मैं ईश्वर से क्षमा मांगता हूँ,'' तो ईश्वर उसके सारे अतिचार क्षमा करेगा और अक्का में जो व्यक्ति सुबह और शाम,

रात में, उषाकाल में ईश्वर का स्मरण करता है ईश्वर की दृष्टि में वह उससे श्रेष्ठ है जो ईश्वर की राह में तलवारें, बरछियाँ और शस्त्र धारण करता है।

'ईश्वर के प्रेरित' ने यह भी कहा है: वह जो संध्याकाल में समुद्र पर दृष्टि डालता है और सूर्यास्त के समय कहता है "ईश्वर परम महान है," उसके पाप, वे चाहे बालू के टीलों जैसे ढ़ेर हों, ईश्वर क्षमा कर देगा। और वह जो 'ईश्वर परम महान है' का जाप करते हुए चालीस लहरें गिनेगा तो ईश्वर उसके गत और आगत सभी पाप क्षमा कर देगा।

ईश्वर के प्रेरित ने कहा है "वह जो एक पूरी रात समुद्र को निहारता है उससे श्रेष्ठ है जो मकाम के बीच पूरे दो माह गुजारता है और उसका पालन-पोषण ही सागर तटों पर हुआ है, वह उससे श्रेष्ठ है जो अन्यत्र पाला पोसा गया है। वह जो तट पर लेटता है ऐसा ही है जैसा वह जो अन्यत्र खड़ा है।"

सत्य ही, 'ईश्वर के प्रेरित' ने सच ही कहा।